तीरभुक्ति

मूल्य : ₹ 25

वर्ष : 1, अंक : 2, अप्रैल-जून 2018

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

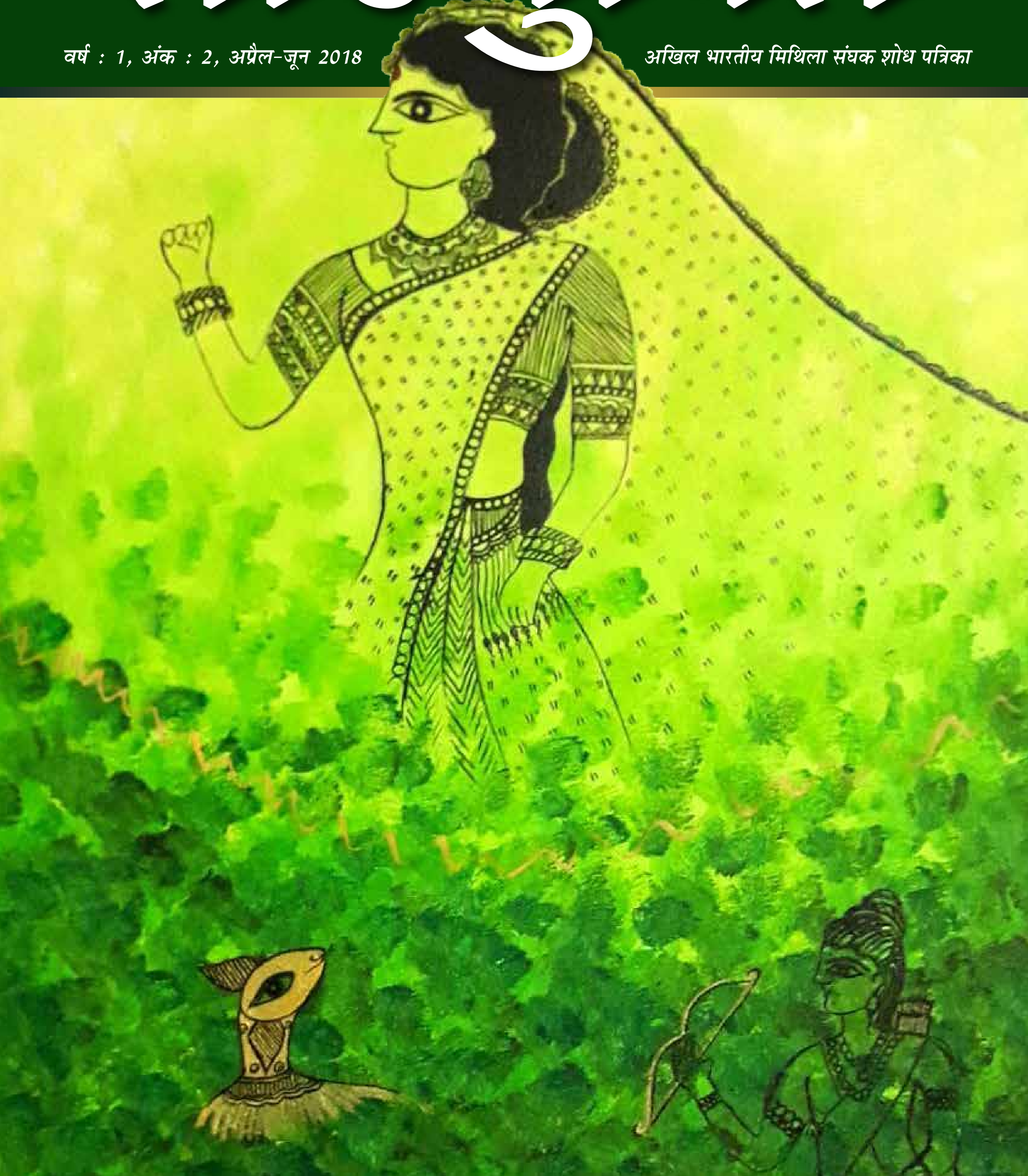

S.K. CHAUDHARY EDUCATIONAL TRUST'S

SHANKARA GROUP OF INSTITUTIONS

Kukas, Jaipur

B.Tech (028)	MBA (285) Finance, HR,	MCA (138)	PGDM
CS, IT, EC, EE, ME, AE	Marketing, IT & Comm.	BCA, BBA	SIM (284) SISMR (286)

FOR ADMISSION CONTACT

9950928077 | 9928023777
8178033477 | 9928024777

OR ON TOLL FREE NUMBER

18003002017

www.shankaragroup.in | www.shankaratechnology.org

SOCIETY FOR COMPUTER EDUCATION AND MANAGEMENT'S STUDIES

NDIIT
The Key To Learn & Excel
New Delhi Institute For
Information Technology & Management

NEW DELHI INSTITUTE FOR INFORMATION TECHNOLOGY & MANAGEMENT

Nehru Place, New Delhi

COURSES OFFERED

MBA MCA BBA BCA PGDM

MASS COMMUNICATION HOTEL MANAGEMENT

For Admission Contact us: 011-46515851, 26293177, 26294177, 26295277, 26295177
+91 7042089177, 7042734877

Toll Free No.: 18003002017

for more details visit: www.ndiit.org

तीरभुक्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

मूल्य : ₹ 25

वर्ष : 1, अंक : 2

अप्रैल-जून 2018

संरक्षक
प्रभात झा

संस्थापक
विजयचन्द्र झा

संपादक
विनीत कुमार झा 'उत्पल'*
ऋतेश पाठक

संपादक मंडल
अवनीन्द्र ठाकुर
रौशन झा
डॉ. प्रवीण कुमार झा
ब्रह्मेन्द्र झा
भास्कर ज्योति

उप संपादक
गोविन्द कुमार झा

प्रबंध संपादक
विद्यानंद ठाकुर
त्रिपुरारी ठाकुर

आवरण
सीमा कश्यप

डिजाइनर
मणिशंकर कुमार

स्थायी पता
एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक,
संगम विहार, नई दिल्ली-110062
पत्राचार पता
20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस,
नई दिल्ली-110001
फोन: सं.: 9911364316
प्र.: 9650461788, 9717539000
ईमेल:
teerbhuktimaithili@gmail.com

*प्रेस आ पोथी अधिनियमक अधीन

(उपरोक्त सभ टा पद मानद आ अवैतनिक अछि)

विषय सूची

- प्रतिक्रिया 4
- संपादकीय 5
- साक्षात्कार : वैशाली आ नालंदाक तर्ज पर होय पुनौराक जीर्णोद्धार : प्रभात झा 7
- धार्मिक पर्यटनकेँ प्रोत्साहनसँ बदलत मिथिलाक चित्र / *भास्कर ज्योति* 13
- मिथिलाक लोक, सीता ओ जनकपुर – परिक्रमा / *मिथिलेश कुमार झा* 19
- आजुक सीता / *अजित झा* 21
- मैथिली साहित्य उत्सव : किछु सुझाव / *रमण कुमार सिंह* 24
- नायिका रूपमे सीता : संक्षिप्त विश्लेषण / *नारायण झा* 25
- आधुनिक मैथिली काव्यमे नारी रचनाकारक योगदान / *प्रो. (डॉ.) रामसेवक सिंह* 28
- कतहुँ नहि देखाए पड़लीह (कविता) / *निवेदिता झा* 32
- स्वयंवर (कविता) / *ऋतेश पाठक* 33
- से छलीह सीता (कविता) / *अमरनाथ झा 'अमर'* 34
- अहीं बचा सकैत छी जानकी (कविता) / *दिलीप कुमार झा* 34
- जानकी (कविता) / *नमिता झा* 35
- एक बेर फेर फाटू हे धरती (कविता) / *कल्पना झा* 36
- हम लिखैत छी तऽ जीबैत छी / *कामिनी* 37
- बथान (एनिमल फार्म) / *जॉर्ज ऑर्वेल* 39
- मैथिली साहित्यमे जाति विमर्श 46

पत्रिकामे प्रकाशित आलेख आ रचनामे व्यक्त विचार आ दृष्टिकोण लेखक केँ छनि। संपादक अथवा प्रकाशक केँ ओहिसँ सहमत होयब आवश्यक नञ अछि।

प्रतिक्रिया

- विनीत उत्पल एवं ऋतेश पाठक द्वारा सुन्दर सँ संपादित 'तीरभुक्ति' – मैथिलीक एहि नव प्रकाशित पत्रिका पर कतेक गोटेक ध्यान गेलय नहि कहि, जँ नहि तं ई मैथिली विचार साहित्य पत्रकारिताक 'प्रारंभ'। हमरा अबस्से शुभकामना आ प्रोत्साहनक अधिकारी बुझायल! ताही भावना सँ एत' ई चर्चा!

– गंगेश गुंजन जीक फेसबुक वाल सें

- भगवती करथि जे पत्रिका अमर हुए।

– योगेश नाथ झा

- बहुत बहुत शुभकामना। तीरभुक्तिक हेतु प्रचार आ प्रसार अपेक्षित।

– हीरानाथ झा

- जी पढ़लहुँ। बड्ड नीक लागल। सब रचना प्रशंसनीय छल, वियोगीजीक दीना–भद्री मोनमे कतेको प्रश्न उठबैत अछि। शुभकामना विनीतजी, जे आगुओ छपैत रहय।

– नीलमाधव चौधरी

- हमरो दिस सँ शुभकामना नवपत्रिका केँ आ कवर पर हमर पेंटिंग छापलनि तेकर धन्यवाद सेहो।

– संजू दास

- 'तीरभुक्ति' पत्रिकाक प्रकाशन मैथिली साहित्यक कल्याणकारिणी होअय तदर्थ मैथिली सँ प्रार्थना।

– बौवानंद झा

- तीरभुक्तिक स्वागत। पत्रिका नहि देखल अछि।

– उदय चन्द्र झा विनोद

- 'तीरभुक्ति'क लेखकीय प्रति प्राप्त भेल। विशेष धन्यवाद पत्रिकाक संपादक भाइ विनीत उत्पलजीकेँ। 'विशेष' एहि लेल जे लेखककेँ लेखकीय प्रति पठेबाक प्रथा आब प्राय: समाप्त भेल जा रहल अछि। पत्रिका दीर्घकालीन हुअय ताहि हेतु हार्दिक शुभकामना प्रकाशकीय टीमकेँ।

– मनोज शांडिल्य

- उत्पलजी, अहांक समर्पण मैथिली भाषा आ साहित्य केँ निस्संदेह आगू लय जायत। शुभकामना।

– नारायणजी

- समस्त तीरभुक्ति पढ़ि लेलहुँ। अहाँक (कैलाश कुमार मिश्र) भोगेन्द्र बाबूक संस्मरण खूब नीक लागल। ओना आनो चुनल रचना सब स्तरीय आछि। ताहि हेतु साधुवाद।

– बागेश्वर झा

संपादकीय

जाहि देशमे मानल जाइत अछि जे शब्द ब्रह्म अछि, ओतय एक-एक शब्दक की गरिमा भ' सकैत अछि, एकरा बूझल जा सकैत अछि। कहल जाइत छै जे एकटा शब्द अहाँ केँ पान खुआबैत अछि, दोसर शब्द अहाँ केँ हाथीक पइरक नीचां रौंदाबैत अछि, जखन की दूनू केँ अर्थ एक्के होयत अछि। जखन हम कोनो विमर्शमे भाग लैत छी, ते अहाँ केर शब्द अहाँ केँ अस्त्र आ शस्त्र दूनू अछि। फेर जखन हम वैश्विक गाममे रहि रहल छी, इंटरनेट संपूर्ण दुनियाकेँ अहाँ के मुट्ठीमे आनि देने अछि, तखन अहि युगमे अहाँ केँ तामस आ बिपराहटक सोशल मीडियाक विमर्श आ शास्त्रार्थमे एकटा फराक छवि बनाबैत अछि। एकरा ध्यान रखबाक आवश्यक अछि।

आजुक कालमे जाहि तरहे अंगरेजी भाषाक प्रभुत्व बढ़ल अछि, दोसर भाषामे नव-नव शब्दक निर्माण कम भेल अछि। अनुवादक विसंगति देखल जा सकैत अछि। व्याकरणक दृष्टि सँ के कोन तरहे मैथिली लिखि रहल अछि, ई देखल जा सकैत अछि। एकरूपता नहि ते शब्दमे अछि आ नहि भाषाक व्याकरण मे। आय अंगिका केँ अलग दर्जा झारखंडमे भेंट गेल। जखन कि जॉर्ज ए. ग्रिअर्सन अप्पन पोथी 'एन इंट्रोडक्शन टू द मैथिली डायलेक्ट ऑफ़ द बिहार लैंग्वेज एज स्पोकन इन नार्थ बिहार' लिखने अछि, जेकर 1881 ई. मे पहिलुक संस्करण आ 1909 ई. मे दोसर संस्करण आयल छल, ताहिमे मैथिली भाषा केँ छह फराक उपभाषा 'मानक', 'दक्षिणी मानक', 'पूर्वी', 'छिका-छिकी', 'पश्चिमी' आ 'जोलहा' मे बांटने छथि। ई पोथी चारि खंडमे बाँटल अछि जाहिमे कुल 16 अध्यायमे मैथिलीभाषाक व्याकरण विस्तार सँ देने छथि। एहि पोथी लिखबाक काल ओ गाम-गाम, टोल-टोल जाकेँ माने फील्ड वर्क क' लोक सँ गप आ हुनका लग उपलब्ध पोथीक आधार पर एहि पोथीक रचना केने छलाह। आय एकटा समय आबि गेल अछि जे एहिना फील्ड वर्क करल जाय आ मैथिलीक व्याकरणक एकटा नव पोथी लिखल जाय।

रामचरितमानसक बालकाण्डमे तुलसीदास कहैत छथिन्ह–

सास, ससुर गुर सेवा करेहू, पति रुख लखि आयसु अनुसरेहु।

ई गप सीताजी केँ हुनकर सखी कहैत छथि आ ऐहन तरहक गप मिथिलाक सखी आ स्त्री क' सकैत छथि, जे मिथिला के आन दुनिया सँ फराक करैत छैथ। आजुक धरि करीब तीन सौ रामायण लिखल गेल अछि, आ सभमे किछु नहि किछु खिस्सा भिन्न अछि मुदा एहि गप पर सब कियो एकमत छथि जे सीता पतिव्रत धर्मक पालन करहिमे सतत लागल रहलीह। एहि बेर 'तीरभुक्ति' के बेसी रचना सीता आ स्त्री पर आधारित अछि, जे एकटा नव विमर्शक जन्म देत, ई आशा अछि। संगे, सीता नवमी 14 अप्रैल केँ अछि आ एहि दिन हुनक जन्मस्थली सीतामढ़ीक पुनौराधाममे एकटा भव्य कार्यक्रम आयोजित अछि। एहि कार्यक्रम क' ल' क' भाजपा केँ उपाध्यक्ष आ 'तीरभुक्ति' पत्रिकाक संरक्षक राज्यसभा सांसद श्री प्रभात झा केँ एकटा साक्षात्कार सेहो प्रकाशित क' रहल छी। मिथिलाक पर्यटन स्थल, जनकपुर परिक्रमाक संग आधुनिक मैथिली काव्यमे नारी रचनाकारक योगदान पर केन्द्रित सामग्री अछि। संगहि सोशल मीडिया आ अनुवाद सेहो प्रकाशित कयल जा रहल अछि।

पहिलुक अंक पर पाठकक जेहन प्रतिक्रिया रहल, एहि लेल हमर संपादकीय टीम ऊर्जावान अछि। आगुओ एहिना समर्थन भेटैत रहय, से आग्रह।

– विनीत उत्पल

तीरभुक्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

पाठकगणसं अनुरोध

'तीरभुक्ति' मिथिला आओर अहि सँ जुड़ल मुद्दा पर मैथिलीमे प्रकाशित हुअय बला जर्नल अछि। अहिमे मैथिली आओर मिथिला सँ जुड़ल अकादमिक विशेषज्ञ, लेखक, पत्रकार आ विश्लेषक के शोध रचना पढ़ल जा सकैत अछि। 'तीरभुक्ति' के अहाँ के सहयोग आ समर्थन भेटैत रहय, अहिमे 'तीरभुक्ति' के सफलता छै। हम चाहैत छी जे अहाँ अपन अहि जर्नल के आओर बेसी लोकप्रिय बनाबैक लेल मिथिला, मैथिली आ अहि सँ जुड़ल विषय पर रूचि राखय बला पाठक के 'तीरभुक्ति' के वार्षिक सदस्यता लेबाक लेल प्रेरित करी। 'तीरभुक्ति' के सालमे चारि टा अंक प्रकाशित होयत।

मूल्यः एक प्रतिः 25 टाका, वार्षिक मूल्यः 100 टाका (चारि अंक), पांच वर्ष (20 अंक): 500 टाका

(पत्रिका डाक वा कूरियर माध्यमे वा रजिस्टर्ड एयरमेल सँ पठाओल जायत, जेकर शुल्क अहि मूल्यक संग जुड़ल अछि) सदस्यता लेल अपन पूरा नाम, पता (पिन कोड सहित), मोबाइल नंबर, चेक/ड्राफ्ट सहित ***'अखिल भारतीय मिथिला संघ'*** *केर नामे कार्यालयक पता पर पठाबी वा* teerbhuktimaithili@gmail.com *पर मेल करी।*

पत्राचार पता :

तीरभुक्ति, 20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001

सदस्यता क्रमांक .... दिनांक .... (केवल कार्यालय प्रयोग हेतु)

हम तीरभुक्तिक नियमित सदस्य बनय चाहैत छी। हमर विवरण निम्नलिखित अछि-

नाम : ....

पता : ....

.... मोबाइल नं. ....

उम्र : .... पेशाः ....

शिक्षा : ....

सदस्यता अवधि : ☐ एक वर्ष (100 टाका मात्र) ☐ पांच वर्ष (500 टाका मात्र)

भुगतान : ☐ नगद (विवरण) ....

☐ चेक/बैंक ड्राफ्ट (विवरण) ....

☐ नेफ्ट (NEFT) (विवरण) ....

नोट : चेक/ड्राफ्ट **अखिल भारतीय मिथिला संघ** केर नामे बनाबी। NEFT करबाक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि-

बैंक खाता विवरण

नाम : अखिल भारतीय मिथिला संघ (Akhil Bhartiya Mithila Sangh)

खाता संख्या : 11084229861, आईएफएससी कोड : SBIN0000691 एमआईसीआर कोड : 110002087,

बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया शाखा : पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

वैशाली आ नालंदाक तर्ज पर होय पुनौराक जीर्णोद्धार : प्रभात झा

श्री प्रभात झा राज्यसभा सांसद छथि। राजनीतिक अतिरिक्त सामाजिक आ सांस्कृतिक मंच सभ पर अपन उपस्थिति अनवरत विद्यमान राखैत छथिन्ह। तमाम सामाजिक अभियान सबहक अगुआ रहल छथि। संप्रति ओ सीतामढ़ीक पुनौराधाम स्थित माँ जानकी प्राकट्य स्थलीक जीर्णोद्धार हेतु प्रयासरत छथि। एहि क्रममे 24 अप्रैल 2018 कँ जानकीनवमीक सुअवसर पर पुनौराधाममे विशाल कार्यक्रमक आयोजन जगद्‌गुरु रामभद्राचार्यजीक प्रेरणासँ कएल जा रहल अछि। एहि मादे तीरभुक्तिक संपादकीय टीम प्रभात झा संगे एहि आयोजनक संदर्भमे आ माँ जानकीक प्रतीकात्मक महत्वक ल' क' चर्चा कएलक। एहि चर्चामे विनीत उत्पल, ऋतेश पाठक, डॉ. प्रकाश चंद्र झा, भास्कर ज्योति आ त्रिपुरारी कुमार ठाकुर उपस्थित छलाह।

जगतजननी जानकी केर जन्मभूमि पुनौरा धामक जीर्णोद्धारक विचार अपनेकें मोनमे कत' सँ आयल?

हम सीतामढ़ीक रहि' बला छी, हमर गाम अछि कोरियाही, जे सुरसंड ब्लाकमे आबै छैक। जखन हम पहिल बेर राज्यसभामे गेलहुँ, मध्य प्रदेश सँ, त' हमरा लागल जे राम जन्मभूमिक बारेमे एत्ते लोक बजै छैक, करे छैक, मुदा जखन हम पुनौरा धाम गेलहुँ, माँ जानकीक दर्शन करबा लेल त' हमरा लागल जे एहि मंदिरक जीर्णोद्धार हेबाक चाही। राम जन्मभूमिक लेल त' एखन पाथर-ताथर सभ बनै छैक, सरकार कँ ईहो मंदिरक लेल ध्यान देबाक चाही। त' हम ओहि ठाम सँ पहिल पत्र नीतीशजीकें लिखने रहयनि आ ओहि समय कँ पर्यटन मंत्री श्री सुनील कुमार पिंटू सँ भेंट केलयनि। तकर बाद हमर प्रयास एहि दिशामे निरंतर जारी रहलैक, हम भारत कें सभ सांसद, सभ विधायक कें चिट्ठी-पत्री देलयनि।

'सीताजीकें जन्म कत' भेल छलनि से लोक कें बुझले नहि छल। हुनका सभकें या त' सीतामढ़ी बुझल छलनि या जनकपुर, जखन कि सत्य ई नै छैक। जनकपुरमे विवाह भेल छलनि आ ओ समय भारत नेपाल सभ एक छल। मुदा शास्त्र सभमे लिखल अछि पुनर्नधाम अर्थात पुनौरा धाम। एहि बीचमे हम गेल छलहुँ त' ओते कथा करैत छथि जगतगुरु श्रीरामभद्राचार्य जी, हुनका माध्यम सँ सेहो पुष्टि भेल जे सीताजीक जन्म एहि ठाम भेल छलनि। आनो महंत सभ सँ गप भेल। ओत्तुका साहित्य पढ़लिए, बिहारोमे प्रेस कांफ्रेंस केलिए, धीरे-धीरे लोक सबकें सेहो पता लाग' लगलनि जे यएह सीताजीक जन्मस्थली थिक, एवम क्रमेण ओहि ठाम सँ ई गप दिमागमे आयल छल।

जाहि तरहें रामकें लोक ईश्वरीय प्रतीकक रूपमे पूजैत छथि आ आन देवी सभ जेना दुर्गा, काली आदि शक्तिस्वरूपा रूपमे घर-घरमे अराध्य छथि, ओहेन तरहक अलौकिक देवीभाव सीताजीकें देश भरिमे प्राप्त नहि छनि, एकर पाछाँ की कारण भ' सकैल अछि!

सीताजीक घर-घरमे उपमा देल जायत छैक, मर्यादा पुरुषोत्तम तखने मर्यादित भेलाह जखन सीताजीक संगे विवाह भेलनि। सीताजीकें नाम जनकक पुत्री रुपमे प्रख्यात नहि

अछि, अपितु श्रीरामक सहचरीक रूपमे लोक हुनका जनैत छथि। आय जत' कतो अग्नि परीक्षाक गप होयत अछि ओत्ता सीताजीक चर्चा होयत अछि। जत' पुत्र मोहक गप होयत अछि ओत्ता लोक लव-कुशक चर्चा करैत छथि। भगवान राम मर्यादित तखने भेलाह जखन धनुष यज्ञक बाद सीताजी हुनक अर्द्धांगिनी भेलीह। धनुष राक्षसो उठा सकैत छलैक, मुदा ओ शंकर भगवानक धनुष रामजी सँ ही उठलैक, ई नियति कें पूर्व निर्धारण छलैक।

जँ सीताजीक अपहरण आ द्रौपदीक चीर हरण नहि होयत त' रामायण आ महाभारत नहि भेल रहतियैक। एहि लेल सीताजीक स्थान भारतीय नारीमे सभसँ उपर अछि। हर विवाहितक ई इच्छा रहैत छैक जे पत्नी भेटै त' सीताजी एहेन भेटै, क्यो ई उपमा नहि दैत छथि जे आहा घरवाली दुर्गा या सरस्वती जकां छथि। लोक चाहैत छथि जे विवाहमे सीता जकां व्यवहार संपन्न पत्नी भेटै जे, अग्नि परीक्षा जेहेन कठिन परिस्थिति सँ ल' क' वनवास धरि पतिक संग रहथि, ई सभ बड़ मर्यादित काज अछि। सीताजी भारतीय नारीक मर्यादाक अप्रतिम उदाहरण छथि।

सीताजी निश्चित रूपेण मर्यादाक प्रतीक छथि आ श्रीराम सेहो मर्यादा पुरुषोत्तम भेलाह मुदा एकर बादो एहेन कियैक अछि जे मिथिलाक गीत नाद सँ ल' क' आम भाषा-व्यवहार धरि लोक मिथिलाक बेटी लेल राम एहेन पति नहि माँगि कें महादेव सन वर मांगैत छथि?

भगवान रामक बारेमे जत्ते गीत लिखल गेल अछि से मजाकमे लिखल गेल अछि। रामकें मिथिलाक लोक बहिनोई जकां मानैत छथि, ओ प्रसंग कें नीति सँ नहि जोड़बाक चाही। सीताजी विश्वक ओ स्त्रीगण छथि जिनक जन्म धरा सँ भेल छनि बिना कोनो रक्तस्रावक, आय धरि वैज्ञानिक सभ खोज करैत छथि जे सीताजीक जन्म कोना भेलनि। ओ विश्वक एहेन पहिल महिला छथि जे बिना अग्निकें जमीनमे समाधि लेलनि, जत' जन्म भेलनि ओत्तोको नाम पुनौरा धाम, सीतामढ़ी आ जत' ओ समाधि लेलनि ओत्तोको नाम सीतामढ़ी अछि, जे स्वयंमे बड़ पैघ गप अछि।

भगवान राम सन के भ' सकैत छथि, श्रृष्टि केर निर्माता। कृष्ण आ राममे अहाँ अंतर नहि क' सकैत छी। कृष्ण, शंकर सभ रूपमे ओ जन्म लेलनि। हर काल युगमे एकटा अलग अवतार प्रकट भेलनि। त्रेताक अलग खिस्सा अछि, द्वापरक अलग खिस्सा अछि आ सभ युगक अपन भगवान भेल छनि। आ भगवान के रहितथि, भगवान यानी इंसानक रूप, सभ प्रयोग भगवान अपन शरीर पर केलनि, तखन समाजक नीति निर्धारण भेलैक। सभ छोट-मोट प्रयोग भगवान अपना पर केलनि अछि आ ओ प्रयोग कें समाजक नीति मानल गेल। भगवान राम अपन मिथिलांचलमे ककरा घरमे नहि छथिन्ह, जत' राम तत' सीता, जत' सीता तत' राम।

आजुक दौरमे जय श्रीराम केर नारा लगाओल जायत अछि जाहि सँ एकटा राजनैतिक शकटिक बोध होयत अछि मुदा एहने भाव जय सितारामक नारा सँ नहि उत्पन्न होयत अछि, एकरा अहाँ कोना देखैत छी?

गाम गाममे आय धरि अहाँ देखबे जतेक बूढ़ या अध्यात्मिक लोक छथि भोरे साढ़े चारि बजव उठि कें बजताह सीता-राम, सीता-राम। जय श्रीराममे आक्रोश छैक आ सीता-राममे सामाजिक सामंजस्य। सीता-राम कहबाक लेल आध्यात्मिक भाव चाही आ श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर बनयबाक लेल जय श्रीराम चाही।

पुनौरा धामक जीर्णोद्धार लेल आगाँ कें की योजना अछि?

हम सभ आपसमे सबसँ गप केलिए आ तकरा बाद हम सभ नीतीशजी लग गेलिए। कोनो राज्यक मुख्यमंत्री ओहि राज्यक सभसँ पैघ व्यक्ति होयत अछि। कार्यपालिकाक सभसँ पैघ व्यक्ति मुख्यमंत्री होयत छैक। हुनका सँ आग्रह केलयनि। सभ किछु बतेलयनि एक-बेर दू-बेर तीन-बेर, आ हमरा हुनक मोनकें आशक्ति अहि दुआरे लागल जे एकदिन जगतगुरु रामभद्राचार्य हुनक डेरा पर गेलनि आ कहलनि जे हम अपने सँ भीख मंगबालेल आयल छी। श्रीरामचन्द्रजीक जन्म दिन पर छुट्टी सम्पूर्ण भारतवर्षमे होयत अछि आ दुर्भाग्य देखू, जे बेटी सँ हुनक विवाह भेलनि ओहि राज्यमे हुनका लेल कोनो छुट्टी नहि अछि। रामनवमी पूरा भारतवर्षमे आ जानकीनवमी बिहारमे

नै। त' ओहिदिन साँझमे कैबिनेटक मीटिंग बजाकें जगतगुरु रामभद्राचार्यजीक आग्रह पर बिहारमे छुट्टी घोषित क' देलनि। एना नहि अछि कि जे राजनैतिक काज करैत छैक ओकरा मोनमे आध्यात्मिक भाव नै होयत छैक।

नीतीश कुमार राम मनोहर लोहियाजीक दलक व्यक्ति छथि आ नीतिगत रूप सँ हुनक परंपरा केर व्यक्ति छथि। राम मनोहर लोहिया अपन जीवनमे राम-शिव-गंगा, एहि तीनू केर बड़ पूजा कयने छलथिन्ह। हुनक पुस्तको छनि एहि नाम सँ। ओ बड़ पैघ आध्यात्मिक पुरुष छलाह। एहि दुवारे जखन क्यो कहैत छथि जे समाजवादी मंदिर विरोधी होयत छैक त' हमरा बड़ खराब लगैत अछि। क्यो व्यक्ति जीवनमे मंदिर विरोधी नहि भ' सकैत अछि। वोटक लालचमे तात्कालिक किछु बाजि सकैत अछि। नीतीश कुमारजी जानकीनवमी केर छुट्टी क' के ई सन्देश देलनि पूरा बिहार कें जे ओ जानकीजीक सम्मान करैत छथि। एकटा आध्यात्मिक गुरु केर आग्रह पर साँझमे केबिनेट बजा कें छुट्टी घोषित केलनि, ओहि ठाम हमरा बुझायल जे ई व्यक्ति कें पकड़ल जाय, आग्रह कयल जाय। हम हुनका सँ गप केलयनि, चिट्ठी पठोलयनि, ओ हमरा कहलनि जे एकबेर अहाँ आबू, हमरा संगे चलू।

एहि बीचमे मिथिला संघक स्वर्ण जयंती समारोह भेलैक, ओ समारोहमे अयलाह, ओहि ठाम हम पांच टा मांग रखने रहयनि। ओहिमे मुख्य छल पुनौरा धाम, विद्यापतिजीक बिस्फी, मंडन मिश्रजीक महिषी, कालिदास जीक उच्चैठ स्थान आ एकटा अयाची मिश्रक स्थानक जीर्णोद्धार करब। सभक अपन-अपन महत्व छैक। ओ ओहिठाम मंच सँ मैथिलीमे बजलाह, प्रभातजी आबू एक बेरि। ओ हमरा चारि मार्च कें बजौने छलाह। एहि बीचमे हम एकरा राज्यसभामे उठेने छलहुँ, ओकर जे गलती से जवाब भेटलैक ताहिमे लिखल छल जे भारतीय पुरातत्व विभागक रिकॉर्डमे एहि स्थानक विवरण नहि अछि। जाहिकें बाद जया भादुरी आ दिग्विजय सिंह बजलाह जे माँ जानकी केर प्रमाण चाही अहाँ कें? आ हम राज्यसभामे बाजने छलहुँ जे श्रीराम जन्मभूमिक मुद्दा त' न्यायालयमे अछि मुदा माँ जानकीक जन्म स्थली पुनौरा धाममे त' एहेन कोनो

हम राज्यसभामे बाजने छलहुँ जे श्रीराम जन्मभूमिक मुद्दा त' न्यायालयमे अछि मुदा माँ जानकीक जन्म स्थली पुनौरा धाममे त' एहेन कोनो पेंच नहि अछि। ओतए मंदिर बनबाक चाही, सदनमे ओहि समय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी बैसल छलथिन आ वित्त मंत्री सेहो छलाह। पहिलबेर ई मुद्दा लोकसभा आ राज्य सभामे गुंजायमान भेल। हम आग्रह केलयनि जे मंदिर ओतए अछि, मुदा वैशाली आ नालंदा जकां ओकर जीर्णोद्धार होबाक चाही। पुनौरा धाम लोककें बुझले नहि छल, मुदा मंत्री हमरा आश्वस्त केलनि जे भारत सरकारक जे रामायण सर्किट बनल अछि ओहिमे पुनौरा धामक नाम अछि, ई पहिल सफलता छल।

पेंच नहि अछि, ओतए मंदिर बनबाक चाही, सदनमे ओहि समय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी बैसल छलथिन आ वित्त मंत्री सेहो छलाह।

पहिलबेर ई मुद्दा लोक सभा आ राज्य सभामे गुंजायमान भेल। हम आग्रह केलयनि जे मंदिर ओतए अछि, मुदा वैशाली आ नालंदा जकां ओकर जीर्णोद्धार होबाक चाही। पुनौरा धाम लोककें बुझले नहि छल, मुदा मंत्री हमरा आश्वस्त केलनि जे भारत सरकारक जे रामायण सर्किट बनल अछि ओहिमे पुनौरा धामक नाम अछि, ई पहिल सफलता छल। ओकर बाद भारत सरकारक टीम गेलैक ओतए, लोक सभक बीच सेहो गप पहुंचलैक, लोक आ महंत सभ हमरा बधाई देलक।

हम एक्के टा गप उठेलयनि जे मंदिर बनबा सँ ओतए रिलीजियस टूरिज्म सेंटर बनि सकैत अछि। एहि बीचमे बिहार सरकार रिलीजियस टूरिज्म सेंटर बनेबाक योजना सेहो शुरू कयलनि, जाहिमे एकटा नाम इहो अछि। एकरा बाद हमरा संगे 10 मार्च कें ओत्तुका कलेक्टर, एडीएम, टूरिज्म सेक्रेटरी सभ गेलाह, ओहि सँ पहिने ओतए सभ अधिकारी भ' आयल छलाह, ओ सभ हलेश्वर स्थान आ पंथ पांकर सेहो गेल छलाह, पचास बीघामे ओतए बर गाछक जड़ पसरल अछि।

रामभद्राचार्यजी आग्रह केलनि नीतीश जी सँ जे 24 अप्रैल कें अहाँ हमर कथा केर समापनमे आबू। नीतीशजी कहलाह प्रभात जी जेताह ते हमहूँ प्रयास करब। नीतीशजीक नेतृत्वमे जगतगुरु रामभद्राचार्यजीक अगुवाईमे आ हमर सभक प्रयत्न सँ सीताजीक जन्मस्थली पुनौरा धामक जीर्णोद्धार अवश्य हेतैक। जँ अयोध्या रामलला लेल जानल जायत अछि त' जखन विश्वक मानचित्रमे बिहार लिखल जेतैक त' ओहिमे सीतामढ़ी आ सीतामढ़ीमे पुनौरा धामक नाम जरूर हेतैक। ई पर्यटन विभागक सेहो आदेश भेल अछि। सभटा एहेन तरहक योजना बनि रहल अछि। मिथिला संघक दू गोट पदाधिकारी विजय चन्द्र झा आ विद्यानन्द ठाकुर सेहो हमरा संगे गेल छलाह, कियैकि हम हुनक मंच सँ बजने छलहुँ। सभसँ नीक गप ई जे एहिबेर मिथिला संघ स्वर्ण जयंती स्मारिका छपने छल तकर मुख्य पृष्ठ

पर पुनौरा धामक मंदिरक कवर स्टोरी आ फोटो अछि जकर सम्पादक ऋतेश पाठक जी छलाह, ओकर कॉपी हम सभ नीतीश जीकें सेहो दय बला छिए।

सभसँ नीक बात अछि जे राजनीति सँ ऊपर उठि कें एहि पर विचार भ' रहल अछि। हम जे मीटिंग बजौने छलहुँ ताहिमे वर्तमान सांसद, दुई टा पूर्व सांसद, वर्तमान विधायक, पूर्व पर्यटन मंत्री, ओत्तुका संभ्रांत नागरिक सभ, भाजपा केर आन नेता, सीतामढ़ी केर देवेश ठाकुर आदि सभ आयल छलाह आ हमरा बधाई द' रहल छलाह। हम कहलयनि ई लड़ाई श्रेयक नहि अछि, सभ भारतीय लेल माँ जानकीक सम्मान केर अछि। सबा सो करोड़ आबादी बला देशमे हर भारतीयकें मोनमे ई हेतैक जे जँ राम जन्मभूमि पर जाय छी त' एकबेर माँ जानकी केर जन्म भूमि पर सेहो जाय। हमरा सीतामढ़ीमे जन्म लेलाक कारण हमरा लागल जे हमरा ई काजक दायित्व लेबाक चाही आ सीताजीक कर्ज चुकाबक चाही।

जगतगुरु रामभद्राचार्य जी नि:शुल्क आठ बरख सँ ओत्त' कथा करैत छथि, जिनक कथामे लोक 3-3 करोड़ टाका दैत छनि, ओ ओता 10 दिन रहि कें नि:शुल्क कथा कहैत छथिन्हि। ओ जन्मांध छथि, स्वयं अवध सँ छथि अहि दुवारे हमरा आ नीतिश कुमार जीकें हजारक हजार भीड़क सम्मुख समैध कहैत छथि। सीताजीकें विश्वमे सभ क्यो जनैत छथि एतय धरि कि हिलेरी क्लिंटन सेहो सीताजीकें नाम जनैत छथि। मध्यप्रदेशक करीलामे लव कुशक जन्मस्थली अछि, हम मध्यप्रदेश केर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान सँ आग्रह कयने रही जे ओत्तुका मंदिरक जीर्णोद्धार होय, से आय 10 करोड़ केर लागत सँ भ' रहल अछि। जखन मध्यप्रदेशमे ई भ' रहल छैक त' बिहारमे किये नै होबाक चाही।

सीताजीकें विश्वमे सभ क्यो जनैत छथि एतय' धरि कि हिलेरी क्लिंटन सेहो सीताजीकें नाम जनैत छथि। मध्यप्रदेशक करीलामे लव कुशक जन्मस्थली अछि, हम मध्यप्रदेश केर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान सँ आग्रह कयने रही जे ओत्तुका मंदिरक जीर्णोद्धार होय, से आय 10 करोड़ केर लागत सँ भ' रहल अछि। जखन मध्यप्रदेशमे ई भ' रहल छैक त' बिहारमे किये नै होबाक चाही। मिथिला संघक ओहि कार्यक्रममे राजनाथ सिंह जी आ सुमित्रा महाजन जी सेहो छलीह, सुमित्रा ताई अपने सँ कहलनि जे हम जखन बिहार प्रवास पर जायब त' ओतए जरुर जायब। धीरे-धीरे भारत सरकारक लोक सभ एकरा पर ध्यान द' रहल छैक।

मिथिला संघक ओहि कार्यक्रममे राजनाथ सिंहजी आ सुमित्रा महाजनजी सेहो छलीह। सुमित्रा ताई अपने सँ कहलनि जे हम जखन बिहार प्रवास पर जायब त' ओतए जरूर जायब। धीरे-धीरे भारत सरकारक लोक सभ एकरा पर ध्यान द' रहल छैक। जे काज आजादीक तुरंत बाद भ' जयबाक चाही से आब भ' रहल छैक, त' माँ जानकीक आशीर्वाद सँ भ' रहल छैक। माँ जानकीक जन्मस्थलिक जीर्णोद्धारक मतलब भारतीय लोक सभक उद्धार। आब 24 अप्रैलक इंतज़ार क' रहल छी, जे कोना की हेतैक।

अपने बजलिए जे सभ गोटा राजनीति सँ ऊपर उठि कें काज करतैक। की अहाँकें लगैत अछि जे बिहार सरकार या देशक सरकार सचमे राजनीति सँ इतर सामाजिक-सांस्कृतिक उत्थानक लेल काज करतैक, अहाँ स्वयं भाजपा केर नेता छी, अई पर राजनीति त' नै हेतैक?

निश्चित तौर पर, राजनीति बड़ हल्का चीज अछि। एहि सँ सांस्कृतिक रक्षा हेतैक। एतबा साल गुलाम रहबाक बादो भारत आय अखंड कियैक छैक। कियैकि ओकर संस्कृति अजर-अमर छैक आ जे राष्ट्र केर संस्कृति अजर-अमर होयत छैक ओहि राष्ट्र कें क्यो गुलाम नहि बना सकैत अछि। सीता भारतीय नारीक संस्कृतिक प्रतीक थिकीह, हुनक जन्मस्थलीक जीर्णोद्धार भेला सँ हर भारतीय नारीकें प्रेरणा भेटतनि।

मंदिर केर जीर्णोद्धार एकटा विषय अछि। मंदिरक जीर्णोद्धारक अलावा आओर किछु पर कोनो विचार अछि, जेना सीता संग्रहालय बनायब, आवागमन केर सुविधा आदि?

सभ भ' रहल छैक, सीता संग्रहालय, आवागमन सभ हेतैक। सभसँ पहिल गप अछि मंदिरक जीर्णोद्धार आ आधार वएह छैक। जा धरि मंदिरक जिर्णोद्धार नै हेतैक, लोक एतैक कता? लोक श्रद्धा भाव सँ एतैक त' हुनका बैसबाक स्थान, पूजा-पाठ कर' केर स्थान, मंडप, विवाहक स्थान चाहि। बहुत लोक चाहतैक जे एत्ते सामूहिक विवाह करी। कथाक स्थान सभ बनि रहल छैक। जों एकरा सभ लेल जँ जमीनों अधिग्रहण कर' पड़े त' सरकार सेहो करतैक। पहिल बात अछि जे समाज कें पता लगबाक चाही। हमरा सांसद हेमा मालिनीजी सँ गप सेहो भेल आ कहलनि जे ओ अयतीह। रामदेव जी कहलाह जे ओ अयताह। जों हेमामालिनीजी सीता पर कत्थक करतीह आ रामदेवजी सीता पर कथा कहताह त' ई कत्तेक पैघ गप हेतैक।

समाज सँ की अपेक्षा?

देखियो सरकार कें जन्म दैत छैक समाज। समाज सँ बढ़ि कें सरकार नै होयत छैक। समाज जागत त' सरकार जागत। समाज सरकारक जननी अछि,

समाज सनातन अछि सरकार त' अबैत जायत रहैत छैक।

अहाँ कहलिये विवाह मंडप बनतैक, मुदा जाहि मासमे राम-सीता केर विवाह भेल छल, ओहि मासमे मिथिलाक लोक सभ विवाह नै करैत छैक, एकर मतलब ईभेलते लोक हुनका स्वीकार नै करैत छैक...

दोसर मासमे करतैक। देखियो ई सभ किंवदंती आ भ्रान्ति छियैक। सभसँ पैघ गप अछि जे सीता पूजनीय थिकीह वा नै थिकीह? सीता जों पूजनीय थिकीह त' पहिने पूजनीया केर स्थान त' बनै।

धार्मिक पर्यटन स्थल सँ एकटा गप आओर अछि जेना बैद्यनाथ धाममे ओना त' भरि साल लोक जायत छथि मुदा सावनक अपन महत्व अछि...

आब ओहि ठाम एकटा आओर गप एलैक जे राम जानकी एक्सप्रेस शुरू करू। ई अयोध्या सँ सीतामढ़ी कें जोड़त। एकटा आओर गप एलैक जे जनकपुर जायत छैक बाराती, सीतामढ़ी सँ अयोध्या से अबैत छैक। एहि श्रृंखलामे बड़ चीज जुड़ल छैक, सीता सर्किट कियैक नै बनतैक जां रामायण सर्किट अछि त'। बड़ चीज अछि मुदा पहिने आंगुर त' पकड़े दियौक तखन ना हाथ पकड़बैक।

पर्यटन मंत्रालय दिश सँ नील्सन कंपनी रामायण सर्किटक सर्वे कयने छैक, आ ओकर रिपोर्ट सिया-राम सर्किटक नाम सँ प्रकाशित भेल अछि, की एहेन कोनो प्रयास कयल जा रहल अछि जे रामायण सर्किटक नाम सिया-राम सर्किट राखि देल जाय?

देखियो सभ सँ पहिल गप ई अछि जे, ई सर्किट-अर्किट ठीक छैक, मुदा पहिने बल्बमे लायन एतैक, तखन नै बल्ब जरतैक। प्लग त' लागे दियौक, बटन तकरा बाद नहि लगेबैक। पहिल आधार अछि पुनौरा धाम। जेना भारतमे चारि टा धाम अछि, ओहने पुनौरा धाम भारतक पांचम धाम बनबाक चाही। आय लोककें बुझले नहि अछि जे सीता जीक जन्म कता भेल अछि। रोजी-रोटी आवश्यक अछि जीवनमे मुदा अध्यात्म सेहो आवश्यक अछि, शास्त्र कहैत छैक जे जीवन एकटा उपवन अछि, जे व्यक्ति आध्यात्म के लग रहत ओकरा प्रकाश भेटतैक। भारत अहि दुवारे जीवित अछि कियैकि एकर एकटा सांस्कृतिक-अध्यात्मिक जीवन अछि।

की एकर कोनो आश्वासन अछि जे ई सम्पूर्ण परियोजना केर क्यो राजनैतिक लाभ नै लेतैक? जेना नीतीश जी वा क्यो आओर?

नै नै, एकर कोनो आश्वासन संभव नहि अछि। एकर समझ होयत छैक। सामाजिक जीवनमे राजनीतिक एकटा महत्व अछि। राजनीतिमे ई कहाँ कहल गेल अछि जे सांस्कृतिक काज नहि करी, जीवनक कर्तव्य थिक जे अहाँ किछु नै किछु सांस्कृतिक काज करू। जानकी नवमीसँ की मतलब रहनि नीतीशजी कें। कियैक छुट्टीक घोषणा कयलनि, जगतगुरु रामभद्राचार्यजी विश्व केर सभसँ पैघ विश्वविद्यालय चला रहल छथिन्ह दिव्यांग लेल। कियैक चला रहल छथिन्ह कियैकि दुनु आँखि सँ आन्हर व्यक्ति सेहो किछु कीर्ति क' सकैत छथि। राजनीतिमे रहितहुँ सामाजिक आ सांस्कृतिक चेतनक उद्घोष बन' पड़त अहाँकें, पांचजन्य फूंक' पड़त।

जेना भारतमे चारि टा धाम अछि, ओहने पुनौरा धाम भारतक पांचम धाम बनबाक चाही। आय लोककें बुझले नहिं अछि जे सीताजीक जन्म कतए भेल अछि। रोजी-रोटी आवश्यक अछि जीवनमे मुदा अध्यात्म सेहो आवश्यक अछि। शास्त्र कहैत छैक जे जीवन एकटा उपवन अछि, जे व्यक्ति आध्यात्म के लग रहत ओकरा प्रकाश भेटतैक।

सीता जी सन सहनशील आ सृजनशील क्यो नहि भ' सकैत अछि, कथा-कहानी अपन हिसाब सँ लोक बना दैत छथि ई सभ फूसि थिक, जनक विदेह छलाह अर्थात बिना देह केर, ओ भगवान सँ बेटी मंगने छलाह, सीताक जन्म कोनो रक्त स्त्रावाक बाद नहि भेल छल, जमीन सँ भेल छल, आय नरेन्द्र मोदी बेटी बचाओ अभियान शुरू कयलाह, जनक पहिल व्यक्ति छलथिन्ह बेटी बचाओ शुरू कर' बला, ओ ओहि युगमे बेटी मंगलाह जाहि युगमे लोक बेटा मांगे।

मिथिलाक लोक गीत सभमे ई दर्शाओल गेल अछि जे सीताक मोनमे दुःख छलनि जे हुनक दशा पर मिथिला सँ क्यो आवाज़ नहि उठौलक, आब हम ओ समाजमे घुरि कें नहि जायब?

नै, नै, नै, सीता जी सन सहनशील आ सृजनशील क्यो नहि भ' सकैत अछि। कथा-कहानी अपन हिसाब सँ लोक बना दैत छथि ई सभ फूसि थिक। जनक विदेह छलाह अर्थात बिना देह केर, ओ भगवान सँ बेटी मंगने छलाह। सीताक जन्म कोनो रक्त सावाक बाद नहि भेल छल। जमीन सँ भेल छल। आय नरेन्द्र मोदी बेटी बचाओ अभियान शुरू कयलाह, जनक पहिल व्यक्ति छलथिन्ह बेटी बचाओ शुरू कर' बला, ओ ओहि युगमे बेटी मंगलाह जाहि युगमे लोक बेटा मांगैत छल। सृष्टिक निर्माण समयक बहुत कथा सभ अबैत छैक, जखन कोनो अवतार पुरुष अबैत छथि त' ओकरा संगे बहुत चीज जुड़ैत रहैत छैक।

(प्रस्तुति भास्कर ज्योति)

शोध पत्र जमा करबाक लेल दिशा-निर्देश

- शोध-पत्र एमएस वर्डमे मंगल बा कृतिदेव फॉण्टमे 14 पॉइंट साइजमे टंकित करायके ई-मेल करू।
- शोध-पत्र लिखैत काल सन्दर्भक स्पश उल्लेख करू। पुस्तकक सन्दर्भ, पत्र-पत्रिकाक सन्दर्भ, प्रकाशन वर्ष आ संस्करणक अंकित हेब अनिवार्य अछि। सन्दर्भक लेल ए.पी.ए. -छठम शैली (APA 6th Edition) के उपयोग करब अनिवार्य अछि।
- शोधपत्र पूर्ण रूपेण मौलिक हेबाक चाही, जेकर घोषणा-पत्र संलग्न हेबाक चाही, नहि त' शोध-पत्र पर विचार नहि कयल जायत।
- शोध-पत्रक प्रकाशन संपादक-मंडल पर निर्भर अछि। संपादक-मंडल कैं संतुश हेबाक बादे शोध-पत्र प्रकाशित कयल जायत।
- शोध-पत्रक आरंभ शोध-सारांश (बेसी सँ बेसी 100 शब्द) आ अंतमे निष्कर्ष अवश्य लिखू।
- पोथी-समीक्षाक लेल संपादकक लग कार्यालय कैं पता पर पठाबी।

तीरभुक्ति प्राप्ति स्थल

दरभंगा : प्रो. भीमनाथ झा, छपकी परड़ी, लक्ष्मीसागर, मो. 9430827936

दिल्ली : विजय चन्द्र झा / विद्यानंद ठाकुर, 20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9650461788, 9717539000
प्रकाश झा, 'रंगप्रसंग', राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, भगवान दास रोड, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9811774106

गाजियाबाद : डॉ. ममता ठाकुर, मो. 917258787

गुवाहाटी : प्रेमकांत चौधरी, मो. 9435342658

हैदराबाद : मनोज शांडिल्य, मो. 9866077693

झंझारपुर : आनंद कुमार झा, मो. 9939041881

मधुबनी : सुनील कुमार झा, जानकी मैथिली पुस्तक भंडार, मो. 9473115956

मुंबई : जितेन्द्रनाथ 'जीतू', मो. 9833034013
हीरेन्द्र कुमार झा, मो. 8108284637

पटना : शिव पुस्तक भंडार, विद्यापति भवन, पटना, मो. 9905281145

धार्मिक पर्यटनकेँ प्रोत्साहनसँ बदलत मिथिलाक चित्र

✍ भास्कर ज्योति

लेखक नई दिल्ली स्थित जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालयक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन केंद्रमे रिसर्च स्कॉलर छथि। ओ जेएनयू मिथिला मंचक अध्यक्ष सेहो छथि। विविध पत्र-पत्रिका आ टीवी चैनल सबमे समसामयिक विषय पर निरंतर गंभीर प्रस्तुति करैत रहैत छथि।

मिथिलाक भूमि चिर कालसँ ज्ञान आ तपस्याक भूमि रहल, जकर माटि-पानिसँ कत्तेको दर्शनक उद्‍भव भेल। विदेहक ई भूमि पर आबिकेँ श्रीराम, मर्यादा पुरुषोत्तम राम बनलाह त' अद्वैत वेदान्तक प्रणेता शंकर, आदि गुरु शंकराचार्यक रूपमे ख्याति प्राप्त कयलनि। मिथिलाक परम प्रतापी भूमिक एहि विशेषता केँ उजागर करैत यात्रीजी "माँ मिथिले" कवितामे लिखने छलाह।

धूम संकुचित नयनमे,
कामधेनु-खुर-खनित अयनमे
मुनिकन्याक प्रसून-चयनमे,
छल अहांके आमोद
स्मरण जकर करै अछि क्षण भरि,
सभ शोकक अपनोद
गौतम अनुमित न्यायक अथमे,
याज्ञवलक्य-दर्शित-नय पथमे
ज्ञानी जनकक जीवन रथमे,
अंकित तव पद-पद्म
अछि मैथिलिक मौलि मुकुलावलि,
लालित जे छविसद्म...

पुरुषार्थक चारो टा अवयव, धर्म, अर्थ, काम आ मोक्षक प्राप्तिक लेल अखंड आर्यावर्त सँ तपस्वी, संन्यासी सभ मिथिलाक भूमि पर अबैत छलाह किऐकि विदेहक ई भूमि पर साक्षात देवीक वास छल। एहि देवभूमिक उत्तरमे जँ हिमालयक उत्तुंग शिखरपर सृष्टिक संहारक साक्षात महादेव विराजमान छथि त' दक्षिणमे गंगा हिनक चरण पखारैत छथि, कोसी लाखक लाख लोकक जीवनदायी पीयूषक स्रोत बनल छथि। एहेन भूमि जत' जगतजननी सीता स्वयं मनुष्य रूपमे अवतरित भेलीह आ महादेव उगना रूपमे प्रकट भेलाह, ओहि भूमिक वर्णन शब्दमे करब असंभव तुल्य अछि।

ऋषिवर विश्वामित्र संगे जखन श्रीराम गौरी स्वयंवरक लेल मिथिलाक भूमि पर अबैत छथि, तखन रामक मोनमे मिथिलाक जे छवि बनैत अछि तकरा चित्रित करैत महाकवि लालदास लिखने छलाह।

मिथिला देश परम अभिराम,
सकल लोक पावन सुखधाम
चलयित देखल कति असथान,
धनधान्ये संपन्न महान
आम्र सुकानन पनसोद्यान,
सुभग सुशीतल छायावन
प्रजा सभक शुभ वासस्थान,
भव्य भवन देखल भगवान।

मिथिलाक एहेन विराट आ गौरवशाली इतिहास रहितहुँ आय माँ मिथिला अपन दुर्दशा पर नोर चुआ रहल छथि। ओ विदेहक माटि जकर छाती चीर केँ सीता अवतरित भेलीह, आय एकटा राष्ट्रीय अस्मिताक लेल हकन कनैत अछि। महिषी गामक जे भूमि पर पहिलबेर शंकराचार्यकेँ शास्त्रार्थमे पराजित होम' पड़ल ओ भूमिक आय कोनो पहिचान नहि अछि। मिथिलाक अपन गौरवशाली अतीतकेँ पुनर्जीवित

संपर्क : *कृष्णा नगर, वार्ड नं.-23, बटराहा, सहरसा, बिहार*
Mob: 9015753660

करबा लेल सरकार द्वारा कत्तेको प्रयास कैल जा रहल अछि, मुदा ओ सभ प्रयाससँ पहिने जे प्रयास सर्वप्रथम करबाक आवश्यकता अछि, से अछि, अपन धरोहर सभक पूर्ण जानकारी स्वयं राखब।

पर्यटनक महत्व

कोनो देश वा राज्यक विकासमे पर्यटनक भूमिका अति महत्वपूर्ण होयत अछि। एक दिश जँ पर्यटन केर माध्यम सँ देश/राज्यक धरोहर आ संस्कृतिक प्रचार आ विनिमय होयत अछि त' दोसर दिश पर्यटन सँ देश आ राज्य केर प्रति बाह्य लोक सभक मध्य सकारात्मक दृष्टिकोण सेहो बनाओल जायत अछि। सकारात्मक दृष्टिकोणक योगदान केर अजुका वैश्विक समाजमे बड़ महत्व अछि। ई देश वा राज्यक मृदु शक्ति केर रूपमे प्रयोग कयल जायत अछि।

राजनैतिक विज्ञानक प्रख्यात विद्वान् जोसफ नाये मृदु शक्तिकेँ वैश्विक युगमे सैन्य शक्ति सँ कैकठाम श्रेयष्कर बुझैत छथि। एहेन स्थितिमे राज्यक लक्ष्य होबाक चाही जे राज्यक प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कयल जाय।

पर्यटनक सभसँ बेसी जे महत्व अछि, से पर्यटनक औद्योगिक क्षमतासँ अछि। पर्यटनक सांस्कृतिक आ सामाजिक पहलू सँ इतर आर्थिक पहलू सेहो अछि। राष्ट्र स्तर पर पर्यटन निवेशक माध्यम होयत अछि। कोनो ऐतिहासिक धरोहरक टिकट जँ क्यो विदेशी सैलानी कीनैत छथि त' एक तरहेँ ओ देशमे निवेश क' रहल छथि। पर्यटन रोजगार सृजन करबाक एकटा पैघ माध्यम अछि। पर्यटन स्थल केर आसपास छोट-मोट फूल बेच' बलासँ ल' क' होटल बला धरिकेँ पर्यटक केँ अयला सँ लाभ होयत अछि आ टैक्सक माध्यम सँ राजकोष केँ सेहो फायदा पहुँचैत अछि, जाहि सँ राज्यक विकासक मार्ग प्रशस्त होयत अछि।

मिथिलामे पर्यटन उद्योग: एकटा अवलोकन

ओना त' कमोबेश बिहारेमे पर्यटन उद्योग सुसुप्तावस्थामे अछि, ताहुमे मिथिलाक हाल पर्यटनक दृष्टि सँ बड़ बेहाल अछि। बिहार पर्यटन विभागक वेबसाइट सँ प्राप्त आँकड़ा तालिका-1 कें अनुसार वर्ष 2016मे बिहारमे आय धरिक इतिहासमे सभसँ बेसी पर्यटक पहुंचल। जतए 2015मे बिहार जाय बला पर्यटकक कुल संख्या करीब दू लाख नब्बे हजार छल ओत्ते 2016मे ई संख्या तीन करोड़ धरि पहुँच गेल। पर्यटन विभागक वेबसाइट कें अनुसारें कुल पर्यटक केर 80 प्रतिशत सँ बेसी

तालिका 1 : वर्ष 2001 से 2014 केर बीच बिहार मे पर्यटकक आवागमन

(YEAR-2001-2014)

SL.NO	PLACE	TOURIST	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014
1	PATNA	DOMESTIC	1050148	592274	643657	1653378	1487940	2008647	718652	4306087	3575868	4162327	5778343	5090876	1458616	1817439
		FOREIGN	3442	2109	5222	3685	1856	3964	3835	3920	64974	21039	10380	15783	9501	9097
2	GAYA	DOMESTIC	294387	723309	525932	2163882	1126003	1136725	1359258	4116695	5018295	4872097	5023259	5063171	12544163	5098230
		FOREIGN	6192	5883	2875	6188	4010	3338	2247	89552	98444	224733	254963	268832	248009	209656
3	BODH GAYA	DOMESTIC	175980	94950	127990	153269	297155	464790	479860	745305	847731	832364	1006132	933153	398876	1647701
		FOREIGN	30161	65270	25929	17115	37001	52917	120431	143880	137985	96103	293519	207933	139556	225668
4	RAJGIR	DOMESTIC	821911	624301	384075	564151	322559	348277	890612	777350	1064882	1971454	1341433	3700446	1381121	1525107
		FOREIGN	17631	16182	8459	3997	5491	10885	32572	85497	107006	130570	201137	373186	162452	164314
5	NALANDA	DOMESTIC	0	0	0	0	0	0	0	0	0	255469	891799	934125	502341	1057317
		FOREIGN	0	0	0	0	0	0	0	0	0	47773	177884	190162	104580	124810
6	RAXUAL	DOMESTIC	22083	27948	144005	135847	134828	141547	71725	91189	82345	15150	21721	81371	14409	94383
		FOREIGN	4649	2950	2592	2521	1774	2469	6920	4986	6269	3495	4166	3139	2169	3324
7	MUNGER	DOMESTIC	15414	51349	43444	53832	46052	51578	40498	38315	65155	65036	88812	101230	81367	94325
		FOREIGN	0	82	0	0	14	0	0	0	0	0	0	0	2025	0
8	VAISHALI	DOMESTIC	202330	85084	63553	308004	233987	261223	226112	121227	46767	81004	63322	53276	90346	202509
		FOREIGN	15460	15065	11369	4229	8865	11461	9475	16709	8210	15600	29951	37533	71701	60108
9	MUZAFFARPUR	DOMESTIC	511741	73248	72275	289553	68236	65639	240661	295441	217351	268912	303440	361720	235006	508739
		FOREIGN	8063	5255	4298	232	3660	8703	682	26	0	0	0	12	0	0
10	BHAGALPUR	DOMESTIC	1639326	3254263	2505358	11535	0	64942	88293	1114383	544746	453660	1317458	1997001	758050	931347
		FOREIGN	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
11	SONEPUR FAIR	DOMESTIC	1092000	1093000	1296434	1180605	2008320	4001000	4019500	216386	2785745	2785856	894725	0	2495408	4672201
		FOREIGN	50	65	67	151	650	709	1190	68	50	55	109	23	167	741
12	SAURASTH SABHA MADHUBANI	DOMESTIC	110254	105956	95742	60000	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
		FOREIGN	25	12	9	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
13	SINGHESWAR ASTHAN FAIR MADHEPURA	DOMESTIC	125594	134525	142245	0	0	0	0	0	0			0	0	0
		FOREIGN	0	0	0	0	0	0	0	0	0			0	0	0
14	SHRAWANI MELA, SULTANGANJ (BHAGALPUR)	DOMESTIC	0	0	0	1523400	1155605	2125900	2198380	0	1510000	260510	1631376	3111557	1623750	2564449
		FOREIGN	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	25630	31764
15	OTHER	DOMESTIC	0	0	0	0	0	0	19336	67233	25794	18886	35670	19173	4853	2330630
		FOREIGN	0	0	0	0	0	0	10	934	104	1318	378	330	45	26
16	TOTAL	DOMESTIC	6061168	6860207	6044710	8097456	6880685	10670268	10352887	11889611	15784679	16042725	18397490	21447099	21588306	22544377
		FOREIGN	85673	112873	60820	38118	63321	94446	177362	345572	423042	540686	972487	1096933	765835	829508
GRAND TOTAL			6146841	6973080	6105530	8135574	6944006	10764714	10530249	12235183	16207721	16583411	19369977	22544032	22354141	23373885

स्रोत : आधिकारिक वेबसाईट, पर्यटन विभाग, बिहार सरकार

संख्या पटना, गया, बोधगया आ नालंदा धरि सीमित रहल। बुद्ध सर्किट केर समुचित प्रचार-प्रसार कें कारणें बुद्धक जन्मस्थली आ कर्मस्थली पर देश-विदेश सँ पर्यटक सभ दर्शनार्थ अबैत छथि, मुदा एहि तरहक प्रचार मिथिलाक भूमि पर अवस्थित जगत जननी सीताक जन्म आ कर्मस्थलिक नहि भ' सकल।

एक दिश अयोध्यामे श्रीरामचन्द्र जीकें विराट मंदिर बनेबाक सांस्कृतिक-राजनैतिक मांग दशकों सँ तूल पकड़ने अछि, मुदा वएह ठाम मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्रक सहचरी जानकी केर जन्मस्थली पर विराट मंदिर बनेबाक सोच कें गंभीरता नहि प्राप्त अछि। भव्य मंदिरक निर्माण सँ एक ठाम जतए देवी जानकीक प्रति मैथिल सभक उद्‌गार प्रकट होयत, ओहि ठाम मिथिलामे पर्यटन कें अप्रतीम बल प्राप्त हेतैक। मंदिर केर निर्माण सँ ओहि क्षेत्रक संचार व्यवस्थामे सेहो सुधार होयत जाहि सँ लोक सबकें रोजगारक अन्यान्य अवसर भेटतैक संगहि मिथिलाक विशेष व्यंजन पान, माछ आ मखान कें अंतरराष्ट्रीय पहिचान सेहो प्राप्त हेतैक। मिथिलाक पर्यटन स्थल सभसँ जुड़ल कोनो विशेष आँकड़ा पर्यटन विभागक तालिका वेबसाइट पर उपलब्ध नहि अछि। नीचाँ संलग्न तालिकामे देखल जा सकैत अछि जे जतए नालंदा आदिक पूर्ण जानकारी पर्यटन विभाग लग उपलब्ध छल, ओतहि सौराठ सभा आ सिंहेश्वर स्थानक कोनो आंकड़ा नहि होबाक कारणें पर्यटकक संख्या शून्य दर्शाओल गेल अछि।

सिया-राम सर्किट

भारतमे धार्मिक-अध्यात्मिक पर्यटनक महत्व बुझैत केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2014-15 मे स्वदेश दर्शन योजनाक शुरुआत कयल गेल जकरा अंतर्गत देश भरिमे 13 टा धार्मिक पर्यटन सर्किट बनेबाक लक्ष्य राखल गेल अछि। एहि तरहक सर्किटमे एकटा

2014-15 मे स्वदेश दर्शन योजनाक शुरुआत कयल गेल जकरा अंतर्गत देश भरिमे 13 टा धार्मिक पर्यटन सर्किट बनेबाक लक्ष्य राखल गेल अछि। एहि तरहक सर्किटमे एकटा सर्किट अछि रामायण सर्किट जकरा सिया-राम सर्किट केर नाम सँ सेहो जानल जायत अछि। एहि सर्किट केर अंतर्गत राम आ सीता सँ जुडल तमाम धार्मिक महत्व बला स्थान सबकें जोड़ल जायत।

सर्किट अछि रामायण सर्किट जकरा सिया-राम सर्किट केर नाम सँ सेहो जानल जायत अछि। एहि सर्किट केर अंतर्गत राम आ सीता सँ जुड़ल तमाम धार्मिक महत्व बला स्थान सबकें जोड़ल जायत। एहि सर्किटक शुरुआत राम जन्म भूमि अयोध्या सँ भ' क', मध्यप्रदेशक चित्रकूट सँ उत्तरप्रदेशक इलाहाबाद, मिर्जापुर, वाराणसी होयत बिहारक बक्सर सँ मिथिलाक भूमि मुजफ्फरपुर, दरभंगा, जानकीक जन्मस्थली सीतामढ़ी बाटे नेपालक जनकपुर धाम धरि होयत।

नील्सन द्वारा भारत सरकारक लेल कयल गेल सर्वेमे ई तथ्य बुझबामे आयल जे सिया-राम सर्किट पर्यटन केर दृष्टि सँ अति महत्वपूर्ण अछि। बसंत पंचमी, मिथिला परिक्रमा, राम नवमी महोत्सव, जानकी नवमी, गंगा दशहरा, गौरी पूजा, झूला महोत्सव, कृष्णा अष्टमी, राधा अष्टमी आ दशहरा आदि पावनि-तिहारक समय सीता सँ जुड़ल विभिन्न स्थल सभक दर्शन करैत 5-6 लाख श्रद्धालु जनकपुर पहुँचैत छथि। सात दिन धरि चल' बला जानकी महोत्सवक समय 18-20 लाख श्रद्धालु जनकपुर जायत छथि, जाहिमे 10 लाख सँ बेसी लोक मिथिलाक रहैत छथि। श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी आ रूस सँ विदेशी पर्यटक सेहो एहि समयमे एहि स्थान सभक दर्शन करबाक लेल अबैत छथि। नील्सन केर सर्वेमे ई पता चलल जे पूर्ण विकसित सर्किटक अभावोपरांत लाखक लाख लोक सिया राम सर्किटक तिरपेक्षण करैत छथि। जँ ई सर्किट केर आधारभूत संरचना कें पूर्ण रूपेण विकसित कयल जाय त' ई सम्पूर्ण क्षेत्रमे नै खाली पर्यटनक विकास संभव अछि अपितु कृषि आ अन्य व्यवसायक मार्ग सेहो प्रशस्त होयत। नीचाँ संलग्न मानचित्रमे सिया-राम सर्किट केर पूर्ण मार्ग कें देखल जा सकैत अछि।

पुनौरा धाम, सीतामढ़ी

जगतजननी जानकीक जन्मस्थली केर संबंधमे इतिहासकार आ पौराणिक कथाकार सभक मध्य मतेक्य नहि अछि। किछु इतिहासकारक मादें जानकीक जन्मस्थली सीतामढ़ी अछि, वएह ठाम किछु अन्य साहित्यकारक अनुसारें सीतामढ़ी सँ एक मीलक दूरी पर स्थित पुनौरा धाममे सीताजीक जन्म भेल छलनि। हालाँकि, विभिन्न कथा सभमे जानकीक जन्मक भिन्न-भिन्न कथा सभ प्रचलित अछि मुदा वाल्मीकि आ कम्बन रामायण जेकि सभसँ बेसी विश्वसनीयता राखैत अछि,मे जानकीक जन्म एहि स्थान पर इंगित अछि। पुनौरा धाममे रामजानकीक भव्य मंदिर अछि जे जानकी कुंड केर नाम सँ प्रसिद्ध अछि। महर्षि वाल्मीकि कें अनुसार सीतामढ़ी मिथिलाक राजा सीरध्वजक (राजा जनक) राज्यक हिस्सा छल। हुनक राजकालमे मिथिलामे भयंकर सुखाड़ पड़ल। दैवीय चमत्कार सँ एकटा भविष्यवाणी भेल जे राज्यक पालनहार जनक जँ स्वयं ह'र चला खेतमे सीतक (हल सँ बनल क्यारी) निर्माण करथि त' राज्यमे बरखा संभव होयत। जनक जखने पुनौरामे ह'र जोत' लगलाह, धरती

चित्र 1 : सिया-राम: सर्किट एकटा संकल्पना

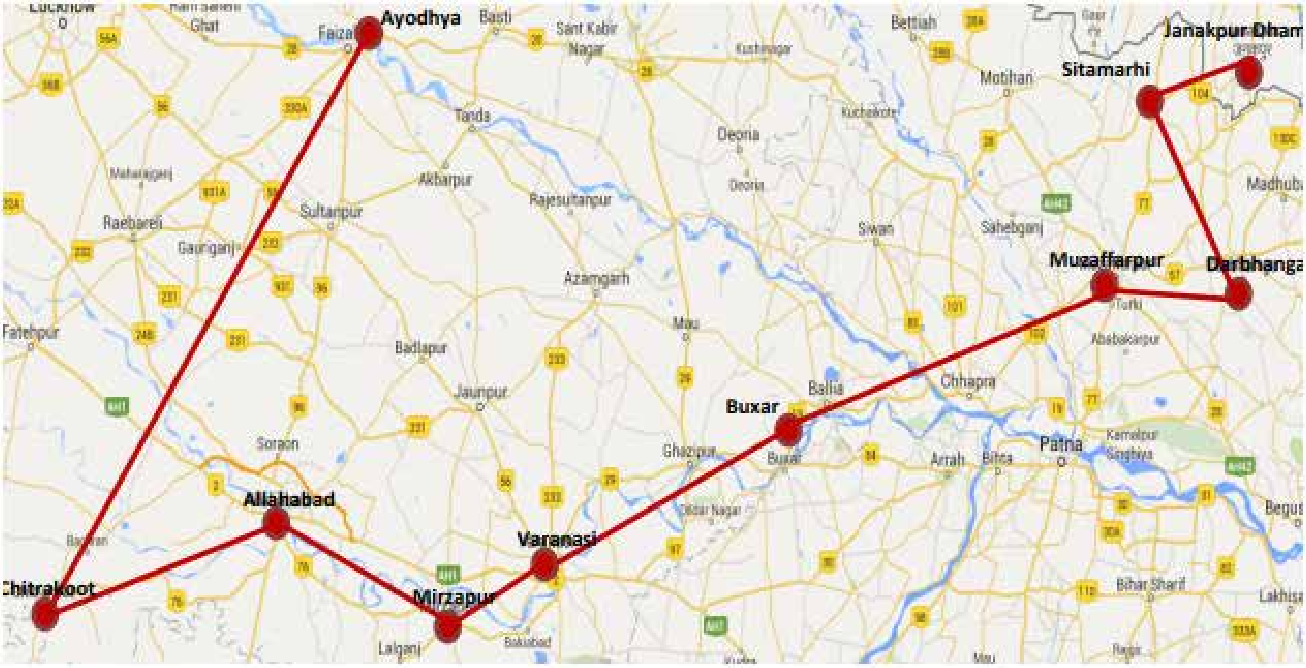

स्रोत : नील्सन रिपोर्ट

सँ एकटा घड़ा प्रकट भेल जाहि सँ साक्षात सीता अवतरित भेलीह। जखने जनक हुनका कोरामे लेलथि, झमाझम पानि पड़ब शुरू भ' गेल। जगतजननी कें बचेबा लेल जनक एकटा मड़ईमे चलि गेलाह। सीतक सँ प्रकट भेलाक कारणें, जनकजननीक नाम सीता राखल गेल। जे बादमे वैदेही, जानकी आ मैथिली नाम सँ विख्यात भेलीह। ओ मड़ई एखनो सीतामड़ईक नामसँ अवस्थित अछि। कहल जायत अछि जे सीतामड़ई कालान्तरमे अपभ्रंश भ' सीतामढ़ी भ' गेल। पुनौरा धाममे पुंडरिक ऋषिक कुंड सेहो अछि। आय सँ दू सौ बरख पूर्व जखन एहि कुंडक जीर्णोधार कराओल गेल छल ओहि समय कुंड सँ एकटा मूर्ति प्राप्त भेल छल जकरा उर्विजा कुंड कहल जायत अछि। मुख्य मंदिरमे आय धरि वएह मूर्ति विराजमान अछि।

हलेश्वर स्थान

हलेश्वर स्थान सीतामढ़ीसँ तीन किमी. उत्तर पश्चिममे अछि। राजा जनक हरसँ खेत जोतब प्रारम्भ केने छलाह। हलेश्वरमे महादेवक एकटा विराट मंदिर अछि। एहि मंदिरमे स्थापित शिवलिंग कें मिथिलामे स्थापित पहिल शिवलिंग मानल जायत अछि। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षणमे हलेश्वर स्थान सँ प्राप्त शिलालेख केर आयु 7000 वर्ष पुरान मानल गेल अछि। हलेश्वर स्थानमे हर साल लागय बला सावन मेला उत्तर बिहार आ नेपालमे बड़ प्रसिद्ध अछि।

पुनौरा धामक लग धार्मिक महत्वक किछु आओर स्थान सभ अछि। एत्ते सँ 5 किमी. पर पंथ-पांकर अछि। स्टेशन सँ 7 किमी. पर बगही मठ अवस्थित अछि। एहि मठमे 108 कोठरी बनल अछि, जाहिमे यज्ञ हवन सभ संपादित कयल जायत अछि। एकरे बगलमे एकटा जगह अछि देवकुली, जकरा ढेकुली केर नाम सँ सेहो जानल जायत अछि। मानल जायत अछि जे द्वापर युगमे पांडवक पत्नी द्रौपदीक जन्म एहि ठाम भेल छल। एत्ते सँ जनकपुर केर दूरी मात्रे 35 किलोमीटर अछि।

अहिल्या स्थान, दरभंगा

राम आ लक्ष्मण जखन महर्षि विश्वामित्र संगे वर्तमान अहिल्या स्थान बाटे जायत छलाह त' हुनक दृष्टि वीरान पड़ल वाटिका दिश गेल त' ओ ऋषि सँ पुछ्लथि जे ई स्थान एहेन निर्जन क्याक अछि त' ऋषि बतेलथि जे ई पहिने गौतम मुनिक आश्रम छलनि। देवराज इंद्रक प्रणय याचना कें स्वीकार करबाक कारणें गौतम मुनि इंद्र आ अपन धर्म पत्नी अहिल्या कें श्राप द' देने छलखिन, हुनके श्राप सँ अहिल्या पाथर कें मुरूत बनि गेल, जकर उद्धार आब अहें केर हाथ सँ संभव अछि। श्रीराम तखन देवी अहिल्या कें श्राप सँ मुक्त क' देलखिन आ ओ स्थान आय धरि अहिल्या स्थान केर नाम सँ जानल जायत अछि। पुनौरा धाम सँ अहिल्या स्थानक दूरी 40 किलो मीटर अछि।

उग्रतारा मंदिर, महिषी

सहरसा जिला मुख्यालय सँ 16 किलो मीटर कें दूरी पर अवस्थित महिषी ग्राममे भगवती उग्रताराक मंदिर अछि। एहेन मान्यता अछि जे बिना भगवतीक आदेश कें कोनो भी तंत्र साधना पूर्ण नहि होयत अछि। भगवतीक ई मंदिर देशमे स्थित 52 शक्तिपीठमे सँ एक

अछि। शक्तिपुराणक अनुसार महामाया सतीक बाम नेत्र एत्ते खसल छल। देवी उग्रतारा भक्तक उग्र सँ उग्र व्याधि कें हरि लैत छथि। महिषीमे भगवती तीनू स्वरुप उग्रतारा, नील सरस्वती आ एकजटा रूपमे विद्यमान छथि। नवरात्र केर अष्टमी दिन एतय तंत्र साधक सभक जमघट लागैत अछि, ओना त' साल केर आन सभ दिनमे देवीक पूजा वैदिक विधि विधान सँ कयल जायत अछि, मुदा नवरात्र कें समय तंत्रोक्त विधि सँ सेहो पूजा कयल जायत अछि। नवरात्रमे एतय देशभरि सँ श्रद्धालु सभ अबैत छथि। देवीक मंदिरक वर्तमान स्वरूप 1735 ईमे रानी पद्मावती द्वारा प्रदत्त कयल गेल। ई मंदिर आजुक दिन बिहार पर्यटन विभागक अग्रणी सूचिमे अछि।

मंडन मिश्र धाम, महिषी

भगवती उग्रताराक मंदिर सँ कनिके हटि कें मंडन मिश्र धाम अछि। आदि गुरु शंकराचार्य जखन अद्वैत वेदान्तक प्रचारमे देशभरिमे भ्रमण पर छलाह त' ओ महिषीमे रह' बला विद्वान् मंडन मिश्रक नाम सँ परिचित भेलथि। आचार्य मंडन मिश्र मीमांसाक प्रवक्ता छलथिन्ह। अद्वैत वेदान्त आ मीमांसक वाद- विवादमे कहल जायत अछि जे आचार्य मंडन मिश्रक पराजय भेल छलनि, मुदा हुनक भार्या आ प्रकांड विदुषी अपन पतिक पराजयक उपरान्त शंकराचार्यकें हुनका सँ वाद विवाद कर' लेल आमंत्रित केलथि जाहि लेल शंकराचार्यजी तैयार भ' गेलाह आ ओहि विवादमे "काम शास्त्र" पर चर्चोपरांत शंकराचार्यजी पराजित भेलाह कियैकि ब्रह्मचारी होम' क' कारणें ओ एहि विषय सँ पूर्णत: अनभिज्ञ छलाह। हालांकि कहल जायत अछि जे शंकराचार्यजी बादमे राजा शिवसिंहक शरीरमे प्रवेश क' काम शास्त्रक ज्ञान अर्जित केलनि आ बादमे विदुषी भारती कें पराजित होम' पड़लनि। एकर बाद आचार्य मंडन मिश्र सन्यासी धर्म अपनाकें शंकराचार्यक शिष्यता स्वीकार केलनि। कहल जायत अछि जे महिषी गामक सुगा सभ सेहो संस्कृतमे संवाद करैत छल। उग्रतारा मंदिर जाय बला श्रद्धालु सभ मंडन मिश्र धाम जरूर जायत छथि।

चौंसठ योगिनी मंदिर, सहरसा

आध्यात्मिक पर्यटन कें विकसित करहि लेल सहरसामे एकटा विशाल मंदिर प्रांगण केर निर्माण कराओल गेल आ एहि मंदिर परियोजना कें मत्स्यगंधा परियोजना सेहो कहल जायत अछि। लाल संगमरमर सँ बनल देवी रक्त काली कें मंदिर मंदिर प्रांगणक मध्यमे स्थित अछि, जकर एक दिश पहाड़ पर वीणामे हंसवाहिनी सरस्वतीजीक मंदिर अछि, दोसर दिश बाबा लक्ष्मीनाथ गोसाईक मंदिर अछि आ ठीक आगाँमे पिरामिड आकारक मंदिरमे चौंसठ योगिनिक मंदिर अछि। चौंसठ योगिनी देवी कालिक अवतार मानल जायत छथि आ दोसर मतक अनुसार ई सभ माँ पार्वतीक सखी थिकीह। विद्वान् सभक मानब अछि जे चौसठो देवी आद्या शक्ति कालीक भिन्न-भिन्न अवतारी अंश छथि, जिनक तंत्र आ योग विद्या सँ घनिष्ठ संबंध अछि।

मत्स्यगंधा मंदिरक सभसँ बेसी जे आकर्षण अछि से अछि मंदिरक पाछांमे स्थित विशाल झील जकरामे पर्यटक सभक लेल नौकायानक व्यवस्था अछि। झीलक कातमे पर्यटन विभाग द्वारा आलिशान होटलक निर्माण कराओल गेल अछि, एक कातमे संग्रहालय सेहो अछि। झीलक कात-कात सदाबहार वृक्ष सभ अछि आ यक्ष-यक्षिणीक मूर्ति प्रतिष्ठापित अछि। पर्यटक मंदिर दर्शन कें बाद नौकायान आ प्राकृतिक वातावारणमे टहल' कें मजा सेहो लैत छथि। धीरे-धीरे ई झील आ मंदिर दूर-दूर धरि प्रसिद्धि प्राप्त क' रहल अछि, युवा सभक बीच विशेष आकर्षणक केंद्र बनि रहल अछि।

कथा सभक अनुसार राजा दशरथक पुत्रेष्टि यज्ञ एहि मंदिरमे भेल छल, श्रृंगेरी ऋषिक कारणें जगहक नाम कालांतरमे श्रृंगेश्वर सँ सिंहेश्वर भ' गेल। अभियंता सभक अनुसारें मंदिरक शिवलिंग कोनो पहाड़ पर स्थित अछि कियैकि खुदाईक दौरान हुनका सभकें कोनो ठोस चीजक होबाक प्रमाण भेटल छल।

सिंहेश्वर स्थान, मधेपुरा

मधेपुरामे स्थित बाबा सिंहेश्वर नाथक प्रसिद्धि दूर-दूर तक अछि। मानल जायत अछि जे ई मंदिरक निर्माण स्वयं विष्णु भगवान केलथि। एकबेर महादेव हिरण रूपमे धरती पर अवतरित भेलाह, हुनका वापस स्वर्गलोक ल' जयबा लेल समस्त भगवान संगे विष्णु भगवान सेहो अयला मुदा महादेव जाय सँ मना क' देलथि आ ओहि जगह पर स्थित भ' गेलाह, तकरे लेल विष्णु भगवान ओत्ते मंदिरक निर्माण केलथि। कथा सभक अनुसार राजा दशरथक पुत्रेष्टि यज्ञ एहि मंदिरमे भेल छल, श्रृंगेरी ऋषिक कारणें जगहक नाम कालांतरमे श्रृंगेश्वर सँ सिंहेश्वर भ' गेल। अभियंता सभक अनुसारें मंदिरक शिवलिंग कोनो पहाड़ पर स्थित अछि कियैकि खुदाईक दौरान हुनका सभकें कोनो ठोस चीजक होबाक प्रमाण भेटल छल। शायद अहि पहाड़क कारणें कोसीक प्रचंड विभीषिका कें बादो मंदिर हजारों वर्ष सँ सुरक्षित अछि। सावन मासमे एहि मंदिरमे लाखों श्रद्धालु अबैत छथि। बिहार पर्यटन विभाग ई मंदिर कें सीता सर्किट सँ जोड़बाक लक्ष्य रखने अछि।

भक्त प्रहलाद स्थान, बनमनखी

पूर्णिया जिला मुख्यालय सँ 40 किलोमीटर दूर बनमनखी प्रखंडक

सिकलीगढ़ गाममे प्रहलाद स्थान अछि जत' होलिका प्रहलाद कें ल' क' अग्निकुंडमे समा गेल छलथि। एहि स्थान पर आय धरि ओ स्तम्भ अछि, जाहि सँ हिरणकश्यपु कें वध करबा लेल भगवान नरसिंह अवतरित भेल छलाह। पौराणिक कथा के अनुसार एहि ठाम पर हिरणकश्यपुक किला छल। वर्तमानमे ओ स्तम्भ शीर्ष भाग सँ कनि झुकल अछि। कहल जायत अछि जे ई स्तम्भ कें कैक बेर तोड़बाक प्रयास कयल गेल मुदा ई नहि टूटल। एहि जगहक खुदाई सँ ढेर ऐतिहासिक चीज सभ प्राप्त भेल अछि। एहि स्तम्भ कें माणिक्य स्तम्भ कहल जायत अछि। भागवत पुराणक सप्तम स्कंध केर अष्टम अध्यायमे सेहो माणिक्य स्तम्भ स्थलक चर्चा अछि। ई स्तम्भ लाल ग्रेनाईट सँ बनल अछि।

उचैठ स्थान, मधुबनी

मधुबनी जिलाकें बेनीपट्टी अनुमंडल सँ चारि किलोमीटर कें दूरी पर उचैठ स्थान अवस्थित अछि। एहि मंदिरमे छिन्न मस्तिका माँ दुर्गा स्वयं प्रादुर्भावित छथि। प्राचीन कथा सभक अनुसार जखन कालिदास कें अपन पत्नी विद्युत्मा सँ अपमानित होम' पडल, तखन ओ उचैठ भगवती कें शरणमे अयलाह आ भगवती हुनका सँ खुश भ' आशीर्वाद देलीह जे, आई राति भरिमे जतेक किताब कें तों स्पर्श क' लेबह सभ तोरा कंठस्थ भ' जेतह। एहि तरहक वरदान द' भगवती अंतर्ध्यान भ' गेलीह। माँ कें आशीर्वाद सँ कालिदास भारतवर्षमे अद्वितीय विद्वान् भेलाह। आश्विन नवरात्रमे एहि स्थान पर विशेष उत्सव मनाओल जायत अछि।

एहि आलेखमे मुख्यरूप सँ भारतीय गणराज्यक मिथिला क्षेत्रमे स्थित धार्मिक पर्यटन स्थल सभक संक्षिप्त जानकारी देबाक प्रयास कयल गेल अछि। अहि मंदिर आ स्थल सभक अलावा किछु

पूर्णिया जिला मुख्यालय सँ 40 किलोमीटर दूर बनमनखी प्रखंडक सिकलीगढ़ गाममे प्रहलाद स्थान अछि जत' होलिका प्रहलाद कें ल' क' अग्निकुंडमे समा गेल छलथि। एहि स्थान पर आय धरि ओ स्तम्भ अछि, जाहि सँ हिरणकश्यपु कें वध करबा लेल भगवान नरसिंह अवतरित भेल छलाह। पौराणिक कथा के अनुसार एहि जगह पर हिरणकश्यपुक किला छल। वर्तमानमे ओ स्तम्भ शीर्ष भाग सँ कनी झुकल अछि, कहल जायत अछि जे ई स्तम्भ कें कैक बेर तोड़बाक प्रयास कयल गेल मुदा ई नहि टूटल।

अन्य धार्मिक स्थल जेना मधुबनिक बालीराजगढ़, कल्यानेश्वर, कपिलेश्वर स्थान, मुज़फ्फरपुरक चामुंडा स्थान, सहरसाक लक्ष्मीनाथ गोसाईंक मंदिर, पूर्णियाक बाबा बरुनेश्वर स्थान आदि बड़ महत्व राखैत अछि। दरभंगा केर कामेश्वर सिंह विश्वविद्यालय आ मधुबनी केर जितवारपुर गाम धार्मिक पर्यटन स्थल सँ इतर घुमबाक जगह अछि। मिथिलाक सांस्कृतिक-सामजिक विरासत एहेन भव्य आ विराट अछि जे एक-एक स्थल पर एकटा आलेख लिखल जा सकैत अछि। भारत सरकार आ बिहार सरकारक सहयोग सँ मिथिलाक पर्यटन स्थल सभकें विकसित करबाक जे प्रयास शुरू कयल गेल अछि, से निश्चित रूपेण प्रशंसनीय थिक। सरकारक प्रयास कें अलावा सभ मैथिल-मैथिलानी केर सेहो ई दायित्व अछि जे एहि पर्यटन स्थल सभकें साफ़-सुथरा रखबामे सहयोगी बनि, एकर विकासक लेल तन-मन-धन सँ यथा सामर्थ्य सहयोग करि आ अपन मंदिर सबकें प्रति लोक सभक बीच जागरूकता उत्पन्न करि। जँ हम सभ गोटा एतबा काज क' सकी त' राम जन्म भूमि सदृश्य सीता जन्म भूमि सेहो विश्वक मानचित्र पर एकटा अवश्य घूम' बला जगह बनि जायत। ■

सन्दर्भ

1. **यात्री, बैद्यानाथ मिश्र:** चित्रा "माँ मिथिले"
2. **दास लाल:** रामेश्वर चरित मिथिला रामायण, बाल काण्ड।
3. **अंतिम रिपोर्ट निल्सन:** "स्टडी ऑन आइडेंटिफिकेशन ऑफ़ हिन्दू पिलग्रिमेज सर्किट लिंकिंग वेरियस साइट्स इन नेपाल विथ बॉर्डरिंग स्टेट्स ऑफ़ इडिया", प्रकाशित फरवरी 2016
4. **रिपोर्ट, पर्यटन तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार:** "फाइनल रिपोर्ट ओन 20 इयर्स पर्सपेक्टिव टूरिज्म प्लान फॉर द स्टेट ऑफ़ बिहार", प्रकाशित मार्च 2003
5. **रिपोर्ट, अतुल्य भारत:** पर्यटन तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, "बिहार्स एनुअल टूरिस्ट स्टेटिस्टिक्स रिपोर्ट, जनवरी 2005 टू दिसंबर 2005" प्रकाशित 2005
6. **ट्रेवल न्यूज़ इंडिया:** " बिहार रजिस्टर्ड रिकॉर्ड टूरिस्ट अर्रिवल इन 2016", प्रकाशित 21 जनवरी 2017
7. **दैनिक जागरण:** बिहार का सिंहेश्वर स्थान: भगवान विष्णु ने स्वयं बनाया था महादेव का मंदिर, 7 अगस्त 2017
8. **मिथिला कनेक्ट लोकल:** " सीता की वास्तविक जन्मभूमि सीतामढ़ी है या पुनौरा?", प्रकाशित 8 जून 2015
9. **रमानी ब्लॉग:** "सीताज बिर्थ प्लेस पुनौरा धाम सीतामढ़ी हलेश्वरनाथ"।
10. **झा रमण:** ब्लॉग मिथिला धाम, "उच्चैठ", प्रकाशित 2016
11. **पाण्डेय, प्रमोद:** जागरण, "तंत्र साधना के लिए विख्यात है महिषी का उग्रतारा मंदिर" प्रकाशित 4 अक्टूबर 2016
12. **बी एन एन न्यूज़:** "पुनौरा धाम, सीतामढ़ी, जानकी जन्म स्थल, प्रकाशित 2015
13. **नमस्ते पोर्टल:** पुनौरा धाम: यहीं हुआ था राजा जनक की पुत्री माता सीता का जन्म।
14. **शर्मा राजीव:** पत्रिका पोर्टल, "यहाँ भस्म हुई थी होलिका, विष्णु ने बचाए थे भक्त प्रहलाद के प्राण"।

मिथिलाक लोक, सीता ओ जनकपुर परिक्रमा

✍ मिथिलेश कुमार झा

मिथिलेश कुमार झा इतिहाससँ स्नातकोत्तर आ बी.एड. कएला केर बाद संप्रति कोलकाताक सारस्वत क्षत्रिय विद्यालयमे प्राथमिक शिक्षक छथि।

कविता, कथा, निबंध, लघुकथा, बालसाहित्य आदिक सृजनमे लगातार संलग्न छथि।

प्रकाशित कृति :
टीस (लघुकथा संग्रह),
ओ सोना आखर (बाल कविता संग्रह)

प्रकाशनाधीन :
जाबत धरि सपना अछि शेष (कविता संग्रह)

अनका लए सीता जगतजननी छथि तऽ रहथु, धरि मिथिलाक तऽ बेटिए छथिन। आ तैं हुनका प्रति एकटा विशिष्ट स्नेह मिथिलाक जन-जनमे पाओल जाइछ। आओर जनबाक हो तऽ कोनहु कुटी, स्थान, महक भ्रमण; बियाह-पंचमीमे दाइ-माइ सभक यात्रा-पथक अवलोकन; बेटीक द्विरागमन भलक समदाउनिक प्रवण क' आउ अथवा कोनो कीर्तन-मंडली लग बैसि जाउ - *अपन किशोरी जी कें टहल बजेबै / हे हम मिथिलेमे रहबै।*

मिथिलामे राधाकृष्णक भक्ति-परंपरासँ बेसि पुरान अछि सीतारामक भक्ति-परंपरा। एहि भक्ति-परंपराक मारिते रास, कुटी सौंसे मिथिलामे पसरल अछि। एहि सभ ठाम सीताक संगे राम आ सेवक हनुमानक पूजा ओ भक्तिक दीर्घ परंपरा अछि।

सीतासँ संबंधित विभिन्न खिस्सा-पिहानी सेहो घरे-घरे कहल-सुनल जाइत रहल अछि। मिथिलामे एखनो सिया सन धियाक कल्पना सभ माए-बापक मनमे रहैत छैक। एहि ठामक लोक ई मानैत अछि जे सीता अपन मूल सरूपमे एतहि रहि गेल रहथि।

सीताक बिना राम अन्यायी रावणाक वध नहि क' सकैत छलाह। माने, सीताक बिना रामक मोजर नहि आ से सर्वविदित अछि। मुदा ताहि सीताक मर्यादा राम नहि बुझलनि। आ ताहि दुखे मिथिलाक लोक एखनो पच्छिम दिस बेटीक बियाह नहि करय चाहैत अछि। मिथिलाक लोकमे तकर रोष एखनो छै।

कहल जा सकैए जे सीता एहि ठामक कण-कणमे आ मन-मनमे विद्यमान छथि। सीताक अवतरण दिवस (जानकी नओमी, बैसाख शुक्ल नओमी) रामनओमी जकाँ लोकप्रिय नहि अछि से सत्य मुदा, सीतासँ संबंधित स्थल सभक तीर्थाटन ओ दर्शन बेस लोकप्रिय ओ प्रचलित रहल अछि।

सीतासँ संबंधित स्थल सभमे प्रमुख अछि पुनौरा (जन्मस्थलक रूपें मान्य), सीतामढ़ी, फुलहर/गिरिजा स्थान (एहिठाँ फूल लोढ़य आ गिरिजा पूजय अबैत छली), धनुषा (एहिठाँ धनुषयज्ञ भेल रहय), जनकपुर (जनकक राजधानीक रूपें प्रसिद्ध), सीता समाहित स्थल (सीतामढ़ीवा—इलाहाबाद/प्रयाग, संत रविदासनगर जिला, उत्तर प्रदेश - सीता एही ठाम धरतीमे समा गेल रहथि), अयोध्या आदि। एहि संगे सीताकुंड नामे कैकटा कुंड या सरोवर विभिन्न ठाम अवस्थित अछि जकर संबंध सीतासँ जोड़ल जाइत अछि। एहिमे सीताकुंड (पुनौरा), सीताकुंड (मुंगेर), सीताकुंड (मंदारपर्वत, भागलपुर), सीताकुंड (मोतीहारी), सीताकुंड (बिंध्याचल, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश), सीताकुंड (चटगाँव, बांगलादेश) आदि प्रमुख अछि।

संपर्क : *सारस्वत क्षत्रीय विद्यालय, 4, बर्मन स्ट्रीट, कोलकाता-700007*
Mob: 9681850557

एहिठाम हम दू टा सीताकुंडक उल्लेख विशेष रूपे करय चाहैत छी। पहिल- मुंगेरक सीताकुंड। एहन कहल जाइ छै जे जखन देवतागण सीताक पूजा स्वीकार नहि कएलनि तऽ ओ अग्निपरीक्षा देबय लेल पुन: अग्निकुंडमे प्रवेश कयलनि। प्रवेश करितहि अग्नि मिझा गेल आ चट् दऽ पानिक एकटा सीता बहार भेल। इएह थिक सीताकुंड।

दोसर, बंगलादेशक चटगाँव जिलान्तर्गत चन्द्रनाथ पहाड़ पर स्थित सीताकुंड। एहिठाम सीताकुंड होयब सुखद आश्चर्य थिक। एहि पहाड़ पर ओना चारि टा कुंड भिन्न-भिन्न देवगणक नाम पर आओर अछि। किंतु सीताकुंडक महत्व बेसी। आ तैं एहि पूरा क्षेत्रहिक नाम पड़ि गेल अछि सीताकुंड। सीताकुंड चटगांव जिलाक उपजिला सेहो अछि - अपना सभक प्रखंड जकाँ। सीताकुंडक एहि पहाड़ पर सतीक दहिना बांहि खसल रहनि। आ तैं ई एकाबन सिद्ध शक्तिपीठमे सँ एक अछि - चट्टल शक्तिपीठ। एहि ठामक शक्तिक नाम 'भवानी' ओ शिवक नाम 'चन्द्रशेखर' छनि। शक्ति ओ शिवक भव्य मंदिर छनि। शक्तिपीठ होयबाक कारणे सेहो एहि सीताकुंडक विशिष्ट महत्व अछि।

हम पुन: मिथिला अबैत छी। मिथिलामे नवरात्रा, बियाहपंचमी, रामनवमी, जानकीनवमी आदिक अवसर पर पुनौरा फुलहर, धनुषा, जनकपुर, सीताकुंड (मुंगेर ओ मोतिहारी) आदिमे तीर्थ लेल जुटान होइत अछि। मुदा, जनकपुर महल सर्वाधिक प्रसिद्ध अछि। एहि ठाम जानकीजीक विशाल ओ भव्य मंदिरक संगहि अनेको दर्शनीय स्थल अछि। आन-आन अवसरक मेला ओ दर्शनक अतिरिक्त जनकपुरक चौरासी कोस परिक्रमा सेहो बड़ प्रसिद्ध अछि। ई परिक्रमा भक्त लोकनि जानकी जीक डोलाक संगे करैत छथि। एहिमे भक्त, साधु ओ गृहस्थ मनोयोगपूर्वक सम्मिलित होइत छथि।

जनकपुर-परिक्रमा जनकपुरकेँ केन्द्रमे राखि चौरासी कोसक परिक्रमा अछि। सनतान परंपरामे चौरासी लाख जीवक योनिसँ आत्माक मुक्तिक निमित्त चौरासी कोसक तीर्थ-परिक्रमा कएल जाइछ। जनकपुर परिक्रमाक ई चौरासी कोसक बाट पंद्रह दिनमे पूर्ण कएल जाइछ। एहि बाटकेँ अंतिम पांच दिनमे, अंतिम तीन दिनमे अथक डाकबम अहाँ अंतिम दिन चौबीस घंटामे पूर्ण करबाक रेबाज सेहो अछि। एहि बाटक प्राय: 110 किलोमीटर नेपालीय मिथिलामे तथा प्राय: 23 किलोमीटर भारतीय मिथिलामे पड़ैत अछि।

जनकपुर-परिक्रमाक आरंभ फागुन इजोरिया पड़िबाक दिन कल्याणेश्वर स्थान (भारत) सँ होइत अछि। एकदिन पहिने कचुरी ओ हनुमाननगर (नेपाल) सँ सीताराम ओ मिथिलाविहारीक डोला एहिठां पहुंचि जाइत अछि। कल्याणेश्वर सँ दुनू डोला किछु समयक अंतराल पर पहिल रातिक विश्रामस्थल गिरिजास्थान (फुलहर) लेल विदा होइत अछि। डोला संगे परिक्रमामे सम्मिलित भेनिहार साधु, भक्त, गृहस्थ लोकनि स्थान-पूजाक बाद प्रस्थान चेन्ह दऽ विदा होइ अछि। बाटमे भजन-कीर्तन, गीत-नाद होइत चलै छैक। डोलामे कान्ह लगायब पुण्यक काज मानल जाइत अछि। परिक्रमा-पथक ग्रामवासी लोकनि एहि तीर्थयात्री सभक सेवा लए प्रस्तुत रहैत छथि। चाह, जल, पनपियाइ, भोजन, विश्राम आदिक व्यवस्था अपन सामर्थ्यक अनुसारे सभ करैत छथि। सेवाक अवसर पाबि अपनाकेँ धन्य बुझैत छथि। दोसर रातिक विश्रामस्थल मटिहानी (नेपाल) अछि आ तकरा बादक स्थल सभ क्रमश: जलेश्वर, मरई, ध्रुवकुण्ड, कंचनवन, तीरेश्वरनाथ महादेव, पर्वता, धनुषधाम, सतोखर धाम, औरही, करुना, बिसौल (भारत) आ पुन: कल्याणेश्वर। एहिठाम यात्री लोकनि अपन-अपन प्रस्थान-चेन्हकेँ मेटा जनकपुरक लेल प्रस्थान करैत छथि। जनकपुरमे पाँच कोसक अंतर्गृह परिक्रमा होइत अछि। एहिमे लोक अहलभोरसँ मुन्हरि साँझ धरि सम्मिलित होइत अछि।

अधिकांश यात्री प्रत्येक रात्रि विश्रामस्थल पर भोजन बनबैत छथि आ ताहि लए आवश्यक सरंजाम संगे उघैत छथि। हेंजगर यात्री सामान उघबा लए गाड़ी क' लैत छथि। परिक्रमा-यात्रा संगे छोट-छीन मेला चलैत रहैत अछि। बाट आ विश्रामक स्थल रामनगर ओ भक्तिपूर्ण भऽ उठैत अछि।

एहि परिक्रमा ओ श्रद्धालु यात्री लेल नेपाल अथवा भारत सरकारक व्यवस्था नगण्य रहैत अछि। समस्त व्यवस्था मंदिर, संस्था, बाटक ग्रामीण ओ स्वयं तीर्थयात्री सभक रहैत अछि।

मिथिलाक सामाजिक ओ सांस्कृतिक एकताक वास्ते जनकपुर-परिक्रमा बेस महत्वपूर्ण अछि। एहि परिक्रमाक बाटे मिथिलाक एकटा पैघ भू-क्षेत्रक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक ओ भौगोलिक ज्ञान अर्जित कएल जा सकैए ओ लोकजीवनक सहज अवलोकन ओ अन्वेषण कएल जा सकैए। दू देशमे बाँटल मिथिलाक हेतु एहि परिक्रमाक महत्व आओर बेसी अछि। समस्त मैथिलकेँ एक बेर एहिमे अवश्य भाग लेबाक चाही।

एहि तरहें हमरा लोकनि देखैत छी जे सीता विभिन्न तरहें जन-मनमे व्याप्त छथि। कीर्तन, पारंपरिक गीत, सीतारामक भक्ति परंपरा, तीर्थ ओ परिक्रमाक संगहि मैथिलीमे लिखित जानकी रामायण, सीतायन, लवहरि-कुशहरि आदि ग्रंथ-पोथीसँ सेहो पुष्ट होइत अछि। ■

आजुक सीता

✍ अजित झा

लेखक युवा पत्रकार छथि। दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर अखबार में काज केलाक बाद संप्रति आउटलुक (हिन्दी) पत्रिकामे मुख्य उपसंपादक छथि।

✍ अनुवाद: रौशन झा

पुराण चरित्र सभ पर लिखबा आ ओकरा नव दृष्टि सँ देखबा लेल बहुत बेसी अध्ययन सबहक जरूरत पड़ैत छैक। खासकय, जँ चरित्र सीता सन हुअय त' आओर जरूरी भ' जाइत अछि। रामायणमे सीताक स्त्री चरित्र केँ आदर्शक रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। बावजूद एकर, मिथिला छोड़ि (जतय ओ घट-घटमे बसैत छथि) सीता आ हुनकर गाथा बड़ कम लिखल-पढ़ल वा सुनल गेल अछि।

हालमे अमीश आ देवदत्त पटनायक सीताक छवि केँ अलग ढंग सँ गढ़ने छथि। अमीष के 'सीता- मिथिला के योद्धा' बताबैत अछि कि आदर्श कनिया के सीमा सबमे बान्हि कय देखब सीता के चरित्र संग इंसाफ नहि अछि। ओ अहि सबसं बढ़ि कय एकटा कुशल योद्धा आ प्रशासक सेहो छलीह, जे पहिने हुनक पिता जनक आ बादमे राम के समर्थ बनाबैत अछि। देवदत्त अपन पोथी सीता-रामयण केर सचित्र पुनर्कथनमे सीता केर समूचा जीवनकाल केँ सात खंडमे विस्तार देलनि अछि। हुनकर जन्म कोना भेल, बियाह, बनवास, अपहरण, बाट जोहब, मुक्ति आ स्वतंत्रता सन सभ घटना सब केँ ओ बेसी तथ्य आ तर्कक संग रखलनि अछि।

देवदत्तक पोथी सीताक परिकल्पना करैत राम धरि पहुंचैत अछि। पिता जनक, जे उपनिषदमे वर्णित ऋषि सबहक आतिथ्य निभौने छलाह, के संग हुनकर नेनपन बीतल। पूर्ण यौवन भेलाक उपरांतो, पति जिनका संग जीवन के 14 बरख एकटा ब्रह्मचारी जकां बितेबाक छल - के संग हुनकर वन जायब। लंका के स्त्रीगण सबहक हुनकर मेलजोल। ओकरा सबहक आपसमे बांटल गेल व्यंजन विधि आ नाना प्रकारक भाव। अयोध्या माता (धरती) आ बहिन सब (गाछ-वृक्ष) संग हुनकर संबंध। अयोध्या के आत्मसंयमी राजकुमार केँ देवत्वक दिस ल' जाइत, स्वच्छ काली आ सौम्य स्त्री के रूपमे हुनकर भूमिका।

रामायणक कतेको माध्यम सब सँ आ लोककथा सबसं देवदत्त जे सनगर आ विलक्षण प्रसंग सब ताकलाह हूं, ओ सब सीता के चरित्र के रोचकता आर बढ़ा दैत अछि। अपन कथा के प्रामाणिक आ दुर्लभ तथ्य सब सँ एहि तरहें संजोलनि अछि कि बुझाइत अछि कि रामायण केँ एकटा खाली महाकाव्य नहि अपितु एकटा भारतीय चिंतन परंपरा जकां देखबाक चाही।

पौराणिक चरित्र सबके नव तरीकां सँ देखब कतेक मोश्किल आ जरूरी अछि एकरा देवदत्त के कहल सँ बूझल जा सकैत अछि। ओ कहैत छथि, 'बहुत कम विद्वान भारतीय मानसिकता के बीच, एहि ढाई हजार वर्ष पुरना कथा के प्रभाव बुझवामे सफल रहलाह, खासकय ओ जे महाकाव्य केँ अतार्किक

संपर्क : 128/ए1, मोहम्मदपुर, नजदीक आरकेपुरम, सेक्टर-1, दिल्ली-110066
Email : journalist.ajitk@gmail.com

मानैत छथि मुदा आधुनिक साधन के एहन साधन मानैत छथि, जाहि सँ लोक के विवेकी बनाओल जा सकैत अछि।' अपन पोथीमे सीता आ हनुमान केर संवाद केँ बड़ दिलचस्प ढंग सँ प्रस्तुत कयने छथि।

'नर आ विचार' के विषयमे सीता कहैत छथिन्ह जे विचारे अछि जे नर केँ नारायण तक ल' जाइत अछि आ हनुमान पुछैत छथि जे नारायण के छथि?

सीताः निद्रालीन विष्णु, हमर मानवीय संभावना जे हरदम पुष्पित हेबाक प्रतीक्षा करैत रहैत अछि।

हनुमानः ई मानवीय संभावना की थिक?

सीताः संसारक आन व्यक्तिक दृष्टिकोण देखब आ ओकरा सँ सार्थकता पायब।

रामायणमे नुकायल इएह मानवीय संभावना ओकर सार्थकता छी।

एक ठाम लिखैत छथि-

रथ नगर सँ बहुत दूर, वन केँ बीचोबीच जा केँ ठमकि गेल। दमकैत सीता, गाछ-वृक्ष दिस जेबा लेल तत्पर भेलीह। सारथी लक्ष्मण अपन ठाम पर स्थिर भेल बैसल रहलाह। सीता केँ लगलनि जेना जे ओ किछु कहय चाहैत छथि आ ओ ओतहिये ठार भए गेलीह। लक्ष्मण अंततोगत्वा अपन गप कहलाह, आंखि धरतीमे गड़ल छल, 'अहांक पति, हमर जेठ भाय, अयोध्या नरेश राम, अहांक बताबय चाहैत छथि जे नगरमे चारू कात अफवाह पसरल जा रहल अछि। अहांक प्रतिष्ठा पर प्रश्नचिन्ह लागि गेल अछि। नियम साफ छै। एकटा राजाक कनिया केँ सभ तरहें संशय सँ ऊपर रहबाक चाही। इएह कारण अछि जे रघुकुल केर वंशज अहां केँ आदेश देलनि अछि जे अहां हुनका, हुनकर महल आ हुनकर नगरी सँ दूर रहि। अहां अपना मन सँ कतहु जयबा लेल स्वतंत्र छी। मुदा अहां ककरो ई नहि कहि सकैत छी जे अहां श्रीराम के रानी रहि।'

लक्ष्मणक थरथराइत ठोर केँ सीता देखलीह। ओ हुनकर ग्लानि आ तामस केँ अनुभव कय रहल छलीह। ओ हुनका लग जाके बोल-भरोस देबय चाहैत छलीह, मुदा कोनहुना ओ स्वयंकेँ सम्हारली।

'अहां केँ बुझाइत अहि जे राम अपन सीता के त्यागि देलनि छथि, छैक न?'

सीता शालीनता सँ पुछलनि।

मुदा ओ एना नहि कयने छथि। ओ एना नहि कय सकैत छथि।

ओ भगवान छथि - ओ कखनहु ककरो त्याग नहि करैत छथि।

आ हम भगवती छी - किओ हमर त्याग नहि कय सकैत अछि।'

असमंजसमे पड़ल लक्ष्मण अयोध्या दिस घुरि गेलाह। सीता वनमे मुसकौली आ ओ अपन केस केँ खोलि देलीह।

तुलसीदासक रामायणमे सेहो सीताक चित्रण एकटा योद्धाक रूपमे अछि। ओ युद्ध नहि करैत छलीह मुदा राम केँ निर्णय सबमे हुनकर प्रभाव रहैत छल। सीता, राम केँ छाया मात्र नहि भ' समर्थ, विवेकशील आ तेजस्विनी स्त्री जकां रामचरितमानसमे वर्णित भेली। कठिन परिस्थितिमे सीता अपनहि सँ निर्णय लेलीह। तुलसीदासक रामायणमे जखन राम केँ वनवास देल जाइत अछि त' सीता सेहो फैसला करैत छथि कि ओ अपन पतिक संग 14 सालक वनवास पर जयतीह। राम बुझेबाक बड़ कोशिश करैत छथि, मुदा सीता अपन फैसला पर अडिग रहैत छथि आ अपन तर्क सबसं अपन बात केँ सही साबित करैत छथि।

अहिना अमीश के पोथी सेहो सीताक चरित्र केँ एकटा नव विस्तार दैत अछि। हम सीता केँ एकटा आदर्श स्त्री जकां देखैत छी। मुदा हुनकर आदर्श की छल? पतिव्रता होयब, सतीत्व सँ भरलपूरल रहब, पतिक साथ बोन जायब, रावणक लंकामे रहैत रामक जप करब, घुरि केँ अयला पर अग्निपरीक्षा देब आ राम के उत्तराधिकारी दय धरतीमे समा गेनाइ। रामायण आ लोककथा सबहक एहि सूत्र सबकेँ अमीश शीर्षासन करा दैत छथि। हुनकर सीता वीरांगना छथि। बुधियार सेहो। जे प्रधानमंत्रीक रूपमे अपन दार्शनिक पिता जनक केँ कमजोर साम्राज्य मिथिला केँ दुरुस्त करैत छथि। स्वयंवर केँ सभ विधान अपनहि रचैत छथि। राम के एहि विचार पर सहज करैत छथिन्ह आ एकदम सँ प्रतिकूल स्थिति रहलो पर साहस आ संयम नहि डगमगा दैत छथिन्ह। अमीश केँ सीता कोनो कमजोर स्त्री नहि जकरा रावण सन एकटा आदमी हैर लिए। अमीश के मुताबिक हुनका करीब एक सय आदमी हरबा लेल अबैत अछि। आ असगर सीता नुकाइत नहि छथि। ओकरा सँ लड़ैत छथि। लोक बेसी रहबाक चलते ओ हारि जाइत छथि आ रावण हुनका उठा केँ ल' जयबामे सफल भ' जाइत अछि।

तुलसीदासक रामायणमे सेहो सीताक चित्रण एकटा योद्धाक रूपमे अछि। ओ युद्ध नहि करैत छलीह मुदा राम केँ निर्णय सबमे हुनकर प्रभाव रहैत छल। सीता, राम केँ छाया मात्र नहि भ' समर्थ, विवेकशील आ तेजस्विनी स्त्री जकां रामचरितमानसमे वर्णित भेली। कठिन परिस्थितिमे सीता अपनहि सँ निर्णय लेलीह। तुलसीदासक रामायणमे जखन राम केँ वनवास देल जाइत अछि त' सीता सेहो फैसला

करैत छथि कि ओ अपन पतिक संग 14 सालक वनवास पर जयतीह। राम बुझेबाक बड़ कोशिश करैत छथि, मुदा सीता अपन फैसला पर अडिग रहैत छथि आ अपन तर्क सबसं अपन बात केँ सही साबित करैत छथि। सीता केँ रामक संग वनवास जयबा सँ स्वयं पिता जनक सेहो नहि रोकि पाबैत छथि। आ ठीक एहने विवेक आ शौर्यक उदाहरण ओ लक्ष्मण रेखा पार करवाक प्रकरणमे सेहो दैत छथि।

पौराणिक कथा सबमे हरदम ओहि समयक सामाजिक, प्रशासनिक कुरीति सबहक वर्णन होइत अछि। रामचरित मानसमे एकरा खूब नीक जकां देखाओल गेल अछि। सीताक जन्मक प्रसंग, वनवास सँ घुरलाक बाद अग्निपरीक्षा आ फेर महलक त्याग क' बेटा सबहक संग एकांतमे जीवन व्यतीत करबाकक फैसला तखुनका समय सबहक समस्या सब केँ उजागर करैत अछि आ संगहि सीता केँ एकटा योद्धा जकां स्थापित करैत अछि। सीताक अपहरण आ रावण वध सँ तुलसीदास स्त्री के मर्यादा के आओर प्रतिष्ठित कयलनि आ ई संदेश देलनि कि स्त्री केँ प्रतिष्ठा समूचा समाज केँ प्रतिष्ठा अछि।

तुलसी रामायण सँ करीब 2000 वर्ष पूर्व वाल्मीकि द्वारा लिखल गेल रामायणमे सीताक वर्णन सेहो सशक्त तरीका सँ अछि। वाल्मीकि रामायणक उत्तर कांडक सत्रहम सर्गमे सीताक बारेमे विवरण भेटैत अछि, एहि विवरणमे बताओल गेल अछि जे एकमात्र सीताक अपहरणक चलते ही रामक हाथ सँ रावणक संहार भेल छल।

वाल्मीकि रामायणमे सीता बुधियार होयबाक संगहि स्वाभिमानी, निर्भय आ स्पष्ट-वक्ता छथि। अयोध्याकांडमे जखन राम हुनका वन ल' जेबाक विरोध करैत छथि त' सीता अपन पक्ष

निश्चितरूपें, सीता योद्धा छलीह। अलग-अलग रामायण सेहो एकर पुष्टि करैत अछि। मुदा, सीता केँ बाहुबली जकां किओ आर नहि पेश कयलाह जेना अमीष कयलनि छथि। हुनकर किताबक मुखपृष्ठ पर सीता केँ कोनो देवी केँ जकां नहि, बल्कि एकटा योद्धा जकां चित्रित कयल गेल अछि, जे एसगर पुरुष सबहक झुंड सँ लड़ि रहल छथि।

राखैत कहैत छथि जे "जकरा चलते अहांक राज्याभिषेक रोकि देल गेल ओकर दासी बनिकय हम नहि रहब।" वाल्मीकिक रामायणमे एहि बातक जिक्र सेहो अछि जे सीता कतेको मुद्दा पर रामक सलाहकार सेहो छलीह। हुनका सही सलाह देबाक काज ओ सेहो कयलीह। वाल्मीकि रामायणमे सीता कतेको बेर वनवासक दौरान रामक हिंसा सँ रोकैत सेहो छथि। रावण वधक बाद अयोध्या घुरला पर सीताक अग्निपरीक्षा सँ गुजरय पड़ल आ फेर ओ ऋषि वाल्मीकिक आश्रममे शरण लेलीह।

निश्चितरूपें, सीता योद्धा छलीह। अलग-अलग रामायण सेहो एकर पुष्टि करैत अछि। मुदा, सीता केँ बाहुबली जकां किओ आर नहि पेश कयलाह जेना अमीष कयलनि छथि। हुनकर किताबक मुखपृष्ठ पर सीता केँ कोनो देवी केँ जकां नहि, बल्कि एकटा योद्धा जकां चित्रित कयल गेल अछि, जे एसगर पुरुष सबहक झुंड सँ लड़ि रहल छथिन्ह। सीता केँ एकटा योद्धा राजकुमारी जकां देखल गेल अछि, जे कोरामे लेल गेल एकटा बेटीक दर्जा सँ एकटा योद्धा राजकुमारी आ अंतमे देवी बनबा धरि कतेको चुनौती सबहक सामना करैत छथिन्ह। एकटा साक्षात्कारमे अमीश कहने छलाह जे सीताक जे रूप आई अपना समाजमे अछि ओ 1980 केँ दशकक टीवी धारावाहिक सब पर आधारित अछि जे बहुत हद तक रामचरित मानस पर आधारित अछि। हुनकर किताब सीता केँ बारेमे हमर धारणा एकदम सँ बदलि दैत अछि। ई पहिल किताब अछि जाहिमे भगवान राम महज एकटा सहायक के भूमिकामे छथि।

मिथिलामे सीता सन बेटी सभ बापक सेहंता रहैत अछि। ओना, विवाह पंचमीक दिन अपन बेटीक विवाह करबा सँ बचैत छथि। ई अहि चलते जे पौराणिक कथा सबमे मिथिला के एकटा सुकुमारी बेटीक विवाहक बाद डेग-डेग पर परीक्षा देबय पड़ल छल। मुदा, अमीशक सीता सुकुमारी बेटी आ जीवन पर्यंत दुख सँ जूझय वाली जानकी के छवि केँ खत्म कय दैत अछि। हमरा सोझां सीता केँ एकटा नव स्वरूप उभरि केँ आबैत अछि। एहने लड़ाकू, बाहुबली आ ज्ञानबली सब बेटी बनि जाय त' समस्या अपने आप खत्म भ' जायत जकरा सँ हमर समाज एखन जूझि रहल अछि।

तें, सीता केँ एहि तरहें देखब समयक जरूरत सेहो अछि। एहन समयमे जखन लैंगिक समानता केँ बात जोर-शोर सँ कयल जा रहल अछि, अमीश आ देवदत्तक सीता रुचि नहि जगाबैत अछि, मुदा भारतीय महिला सबहक चरित्र केँ नव विस्तार दैत अछि। बताबैत अछि जे लैंगिक असमानता सन समस्या कखनहु हमरा समाजक हिस्सा नहि रहल। जरूरत बस अतीतमे हुल्की मारबाक आ सीताक अपन जीवनमे हर पहलूमे उतारबाक अछि। ■

संदर्भः

1. सीताः मिथिला की योद्धा
2. सीताः रामायण का सचित्र पुनर्कथन, द क्विंट डॉट कॉम

मैथिली साहित्य उत्सव : किछु सुझाव

✍ रमण कुमार सिंह

दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्रमे तेसर मैथिली साहित्य उत्सव संपन्न भ' गेल। एहि सँ पहिने दू बेर पटनामे ई उत्सव मनाओल गेल छल, जाहिमे दुनू बेर किछु समयक लेल हमहूं भागीदारी कयने छलहूं। कम समय धरि भागीदारी करय कें कारण एकर तीन-पांच सँ अवगत नहि रहैत छलहूं। मुदा एहि बेर सेहो सभ जानि गेलहूं। एहि साहित्य उत्सव में देश भरि सँ बहुत रास साहित्यकार, साहित्यप्रेमी पहुंचल रहथि। सबसँ प्रसन्नता केर बात जे युवा वर्गक भागीदारी खूब देखाय पड़ल। जेना हरेक पैघ उत्सवमे होइत छैक, एहू उत्सवमे किछु अव्यवस्था देखाय पड़ल, जाहि सँ बचल जा सकैत छल। की सब त्रुटि रहल आ एकर जिम्मेदार के छलाह, एहि बात पर घमर्थन करय सँ नीक ई होइत जे एहि पर विचार कयल जाय जे आगू कोन-कोन चीज पर ध्यान देबाक जरूरति अछि, ताकि एकरा एगो तटस्थ (कोनो राजनीति सँ निरपेक्ष) विशुद्ध साहित्यिक उत्सव बनाओल जा सकय।

1. आयोजनमे सत्रक संख्या घटाओल जेबाक चाही आ सत्रक अवधि बढ़ाओल जयबाक चाही। ढेर रास सत्र राखने सँ चूं-चूं कें मोरब्बा बनबाक आशंका रहैत अछि। दूई कार्यक्रमक बीच कम सँ कम आधा घंटाक ब्रेक जरूर होयबाक चाही।

2. साहित्य उत्सवमे कोन-कोन कार्यक्रम होयत आ केकरा-केकरा ओहिमे भागीदारी लेल आमंत्रित कयल जाय, एकर निर्धारण किछु योग्य व्यक्ति कें समिति बनाकें करबाक चाही। एक गोटेके भरोसे ई पूरा दायित्व छोड़ि देने सँ किछु त्रुटि केर संभावना रहिते छैक।

3. सत्रमे भागीदारीक वितरण करैत काल कोशिश ई हेबाक चाही, जे बेसी सँ बेसी लोक कें सत्र सभमे भागीदारी के अवसर भेटय। ई नहि हेबाक चाही, जे मात्र किछु गोटे कें तीन-तीन आ चारि-चारि सत्रमे भागीदारी कें अवसर भेटय आ कोलकाता अथवा सहरसा सँ आबय बला लोक कें मात्र एकाध गोट कार्यक्रममे भागीदारी केर अवसर भेटय।

4. योग्य व्यक्ति कें सत्र सभमे भागीदारी कें अवसर भेटबाक चाही, एना नहि होयबाक चाही, जे जिनका किछु पढ़ल नहि हो, हुनका मात्र केकरो कहला पर कोनो सत्रमे वक्ता केर रूपमे आमंत्रित कयल जाय।

5. जँ केकरो कोनो सत्रमे वक्ता अथवा कोनो आन तरहें भागीदारी लेल मनोनीत कयल जाय, ते हुनका समय पर औपचारिक रूप सँ एकर सूचना आ आमंत्रण जरूर देल जयबाक चाही।

6. सत्रक रूपरेखामे बदलाव केर गुंजाइश राखल जयबाक चाही, ई नहि हेबाक चाही, जे कोनो सत्रमे अगर कोनो वक्ता नहि अयलाह त' हुनका स्थान पर ओहि सत्रमे कोनो आन उपलब्ध योग्य वक्ता के नहि राखल जायत। देशक संविधानोमे जरूरत पड़ला पर संशोधन होइत छैक, एतय त' मात्र कार्यक्रममे किछु बदलावक बात अछि।

7. कार्यक्रम कें सुचारू रूप सँ चलयबाक लेल समय-पालन निश्चित रूप सँ जरूरी होइत छैक, मुदा एकर मतलब ई नहि, जे कोनो जिज्ञासु अगर किछु प्रश्न पूछय चाहैत अछि, ते ओकरा खाली एहि दुआरे रोकि देल जाइ, जे नहि आब एक्को मिनट समय नहि अछि। साहित्यकार आ साहित्यप्रेमी सँ एतेक कठिन अनुशासनक अपेक्षा नहि कयल जा सकैत अछि। सुरक्षाबलक जवान आ साहित्यकारमे अंतर होइत छैक। साहित्यिक कार्यक्रममे कनी फ्लेक्सिब्लिटी जरूर हेबाक चाही।

8. कोशिश ई रहबाक चाही, जे साहित्यक सभ विधा पर विचार-विमर्श हुअय। विषय केंद्रित सत्र रहय त' बेस बढ़िया। उपन्यास, संस्मरण, जीवनी सन मैथिलीमे कम लिखल जाय बला विधा पर जोर जरूर देबाक चाही।

9. कवि सम्मेलनमे कवि सभक भीड़ घटेबाक चेष्टा कयल जयबाक चाही। किछुए विशिष्ट कवि कविता पढ़थि, मुदा रचना दमदार हुअय, तेकर ध्यान राखल जयबाक चाही।

10. कोनो संस्था सँ अगर सहयोग लेल जाय, ते ओकरा समक्ष पहिनहि स्पष्ट करि देबाक चाही, जे हम अपन फॉर्मेटमे बदलाव नहि करब। वित्तीय संसाधन खातिर कोनो संस्थाक समक्ष समर्पण करय सँ कार्यक्रमक गुणवत्ता प्रभावित होइत छैक।

11. मैथिली लेखक संघ कें एहि उत्सव कें नियमित आ सुचारू रूप सँ चलेबाक लेल एगो आर्थिक ढांचा तैयार करबाक कोशिश करबाक चाही आ उत्सवक आयोजन लेल कर्मठ लोकक एगो टीम तैयार करबाक चाही।

एहि बेरक साहित्य उत्सव कें देखि के जे हमरा मनमे किछु सुझाव आयल, तेकरा अपने सभक समक्ष राखलहुं अछि। हमर प्रयोजन केकरो दिस आंगुर उठायब नहि, बस सुधार अछि। एखन बस एतबे। जय मैथिली। ■

मो. 9711261789

नायिका रूपमे सीता : संक्षिप्त विश्लेषण

✍ नारायण झा

लेखक राष्ट्रीय माध्यमिक विद्यालय रहुआ-संग्राममे शिक्षक रूपमे सेवा दैत लेखन कार्यमे लागल छथि। दू गोट पोथी प्रकाशित छनि। पहिल पोथी "प्रतिवादी हम" कविता संग्रह पर साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2015 प्राप्त छनि। दोसर 2017 मे "अविरल-अविराम" (कविता संग्रह)। कविता, बाल कविता, आलेख लिखै संग गजल आ कथो पर काज क' रहल छथि।

नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी सँ एम.ए. मैथिलीमे गोल्ड मेडल प्राप्त आ मैथिलीसँ यूजीसी नेट परीक्षा सेहो उत्तीर्ण।

मिथिला अदौ काल सँ शक्ति आ शिवक उपासक रहल अछि। शाक्त भूमि मिथिला जानकीक प्राकट्य स्थली थिक। विदेह भूमि पर विदेह राज राजा जनक केँ मिथिलामे एहेन सौभाग्य भेटलनि जतए सीता सब बेटी पाबि अपनहुँ ओ धन्य भेल रहथि। एहि भूमि केँ पवित्र केलनि माँ जानकी। मिथिलामे प्राय: जानकी दू रूपमे जानल जाइत छथि। एक तँ ओ बेटी छथि तँ बेटीक रूपमे आ दोसर शक्तिस्वरूपा जानकीक रूपमे। जाहि शक्तिवती सीताक स्वयंवर लेल कतेको वीर आयल रहथि। अपन शक्तिक परिचय दैत अपन मुँह झाँपि घर घुरए पड़लनि। ओ सीता प्रतिदिन ओइ धनुष केँ उठा नीपैत छली अपन घर। ओतए राम सन दुलहा ओइ शिवक धनुष केँ उठौलनि आ राम संग विवाहक संयोग लागल। सीता नहि तँ राम कतए सँ?

जखन हम मैथिली साहित्य पर नजरि दैत छी तँ सीताक गुणगान हमरा बहुत रास काव्य - महाकाव्यमे भेटैत अछि। कविवर सीताराम झाक महाकाव्य "अम्बचरित" मे सीताक जन्म सँ लए केँ सीताक विवाह धरिक वर्णन नीक जकाँ कएल गेल अछि। एहि महाकाव्यमे सीताक महत्व देखाइ पड़ैत अछि। विधुजी द्वारा मैथिली साहित्यक सभ सँ पैघ महाकाव्य "सीतायन" जे सात - सात सर्गक सप्त - सुमनमे अर्थात 49 सर्गमे लिखल अछि। एहि महाकाव्यमे सीता अवतरण सँ भूमि प्रवेश धरिक सीताक चरित्र केँ सांगोपांग वर्णित कएल गेल अछि। एहि महाकाव्यमे सेहो सीता नायिका छथि, जाहि माध्यमे समाजमे व्याप्त अन्याय-अनीति केँ देखेबा लेल तथ्य आगाँ अनने छथि। आगु हम देखैत छी विषपायीजीक "राम - सुयश - सागर"। जाहिमे राम - सीताक वर्णन भेल अछि। लालदास कृत एकटा फराक सँ छोट कायामे "जानकी रामायण" अछि, जाहिमे आदिशक्ति केर तीनू रूप केँ देखाओल गेल छैक। तीन रूपमे सीता, लक्ष्मी ओ राधा छथि। एहि रामायणमे सीता जन्मक रहस्य, नारदक गान विद्या, राग - रागिनी केर भेंट, नारदक गानक अहंकार भंग, उल्लूकाचार्यक चरित्र आदिक वर्णन महत्वपूर्ण ढंगे भेल अछि। जानकी रामायणमे जानकी नायिका रूपमे उपस्थापित भेल छथि। आब हम वर्णन करए चाहब जे हमरा लग दू टा रामायण अछि जे शेषर ओ महत्वपूर्ण रामायण अछि। ओ अछि कवीश्वर चंदा झाक "मिथिला भाषा रामायण" आ दोसर लालदासक "रामेश्वर चरित मिथिला रामायण"। दुनू रामायण उपरा-उपरी अछि। श्रेष्ठ अछि। कहबाक अर्थ ई जे कवीश्वर चंदा झा जे रामायण लिखलनि से रामायण भऽ केँ रहि गेल। कवीश्वरक विद्वता,

संपर्क *: ग्राम+पोस्ट: रहुआ-संग्राम, प्रखंड: मधेपुर, जिला: मधुबनी, बिहार*
Email: narayanjha1980@gmail.com, Mob: 8051417051

हुनक पटुता, हुनक सामर्थ्य पर कोनो संदेह नहि अछि। हुनक काज अतुलनीय अछि। मुदा हुनक रामायणमे सीताक पक्ष कमजोर अछि। छुछुन बुझि पड़ैत अछि हुनक सीताक प्रति उद्‌गार। जकरा हम इहो नहि कहि सकैत छी जे ओ जानि बुझि केने हेताह। मुदा ओ हुनकर अपन वर्णन वैभव अछि। ओहिमे सभ रामायणक छटा विद्यमान अछि। रामक शौर्यक गाथा गायन भेल अछि। सीताक अवहेलना सेहो नहि कहि सकैत छी। मुदा जखन लालदासक रामायण पढ़बाक अवसरि लगैत अछि तँ ओ लगैए जे अपन भाषाक, अपन माटिक, अपन रामायण थिक। जाहि रामायणमे रामक अति महिमा मंडन नहि भेल अछि। अर्थ ई जे राम जे छथि तकर वर्णन अछि। सीता जे छथि तकर वर्णन अछि। लालदासक रामायण केँ नाम जँ सीतायन वा जानकी रामायण राखल जइतैक तँ आओर उचित रहितैक। अस्तु लालदास अपन सीता केँ नायिका रूपमे प्रतिस्थापित करबाक विशेष कार्य केलनि जे उचितो आ आह्लादकारी सेहो कहल जा सकैए।

ओना तँ लालदास कृत रामेश्वर चरित मिथिला रामायण केँ आदि महाकाव्य नहि कहल गेलैक अछि मुदा जँ मिथिलाक परंपरागत शाक्त धर्म केँ प्रतिबिम्बित कएनिहार प्रथम महाकाव्यक गौरवक बात हेतै तँ एकरहि से प्राप्त छैक। एहि रामायणमे राम कथा केँ यथास्थिति रखैत, मूल कथा केँ महत्व दैत, सीता केँ महत्वपूर्ण नायिका रूपमे रूपायित करैत, मिथिलाक नारीक प्रतिमान स्थापित कएल गेल अछि, से अभूतपूर्ण अछि। रामायण रहितो जे सीता पर काज अछि, सीताक प्रति श्रद्धा अछि, से मिथिलाक पक्ष मजगूत करैए। ई रामायण शाक्त दर्शन केर पोषक अछि। लालदासक ई काज अपूर्व ओ अमूल्य अछि। जँ किछु पाछु तकैत छी तँ स्त्री नायिका रूपमे पहिनहुँ आयल छथि विद्यापतिक काव्यमे।

विद्यापति लिखै छथिन—

"बेरि-बेरि अरे शिव हमें तोय कहलहुँ

किरिष करिअ मन लाए।

रहि अनिसंक भीख मांगइते

सब गुन गौरव दुर जाए।।"

एहि रचनामे गप आयल अछि जे गौरी, शिव केँ खेती करबा लेल प्रेरित करै छथिन। कहै छथिन जे भीखमंगनी काज ठीक नहि। परिश्रम करबा लेल कहि रहल छथिन।

लालदासक रामायणक ई विशेषता अछि जे मिथिलामे शक्तिक जे प्रधानता अछि से एहि रामायणमे नीक जकाँ भेटैत अछि। सीताक चरित्रमे लालदास केँ विश्व शक्तिक मूल देखाइ दैत छनि।

एहि प्रसंगक एकटा उक्ति—

"सीतानामक अमित प्रभाव। चतुवर्ग फल जापक पाब।।

जीवनमुक्त थिकथि जन सैह। सीताराधन तत्पर जैह।।"

दोसर प्रसंग एकटा आओर उक्ति—

"मूल प्रकृति लक्ष्मी जनिक, सीता रूप प्रधान।

तनिक नाम जपि पाब नर, दुहू लोकक कल्याण।।

उक्त पाँति सँ लालदासक रामायण आरंभ भेल अछि। सीताक महिमा वर्णन एहि रामायणमे सीता चरित्र केँ चर्मोत्कर्ष पर पहुँचाबैत अछि।

लालदास कृत रामेश्वर चरित मिथिला रामायण अन्तर्गत पुष्कर कांडमे सीताक नायिका रूपक व्याख्या—

महाकवि लालदास आठम कांड पुष्कर कांडक नाम सँ लिखलनि जे चंदा झा रामायणमे नहि अछि। एहि कांडक माध्यमे सीता चरित्रक महानता प्रदर्शित क' रावणक नव रूप उपस्थित कएने छथि। सीता जी ओहिठाम कहै छथिन जे रावण केँ नष्ट करबाक योजना ओ बहुत पूर्वहि बना चुकल छलीह। अपन पूर्व जन्ममे आंगिरसक वेदक तेज सँ उत्पन्न सीताक नाम वेदवती छलनि। रावण एक दिन रातिमे आबि हुनक पिता केँ मारि देलक आओर हुनका जबर्दस्ती पकड़ि लेलक। सीता तखनहि रावण ाक आयु केँ क्षीण कए देने रहथिन। सीता मोनमे ठानि प्रतिज्ञा केलनि जे रावण वंश केँ समूल रूपे नष्ट करब आ तखनहि ओ अग्निमे समाहित भ' गेलीह। तकर बाद शोणित माण्ड सँ जन्म ग्रहण केलनि, किएक तँ हुनका एहि लोकमे किछु लीला करबाक रहनि। ओना अग्नि प्रवेश प्रकरण आन रामायणमे रामक आज्ञा सँ भेल अछि, मुदा लालदास सीता केँ अग्नि प्रवेश नहि करओनै छथिन। अर्थ ई जे सीता कहियो अपवित्र नहि भेलथि तँ ओ अग्नि परीक्षा देती किये। मुदा बहुत रास रामायणमे अग्नि परीक्षा प्रकरण अछि।

सीता स्वयं एहि कांडमे कहने छथिन—

"हमरा जानब परमाशक्ति। हमहि करै छी सृष्टि विभक्त।।

नाश रहित नित्या हम एक। हमरि सँ ई जगत अनेक।।

हमहीं छी परमात्मा रूप। विद्या अविद्या हमर स्वरूप।।

महिमा हमर परम विस्तार। बन्धन मुक्त करी संसार।।

पहिनहुँ कहि चुकल छी जे एहि रामायणमे सीता बेसी शक्तिशालिनी छथि रामक तुलनामे। ई बात सिद्ध होइत अछि एहि पाँति सँ सेहो। रामक समस्त ऐश्वर्य सीताक शक्ति पर निर्भर अछि। पाँतिमे सीता कहै छथि जे हम परमशक्ति सृष्टिकारिणी छी। नित्या छी। विद्या आ अविद्या छी। हमर महिमा परम विस्तार अछि। हमरहि सँ सांसारिक बन्धन मुक्त भ' सकैए। एहि प्रकारे एहि रामायणमे शक्तिक सर्वोपरिकताक संग

वैदिक मान्यता केँ सेहो समाविष्ट कएल गेल अछि। जे आन रामायण केर सीता आ लालदासक सीतामे भिन्नता देखबैत अछि। लालदास अवर्णनीय काज क' सीताक महत्व आओर बढ़ा देलनि।

पुष्कर कांडमे सीताक शक्तिक व्याख्या सहृदय भेल अछि। राम जखन लंका सँ विजय प्राप्त क' अयोध्या एलथि तँ रामक राज्याभिषेक केर तैयारी भेल। राज्याभिषेकक बाद जत तत रामक वीरता वर्णन होअय लागल। स्वाभाविक छै जे ब्रह्मांडमे विजयक स्वर गुंजए लगलैक। सभ आनंद सँ लोट - पोट होइत रहै। राम अपनहुँ खूब खुशी रहथि। ओम्हर सीता केँ हँसी लागए लगलनि। राम पुछलखिन जे अहाँ केँ हँसी किये लागि रहल अछि। तखने सीता प्रश्न करैत पुछलखिन की ई युद्ध अहीं जीति केँ एलहुँ? अहीं रावणक वध केलहुँ? नहि! कदापि नहि! जँ अहाँ केलहुँ वध ओहि रावण केँ तँ ओहि रावणक हजारमो भाग केँ शमन क' सकब? राम कहलथि किएक नहि। सीता कहलखिन जे चलू हमरा संग पुष्कर द्वीप, जतए सहस्रस्कंध रावण अछि। जँ अहाँ एहि रावण केँ वध क' लेब तँ तखन हम मानि लेब। युद्ध होमय लागल। रामक सेना आ राम परास्त भ' गेलाह। सीता सभ दृश्य देखि रहल छलीह। सीता केँ लगलनि जे राम आब मारल जेताह, तँ तखने कालीक रौद्र रूप धारण क' युद्ध करए लगलीह। ओ रूप देखि राम डेरा गेला, हुनका चिन्हैमे भांगठ भेलनि जे ई के छथि? तखनहि ब्रह्माक मधुर स्वर गुंजलै, जे हे राम अहाँ डेराउ नहि ई अहींक संगिनी सीता थिकीह। सहस्रो मुंड काटि सीता वध केलनि ओ सहस्रस्कंध रावण केँ। तखन जा कए आश्वस्त भेलाह राम जे हमर पाछु तँ हिनक शक्ति छल, तँ हम जीति सकलहुँ, मारि सकलहुँ ओइ रावण केँ। तँ ई स्पष्ट होइत अछि जे स्त्रीक शक्ति बिनु संसार किछु नहि।

राधाकृष्ण चौधरी लिखने छथि रामेश्वर चरित मिथिला रामायण केर भूमिकामे "रामायण कथा तँ हजारो वर्ष सँ हमरा लोकनिक मध्य आबि रहल अछि एवं भारत वर्षक विविध भाषामे एकर कतेको रचनो भेल अछि, संगहि प्रत्येक रचनाक आधारशिला रामकथा अछि जे देश एवं समाज सँ आवेष्टित अछि। जँ अयोध्याक मर्यादा पुरुषोत्तम राम देल तँ मिथिलाक सती - साध्वी सीता जकर आदर्शक अनुसरण करब प्रत्येक भारतीय ललनाक लेल गौरवक विषय होइछ। सीताक व्यक्तित्व केँ जाहि रूपेँ लालदास प्रस्तुत कएलनि अछि ओ अतुलनीय अछि।''

प्रो० हरिमोहन झा रमेश्वर चरित मिथिला रामायण केर भूमिकामे लिखने छथि– "एहि रामायणमे राम सँ अधिक सीताक प्रधानता छैन्ह। जेना उर्मिलाक दृष्टि सँ साकेत केर रचना भेल अछि, तहिना सीताक दृष्टि सँ एहि रामायणक रचना भेल अछि। ग्रन्थक प्रारंभ सीतेक महिमा वर्णन सँ होइत अछि। ग्रन्थमे आठ कांड अछि। अन्तिम कांड अछि पुष्कर कांड। जाहिमे लेखक सहस्रानन रावणक वध वर्णन कैने छथि। एहिमे सीता जीक महत्व तेहन विशद रूपे देखाओल गेल छन्हि जे ओ रामचन्द्रो सँ अधिक शक्तिमती प्रतीत होइत छथि।''

डॉ. लेखनाथ मिश्रक कथन छनि– "सभ सँ पहिने चन्दा झा द्वारा मिथिला भाषा रामायण लिखल गेल। ओतए सीताक महत्व देल गेल, मुदा तकरे बाद जे लालदास कृत रमेश्वर चरित मिथिला रामायण आयल। ओहि रामायणमे लालदास द्वारा आदर्श नारीक चरित्रक उजागर, चन्दा झा रामायण सँ बेसी भेल। लालदासक रामायणक सीताक चरित्र अनुकरणीय एवं वंदनीय अछि।''

डॉ. रामदेव झा एहि संबंधमे कहै छथि– "परमशक्ति स्वरूपा लक्ष्मीक अवतार सीताक संयोग सँ रामक शक्तिमत्ता ओ ईश्वरत्व प्रतिष्ठित छनि। अत: लालदास सीता केँ अतिशय महिमामंडित कएलनि अछि। ओ रामचरितक गान नहि क' रमा अर्थात रमेश्वरक चरितक गान कएने छथि। समग्र रामायणमे विभिन्न प्रकरणमे सीताक महिमा गान, शक्ति पूजन, सप्तशती चंडी पाठ, नवर्ण मंत्रक जाप आदि सविधि पूर्वक भेल अछि। वैष्णवी रामकथाश्रित रामायणमे सीताक माध्यम सँ शाक्त भावनाक सन्निवेश एहि रामायणक सभ सँ पैघ विशेषता थिक।''

डॉ. भीमनाथ झाक अनुसार, "हिनक राम केवल दशरथक पुत्र नहि ओ रमा अर्थात लक्ष्मीक ईश्वर थिकाह। ओ विष्णु थिकाह। तँ हिनक रामायणमे सीताक प्रधानता देखबैत रामक प्रधानता केँ देखाओल गेलैक अछि। अपन जननीक संगहि अपन मातृभाषा केँ साक्षात लक्ष्मीक रूपमे देखब कविक व्यापक दृष्टिक परिचायक थिक।''

हम कहि सकैत छी जे जननी जानकी एहेन धिया भेलीह जे हमरा समाज लेल, साहित्य लेल नायिकाक रूपमे दर्शित भेलीह। मिथिला लेल एहेन साध्वी, वीरांगना अमूल्य धरोहर रूपमे पूजित - अर्चित छथि। जे हमरा सभक बीच एखनहुँ अनुकरणीय, वंदनीय ओ पूजनीय छथि। ओ मिथिलामे अपन पदचिह्न छोड़ि, मिथिलाक नारी केँ अकानबा लेल एखनहुँ प्रेरित करैत छथि। नारी रूपक एहेन उपस्थान महत्वपूर्ण अछि। ओ प्रणम्य छथि। ■

सन्दर्भ

1. मैथिली साहित्यक इतिहास - दुर्गा नाथ झा श्रीश, पेज न. - 230, 232, 233
2. स्मारिका 2016 (महाकवि पण्डित लालदास), पेज न. - 52, 79
3. रमेश्वर चरित मिथिला रामायण - लालदास भूमिका पेज सभक अंश

आधुनिक मैथिली काव्यमे नारी रचनाकारक योगदान

✍ प्रो. (डॉ.) रामसेवक सिंह

लेखक भागलपुर स्थित मारवाड़ी महाविद्यालय मैथिली विभागमे प्रोफेसर छथि। एनसीसी ऑफिसर सेहो छथिन। हिनकर कतेक रास अकादमिक आलेख प्रकाशित भेल छन्हि।

मानव सामाजिक प्राणी थिक आ साहित्य समाजक दर्पण अछि। साहित्यक सृजन सृष्टिमे सृष्टिक अनमोल रचना पुरुष आ महिला अछि। नारी सृष्टिक अनमोल अवदान अछि। संसारक संचालन हेतु प्रकृति द्वारा नारी आओर पुरुषक उद्भव भेल। नारी माताक रूपमे संसारक सृष्टि करैत अछि तैँ ओतहि संरचनामे हिनक भूमिका सतत रहैत अछि। मनु महराज मानैत छथि जे- ''जतय नारीक अराधना ओ उपासना होइत अछि ओतहिं देवताक निवास होएत अछि अर्थात् – 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'

प्राचीन कालमे नारीकेँ मातृत्व रूपमे प्रतिष्ठापित करैत कवि कहैत छथि– नारी क्षमा, दया, त्याग, तपस्या आओर शांतिक प्रतीक मानल जाइछ।

आधुनिक कालमे मैथिली साहित्यक विकासमे सृष्टिक विकासक भाँति नारी रचनाकारक अभूतपूर्व योगदान अछि। मैथिली साहित्यमे नारी रचनाकारक संख्या पर्याप्त नहि अछि, अपितु जतबहि अछि से अमूल्य अछि, हुनका कम आंकल नहि जा सकैछ। नारी-साहित्यक अन्यान्य विधाक भाँति यथा-कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी ओ समीक्षा साहित्यक संगहि कविता क्षेत्रमे अप्रतिम काव्य प्रतिभाक ओ विद्व ताक परिचायक अछि।

मैथिली नारी कवयित्रीक संबंधमे प्रमुख इतिहासकार डॉ. जयकान्त मिश्र कहैत छथि जे मैथिली साहित्यमे बहुत रास कवयित्री सभ सफल लेखन कयलन्हि मुदा एखनो कियो ऐतिहासिक स्थान बनाबय से सफल नहि छथि।[1]

अस्तु मैथिली साहित्यक भंडारमे अभिवृद्धि करवामे हिनका लोकनिक योगदान विस्मृत नहि कयल जा सकैछ अपितु साहित्यमे सृजनरत महिला कवयित्रीक संख्या दिनानुदिन बढ़ैत जा रहल अछि, संगहि आलोचनात्मक साहित्यक निर्माणमे सेहो हिनका लोकनिक अभिरुचि प्रशंसनीय देखल जा सकैछ। इतिहासकार डॉ. दिनेश कुमार झा काव्यकेँ तीन वर्गमे विभक्त करैत छथि–

(क) इतिहास एवं पुराणक कथा पर आधारित काव्यक रचना

(ख) लोकगीत एवं कलागीतक रचना संग नारी समाजक हेतु उपयोगी निबंध प्रस्तुत कयने छथि।

(ग) विविध विधाक माध्यम सँ विशिष्ट सृजनात्मक एवं आलोचनात्मक प्रतिभा परिचय।'[2]

पौराणिक कथा पर आधारित पद्य रचना सभमे श्रीमती राजलक्ष्मीक कृति (1) श्रीमदभागवत प्रकाश तथा (2) विभीषणशरणापन्न विशेष रूप सँ उल्लेखनीय अछि। हिनकर भाषामे प्रांजलता, शैलीमे सरसता ओ सरलता अछि। दोसर दिस 'विभीषण शरणापन्नमे' विभीषणक प्रेरणादायक चरित्रक विश्लेषण जेहने सुन्दर भाव

संपर्क : प्रोफेसर, मैथिली विभाग, मारवाड़ी कॉलेज, भागलपुर
Email:ramsewaksingh49@gmail.com Mob: 9430456014

अछि तेहने सरल प्रवाहमय भाषाक विशेषता भेटैत अछि।

कवयित्री लोकनि लोकगीतक रचना क्षेत्रमे महती भूमिका रखैत मैथिली काव्य साहित्य केँ समृद्ध कयलनि अछि। जाहिमे प्रमुख कवियित्री स्व. श्रीमती नन्दिनी देवी, श्रीमती राजलक्ष्मी, श्रीमती कालिन्दी देवी, श्रीमती महेश्वरी देवी, श्रीमती ललितेश्वरी देवी, आदिक मैथिली लोकगीतमे नारी हृदयक कोमलताक विषद वर्णन भेटैछ। भगवती गीत ताहूँमे बड़ मर्मस्पर्शी ओ आत्म निवेदन अछि। श्रीमती ललितेश्वरी देवीक भगवती गीत देखल जा सकैछ यथा :-

जननि ! चरण-शरणमे रखियौ
हमरा चेरी बनाकेँ ना।
जीवन जन्म व्यर्थ देल जननी
जँनहि देलहूँ ज्ञान।
भाया-मोहक अन्धकारमे
भेल न श्रीपद ध्यान।'[3]

दोसर कवियित्री नन्दिनी देवी भगवती गीतक प्रति असीम आस्था ओ भक्ति भावक वर्णन देखल जा सकैछ यथाः-

'*जय काली कलि कलुषबिनाशिनी*
जगत जननि जगदम्बे महि।
मीत भक्त पर सदय रहब माँ
दीन- हीन अवलम्बी हे।'[4]

अस्तु उपरोक्त मैथिली कवयित्री सभक संबंधमे प्रमुख इतिहासकार 'श्रीश' जी कहैत छथि जे 'कवियित्री- गणमे श्यामादेवी, कामाख्यादेवी, नीरजा रेणु, सबसँ प्रतिभाशाली बुझि पड़ैत छथि। नारी हृदयक कोमलताक ओ भाव सौष्ठव हिनका लोकनिक कवितामध्य स्पष्ट रूपसँ प्रतिविम्बित भेल अछि।'[5]

मैथिली साहित्यमे मिथिलाक विविध पाबनि-तिहारक संगहि मिथिलाक भिन्न-भिन्न संस्कारपरक गीत प्रस्तुत कय अपन विशिष्ट प्रतिभाक परिचय देने छथि। ताहिमे प्रमुख कवयित्रीमे श्रीमती श्यामा देवी, प्रभा झा, सीता मिश्र, सुभद्रा कुमारी, 'पाथ्या', इन्दु कुमारी, जयन्ती देवी, माला झा, निर्भयादेवी, चित्रलेखा देवी, कुसुमलता देवी, सुशीला आदिक नाम अग्रणी अछि। कवयित्रीमे श्यामादेवी, बहुत दिन सँ गीत लिखि रहल छथि। 'कामना' हीनक कविता संग्रह प्रकाशित अछि। स्वातंत्र्योतर कवियित्रीमे 1960ई बाद श्रीमती शेफालिका वर्मा, प्रभा झा, सुमन, कामख्यादेवी (नीरजा रेणु) नाम अग्रगण्य अछि।

श्रीमती श्यामादेवीक कविता संग्रह 'कामना'मे लोक जीवनक संकट-पूर्ण परिस्थितिक चरित्र-चित्रणक संग प्राकृतिक सौन्दर्यक चित्रण हिनक कवित्व प्रतिभामे चारि चाँद लगा देलनि। जाहिसँ हिनक कवित्व प्रतिभा आकर्षक ओ हृदयग्राही बनल अछि यथा :-

'*जीवनक दुखपूर्ण पथ पर, दूर क्यो वंसी बजाबय*
संगमे पाथेय नहि किछु, चरण श्लय तन भार
दूर *पाँतर अलस तन्द्रिल नयन मध्य अन्हार*
किन्तु होइत भू विलुंठित आशा पुनि हमरा उठावय।'[6]

अस्तु एहि प्रकारे कवयित्रीक काव्य प्रतिभा केँ देखि प्रमुख इतिहासकार 'श्रीश'जी कहैत छथि जे 'मैथिली काव्यधाराक अभूतपूर्व विकासकेँदेखि कतोक हिन्दीक लब्ध प्रतिष्ठित कविगण सेहो मैथिली कविताक रचना दिस प्रवृत भेलाह, ताहिमे श्रीरामावतार अरुण ओ श्रीमधुकर गंगाधरक (1936) नाम उल्लेखनीय अछि। एहिमे प्रथम कवि गीतक रचना कयल ओ दोसर प्रयोगवादी कविताक।'[7]

पौराणिक कथा पर आधारित पद्य रचना सभमे श्रीमती राजलक्ष्मीक कृति (1) श्रीमदभागवत प्रकाश तथा (2) विभीषणशरणापन्न विशेष रूप सँ उल्लेखनीय अछि। हिनकर भाषामे प्रांजलता, शैलीमे सरसता ओ सरलता अछि। दोसर दिस 'विभीषण शरणापन्नमे' विभीषणक प्रेरणादायक चरित्रक विश्लेषण जेहने सुन्दर भाव अछि तेहने सरल प्रवाहमय भाषाक विशेषता भेटैत अछि।

प्रयोगवादी कवियित्रीमे श्रीमती श्यामा देवी ओ कामाख्या देवी प्रभृति अधिकांश कवयित्रीगणक नाम उल्लेखनीय अछि। नारीहृदयक कोमलता ओ भाव सौष्ठव हिनका लोकनिक कविताहु मध्य स्पष्ट रूपसँ प्रतिविम्बित भेल अछि। लोकगीतक प्रमुख कवयित्रीमे डॉ. इलारानीक नाम अग्रगण्य वा स्वर्णाक्षरमे लिखल जा सकैछ। हिनकर गीतमे समसामयिक जीवनक संवेदना ओ बौद्धिक चेतनाक तीव्र अभिव्यक्ति भेटैत अछि। जाहि मध्य इलारानीक 'विन्दती' (1972) ओ श्रीमती शेफालिका वर्माक विप्रलब्धा' (1978)। दार्शनिक गम्भीरता व्यंग्योक्ति द्वारा परम्परागत रूढ़ि-रीति एवं सामाजिक विद्रूपता पर मार्मिक आघात करैत छथि, विद्रोहक अग्निशिखा जरएबाक आयास करैत छथि एवं प्रभावित करवामे समर्थ होइत छथि। एहि धाराक नवीनत्तम प्रतिभाशाली हस्ताक्षर कवयित्री सर्वश्री सुस्मिता पाठकक नामक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि। गजल रचना करब एकटा फैशन बनि गेल, जाहिमे कवयित्री विभारानीक नामोल्लेख कएल जाए सकैछ।

श्रीप्रभा झाक रचना अपूर्व भाव विन्यास, रहस्यवादी भावना सँ अनुप्राणित, हिनक ई कविता देखल जा सकैछ यथाः-

'*हम शून्य गगनकेर अन्धकार*
अहाँ नव प्रभात केँर आभा छी
हम मग्न हृदयकेर करुण राग
अहाँ अखिल विश्वकेर आशा छी।'[8]

मैथिली गीतक नाना भाव ओ नाना विधाक आलोकित कयनिहार कवयित्रीमे प्रमुख नाम अछि- डॉ. श्रीमती अणिमा सिंह, गौरी मिश्र, शांति सुमन, शेफालिका वर्मा, इलारानी सिंह, नीरजा रेणु, आशा झा, शीला चौधरी, प्रो. वीणा कर्ण, उर्मिला प्रसाद, लिली रे, उषाकिरण खाँ, माधुरी झा, नीता झा, प्रभावती झा आदि। श्रीमती शांति सुमन झाक अत्यन्त संवेदनशील मन ओ हृदयस्पर्शी कविता ई रचना देखल जा सकैछ यथा:-

'अहाँक सिहरनक निशान
खिचल जे मोन पर हमर
हम तकर की करू।'[9]

मैथिली साहित्यक महादेवी वर्माक रूपमे लब्ध प्रतिष्ठि छथि श्रीमती शेफालिका वर्मा, जिनक कवितामे नारीक भावुकता एवं आद्रता, पांति-पांतिमे स्पष्ट भेल अछि। ओतहि 'विप्रलब्धा' आ 'भावांजलि' (गद्य गीत) नामक कविता संग्रह मैथिली साहित्यमे अपन विशिष्ट प्रतिभाक परिचय दैत नव कथ्य एवं नव शिल्पक कारणे विशिष्ट स्थान प्राप्त कएने छथि। मैथिली काव्य साहित्यक संगहि हिन्दीयो साहित्यमे समान रूपेँ सारस्वत साधनाक पुजारी कवयित्री शेफालिका वर्माक कविता संग्रह- 'विप्रलब्धा' आ 'भावांजलि'। (गद्य गीत) सामाजिक स्थितिक दिग्दर्शन भेटेछ। हिनक कविताक संदर्भमे प्रो. रमानाथ झा कहैत छथि- ''हिनक कविता होइत अछि भावनात्मक अभिव्यक्तिमूलक आओर सेहो छायात्मक शैलीमे, हिनक शब्द योजना भावहिं जकाँ कोमल ओ मधुर होइत अछि।''[10]

प्रो. वर्माक दोसर काव्य संग्रह- 'भावांजलि' (गद्यगीत) अछि जकरनाम सँ स्पष्ट होइत अछि जे कवितामे भावुकता, कोमलता, ओ सरसताक संगहि राजनीतिक भ्रष्टाचार, आर्थिक विषमता सँ उत्पन्न खोझराहटिक चित्रण अछि। एहि भावकेँ पुष्टि करैत पं. गोविन्द झा कहैत छथि- 'हृदयहिमे अछि छायावादयुगक

मैथिली गीतक नाना भाव ओ नाना विधाक आलोकित कयनिहार कवयित्रीमे प्रमुख नाम अछि- डॉ. श्रीमती अणिमा सिंह, गौरी मिश्र, शांति सुमन, शेफालिका वर्मा, इलारानी सिंह, नीरजारेणु, आशा झा, शीला चौधरी, प्रो. वीणा कर्ण, उर्मिला प्रसाद, लिलीरे, उषाकिरण खाँ, माधुरी झा, नीता झा, प्रभावती झा आदि।

भावुकता, कोमलता, सरसता आ अशान्ति। की एकटा कविताक वास्ताविक कविता प्रत्यावर्त्तन नहि कहि सकैत छी ... ? तँ 'भवांजलि'मे शाश्वत मूल्य पाबि विशेष अह्लादित भेलहुँ।'[11]

'विप्रलब्धा' कविता संग्रह पर हास्यसम्राट प्रो. हरिमोहन झा टिप्पणी करैत शेफालिका वर्मा केँ मैथिली काव्य साहित्यक 'महादेवी वर्मा' मानैत छथि।'

राष्ट्रीय भावना सँ ओत-प्रोत, स्वातंत्र्योतर कवयित्रीमे एक प्रमुख हस्ताक्षर प्रो. डॉ. वीणा कर्णक कविता संग्रह 'अर्गला' आ 'भावनाक अस्थिपंजर' नामक काव्य संग्रह सँ अपन सबल काव्य क्षेत्रमे उपस्थिति दर्ज करैत शंखनाद करैत अछि जे अर्गलाक 'अभिलाषा' शीर्षक कविता सँ राष्ट्रीयताक भावनाक प्रेरणा देछ-

भारत माता सँ अहींक कोरमे होए हमर अवसान।.........

भारतमाता सँ सहए कए रहल आई अहाँक अपमान।

भगत सिंह, शेखर, सुभाष, केँर शोणित सिंचित भूमि।

सत्य अहिंसा केर आँधीमे। गाँधी अएला भूमि।।'[12]

प्रकृति प्रेमक प्रेमी, संगहि माँ मिथिलाक ओ मौथिलीक प्रति अगाध स्नेह केँ 'समर्पण सँ' मातृभाषाक प्रति अगाध प्रेम प्रो. कर्णक निम्न पाँतिमे देखल जा सकैछ :-

पुष्प ई अर्पण करी। माँ मैथिली पावन चरणमे।

मातृभाषा भारती। लएली अहाँ अपन शरणमे।।'[13]

हिनक दोसर काव्य संग्रह 'भावनाक अस्थिपंजर' मे प्रो. कर्ण चहुँदिश पसरल अराजकताक अन्हारकेँ चिर तीव्र ज्योति-स्तम्भ केँ स्थापित करैत कामना संग कहैत छथि-

'ओ ई संदेश पसारि रहल छथि जे अन्धकार सँ संघर्ष करू।'

मिथिला सँ फराक रहितहूँ मातृभाषाक मैथिलीक प्रति अगाध प्रेम एवं जिनका पारिवारिक विरासतमे भेटल हो, संगहि अधिष्ठात्री कवियित्री प्रो. डॉ. इलारानी सिंह अपन काव्यमे आधुनिक तीव्रता ओ अभिव्यक्ति चौदहो कला सँ पूर्ण ईश्वरक प्रति असीम श्रद्धा रखैत ई पाँति देखल जा सकैछ -

'अपन नग्न देहकेँ/साओन नगन कए क्षुधार्थ देहकेँ।

आओर कातर बना निर्धनताके/ आओर निर्धन कए अंध मानव

श्रद्धा भाव सँ संलग्न अछि। प्रतिभा पूजन मे।'[14]

अशिक्षाक कारणेँ बढ़ैत जनसंख्या सँ त्रस्त जनजीवन प्रति कल्याणक भाव प्रो. इलारानी सिंहक प्रेम कवितामे देखबा योग्य अछि:-

'ई महादेवक गण सन/नेनां मुल्काक दिगम्बरी सेवा।

सदिकाल करैत रहैत अछि। आपसमे तुमुल महाभारत।।'[15]

नारी हृदयक कोमलतम संवेदना केँ स्पर्श करबाक अपूर्व क्षमता ओ नारी जीवनक विवशता संग भरल असंतोष, कुंठा निराशा, आ जिजीविषा ओ आत्मसम्मान प्रति संघर्षमय जीवनक साक्षात प्रतिमूर्ति कमला चौधरी चहुदिस

दहेज सन दारूण व्यवस्था पर हुनक अभिव्यक्ति देखबा योग्य अछि :-

'निर्धनक हम बेटी/संग नहि अनलहूँ कोठा-सोफा।

सुनलहूँ उलहन उतरितहुँ महफा/ दरिद्राहाक बेटि अछि नाम हमरा

देबौ नहि सहाय फूटल कपार अछि हमर/नहि अछि कोनो मोल/

हमर सेवा हमर भावक /हमछी ढाकी पटुआ सागक।'[16]

प्रो. लालपरी देवीक कवितामे सामाजिक असमानताक टीस सँ भरल-पुरल कविता मंचीय पाठमे भेटैत अछि यथा कविता शीर्षक 'हमर जीवनमे इएह लिखल छल', खूनक घोंटपीब जीबू, अपन व्यथा, त्राहिमाम, सुखायल मूँह, स्वागत गीत, चुप्पछी, अवरोध, कटाक्षवाण, हमर गाम, छूति ओ स्वतंत्र सेनानी, आदि।[17]

अगस्तयानी महाकाव्यक रचियताक पुत्री, अत्याधुनिक कविताक विभूतिक पत्नी, नव कविताक साक्षात हस्ताक्षर स्वनामधन्य ज्योत्सना चन्द्रमक 'स्वप्न धर्मा काव्य संग्रह' गीतनाद संग कविता क्षेत्रमे प्रवेश करैत अपन मर्मस्पर्शी ओ ह्रदय विदारक स्वरकेँ मुखरित करैत यर्थाथवादी रचना सँ मैथिली काव्य साहित्यमे अपन सफल उपस्थिति दर्ज करैत ह्रदयक व्यथा केँ चित्र देखल जा सकैछ-

'हम दुहिता भेलहूँ तेँ की ?
छीत' अहींक अंग
हम रक्तमे ....
गतिशील अछि, ताहि यात्राक उत्स
एना विभाजनक नहि।
हमर नारीत्व केँ देखि।'[18]

अत्याधुनिक कवयित्रीमे श्रीमती मेनका मल्लिक कविता गरीबीक विवशतामे मायक आत्मभिव्यक्ति फुटपाथ परक छ: मासक भुखल बच्चाक चित्र बड़ ह्रदय विदारक अछि।

'एक आमक दाम! बुझल छ तोरा?

चलह बना दैत छिय मरसटका

ओहिमे तकिह बेटा/मालदह आमक स्वाद।'[19]

कवयित्री समसामयिक राजनीतिक केँ बदलैत परिदृश्य केँ बड़ नीक 'परिवर्तन' शीर्षक कविताक माध्यमे प्रस्तुत कएलनि अछि-

'बर्तन बदलल बासन बदलल/सत्ता बदलल शासन बदलल

फूलचूनक दोकान बदलल/ पुआ आ पकवान बदलल

पागक रूप बदलल/चालनि बदलल सूप बदलल।'[20]

मानवीय संवेदनाक पहलमे मैथिलीक अनेक कवयित्री अपन काव्य रचना सँ मुखरित करैत रहल छथि। मानवीय संवेदनाक प्रतिमूर्ति मनुष्य केँ मानल गेल अछि। मनुष्य श्रम करैत अछि, फलक आशा अदृश्य शक्ति पर छोड़ि दैत आ मानवीय चेतनाक प्रवाहमान धारा केँ सांसारिक सुख-सुविधा जाहि प्रकारेँ मनुष्य केँ अवाध कय लैत अछि, तकरा मनुष्य अपन श्रम शक्ति सँ ओकरा पर विजय प्राप्त करैत अछि। एहि भाव भूमिक नव प्रेरणा लए मैथिली काव्य जगत्‌मे अपन रचना प्रवाह सँ जानल जाइत अछि- निक्की प्रियदर्शिनी हिनक निम्न कवितामे देखल जा सकैत अछि-

मानवीय संवेदनाक पहलमे मैथिलीक अनेक कवयित्री अपन काव्य रचना सँ मुखरित करैत रहल छथि। मानवीय संवेदनाक प्रतिमूर्ति मनुष्य केँ मानल गेल अछि। मनुष्य श्रम करैत अछि, फलक आशा अदृश्य शक्ति पर छोड़ि दैत आ मानवीय चेतनाक प्रवाहमान धारा केँ सांसारिक सुख-सुविधा जाहि प्रकारेँ मनुष्य केँ अवाध कय लैत अछि, तकरा मनुष्य अपन श्रम शक्ति सँ ओकरा पर विजय प्राप्त करैत अछि।

संसार जागि अपन उमंगमे बिसरी गेल

जे रातिमे कियो ओकरा जोगन छल।
इएह सत्य थिक सुख होइत दुखकेँ
लोक बिसरि जाइत अछि।'[21]

नवयुगक नव स्पन्दन, नव-नव वस्तुक आकलन, प्रकृतिक सुकोमल रूपक चित्रणक, संगहि देश प्रेमक स्वर केँ मुखरित कयनिहार कवियित्री नीरजा रेणुक प्रसंगत: चीनी आक्रमणक सँ देशक रक्षार्थ कविताक ई पाँति अवलोकनीय अछि -

'जागरे कुलीन पुत लीन स्वप्नागमे।
शोर छौ करैत मां, कनैत बात मोनमे।
स्वभूमि शस्य-श्यामा हंसोथि लेत दुष्टरे।
अकमल कमल सुनील सुभग तोड़िकेँ सुखैतरे।'[22]

हिनकर कवि प्रतिभासँ प्रभावित होयत प्रो. उषा चौधरी कहैत छथि- 'हिनक गीतमे अनुप्रसिद्धक शब्दयोजन सुन्दर निर्देशन भेटैत अछि, जे उपनिबध भावकेँ संगीतात्मक प्रवाह-प्रदान करैत अछि। हिनकर रचनामे नारी ह्रदयक स्वाभाविक भावुकताक यथार्थ अभिव्यक्त भेल अछि।'[23]

एहि तरहे अनेको कवयित्री अपन काव्य प्रतिभा सँ मैथिली काव्यक क्षेत्रमे अपन अभूतपूर्व योगदान करैत मैथिली काव्य क्षेत्रमे श्री वृद्धि करैत छथि, जाहिमे श्रीमती श्यामा झाक (विन माइक वेटी-1997) जयन्ती देवीक (कामना) अणिमा सिंह मैथिली लोकगीत, इलारानीसिंह 'विन्दती' (1972) शेफालिका वर्माक 'विप्रलब्धा' ज्योत्सना चन्द्रमक 'गीतनाद' (1984) लीला देवीक 'लीला' वीणाकर्णक - 'अर्गला' संगहि घनेरो कवयित्री, यथा श्रीमती प्रभा झा, राजेश्वरी देवी, अम्बिका मिश्र, गौरी मिश्र, इन्दिरा झा, नीता झा, लिली रे,

कमला चौधरी, सुस्मिता पाठक, विमला कुमारी, उषाकिरण खां, तारणी मिश्र, उषा चौधरी, लक्ष्मीवती देवी, विमला झा, तुलिका झा, माधुरी झा, नृत्यवती देवी, बिन्धवासी देवी, चित्रालेखा देवी, रंजू झा, कृष्णा देवी, नीलम झा, वीणा ठाकुर, रेणु, कीर्तिलता, अलका मिश्र, कल्पना सिंह, वाणी मिश्र, विजया झा, प्रभावती झा, शीला चौधरी, नीता झा, मीरा कुमारी, आशा मिश्र, प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', अरुणा चौधरी, मेनका मल्लिक, कामिनी आ निक्की प्रियदर्शिनी आदि कवियित्री लोकनिक घनेरो कविता/ गीत/ गज़ल आदि भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिका छिड़िआयल अछि। आवश्यकता अछि ऐहि छिड़िआयल सभ कविताक अध्ययन ओ मनन, विश्लेषण करबाक। तखनहि महिला कवयित्रीक भाव-भंगिमाक अध्ययन सम्भव भय सकत।

अस्तु मैथिली काव्य साहित्यक अभिवृद्धिमे महिला लोकनिक उपर्युक्त प्रत्येक वर्गक योगदान अप्रितम अछि। आशा अछि जे भविष्यमे महिला कवियत्री लोकनिक अपन उत्कृष्ट सँ उत्कृष्ट रचना सभ प्रस्तुत कय मैथिली साहित्यकेँ समृद्धिक पथपर अग्रसर रखबामे अपन अमूल्य योगदान प्रदान करतथि। जाहि सँ मैथिली काव्य साहित्य हिनका लोकनिक सहयोग सँ गौरवान्वित पल्लवित ओ पुष्पति होइत रहत। ■

संदर्भ

1. **Dr. A. Jaykant Mishra:** History of Maithili Literature, Vol-1/11, P.64
2. **दिनेश कुमार झा :** मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, पृ.-328
3. **श्रीमती ललितेश्वरी देवी :** भगवती गीत
4. **श्रीमती नन्दिनी देवी :** गीतांजली।
5. **'श्रीश' जी :** मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.-217
6. **श्रीमती श्यामा देवी :** कामना
7. **'श्रीश' :** मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ.-316
8. **श्रीमती प्रभा झा :** 'हम ओ अहाँ'
9. **श्रीमती शांति 'सुमन'**
10. **प्रो. रमानाथ झा :** आधुनिक मैथिली साहित्य : एक निबंध, पृ.-70
11. **पं. गोविन्द झा :** सम्प्रति अशोक कुमार मेहता, पृ.-119-120
12. **प्रो. वीणाकर्ण :** अर्गला, पृ.-13
13. वेएह, पृ.-03
14. **प्रो. इलारानी सिंह:** विन्दती, 1972
15. **प्रो. इलारानी सिंह :** प्रेम एक कविता, 1968
16. **कमला चौधरी :** शोधार्थी, अंक-3, वर्ष- 2014, पृ.- 55
17. **लालपरी देवी :** शोधार्थी, अंक-3, वर्ष-2014, पृ.-58
18. **ज्योत्सना चन्द्रम :** बोन साई, पृ.- 56
19. **मेनका मल्लिक :** मिथिला दर्शन,
20. **मेनका मल्लिक :** मिथिला दर्शन, जनवरी-फरवरी, अंक-12, पृ.-32
21. **निक्की प्रियदर्शिनी :** मिथिला दर्पण (बनारस) 2015, पृ.-20
22. **निरज रेणु :** आगत क्षण
23. **प्रो. उषा चौधरी :** आधुनिक मैथिली साहित्यमे महिला लेखिकाक योगदान।

कतहुँ नहि देखाए पड़लीह

निवेदिता झा

कतहुँ नहि देखाए पड़लीह
जानकी घोघमे हमरा कहियो
चित्रकारक कल्पना केँ धन्यवाद
वा सचमे रहि एतेक रूपकुमारी
माथ धरि आँचर, आँखि लाज सँ झुकल
मुदा मोन सँ दृढ़ निश्चयी रहलीह सर्वदा

जखन लिखल जाइत छल बाल्मिकी रामायण
आ कि दू युगक बादो
ई की भेलै कि हठात् मिथिलामे स्त्री आबि गेलीह
मुँह झाँपने तोपने सोझा सबहक
तर्क केयो कतहुँ दऽ सकैत अछि
देशमे बिदेशी शासन रहलै
नाकक गप्प छलनि
मुदा हमर प्रश्न अनुत्तरित रहल
किया एतेक परदा
चाहे ओ कोनो जातिक स्त्री
कोनो धर्मक माननिहार
पाबनि करैत आ सुकुमारी
ओ नहि छथि हाड़ माँसुक की
कि ओ नहि चढ़लीह हिमालय
ओ नहि नापलखिन की अकास?

की पहिने सँ चलैत एहि प्रथाक कोनो अंत
केयो केलहुँ प्रयास आइ धरि
विमर्श पर विमर्श
बरखो बरख पुरुख कमाएत खटाएत
पाछु ओ सिसकैत हेड़क - हेड़
गामक गाम एखनहुँ दलान दरबज्जा पुरुषक स्वामित्व

नहि चाही मात्र अंगना
मोन सँ कएल जायत छै इज्जत
जोर जुलुम सँ उठैत रहै छै विद्रोह
हम सब सिया केँ उत्तराधिकारिणी
धनुष उठा सकैत छी,
प्रत्यंचो जनैतै छी चढायब
मुदा प्रेममे हम सब गुम छी
अहाँ केँ मुख सँ सुनबा लेल किछु उद्गार। ■

संपर्क : 9811783892

स्वयंवर

ऋतेश पाठक

जाहिकालमे पुत्रक उत्कट चाहमे
आहूत भेल छल यज्ञ पुत्रेष्टि
ताहि काले राजा विदेह तपक फलमे
मँगैत छलाह पुत्री वैदेही

जाहिकालमे इंद्रप्रस्थ नरेश
स्वयं राखैत छलाह रानी तीन
ताहिकालमे पांचालीक माथे
थोपि देल गेल पति पांच

मुदा एहि सबसँ की
कोनो कालखण्डक
कतय कोन प्रसंगमे
मांगल चांगल वा
भेटल अनठेकानल
कोनो बेटीक कतय
भेटल ओकर अस्तित्व
वस्तु-आभूषण-संपत्तिसं
विलग केहनो चरित्र

कतेको पूजनीया
भ गेलीह सीता
चाहे कतेको भेलीह
भागमंत पांचाली
मुदा छलीह ते बस बेटी
कोना मेटतै भाग बेटीबला

कहबाक लेल पिता
कराबैत छलाह स्वयंवर
मुदा कहिया कोन बेटी
स्वयं चुनि पेलीह अपन वर

वर होथि महाधनुर्धर
वा एकाग्र लक्ष्यभेदी
महान योद्धा वा विद्वान
कन्याक मनक कोन मान

स्वयंवर नामसँ होयत छल
आडम्बरी प्रतियोगिता परीक्षा
जाहिमे पूर्ण होमय के छल
पिता-बंधु-समाजक इच्छा

सच ई जे राजप्रसादक लोक
वर नञ जमाई ताकैत छथि
पोषण कयलनि जे बेटी केर
ताहि बदले कमाई ताकैत छथि

जों ताकल जाओत वर
तखन कन्याक इच्छा
सेहो कतहु पाओत ठौर
कन्याक जरुरतसं बढ़ि
नञ बुझायत किछु और

मुदा जखन ताक
होयत अछि दमादक
धियासँ बढ़ि चिंता
होयत अछि समाजक

सब गुण चाहि लोकप्रदर्शनक
जेना वीरता, विद्वता, श्रेष्ठता
मुदा नहि मोल गुण प्रेममेलनक
चाहे सहजता, सरलता वा स्नेहिलता

ई कथा सनातन सबयुगक
पालक विद्वान,
संपन्न कोनो गुणक
बेटी माने संपत्ति,
अय पर नञ आपत्ति
जे राखब अपना लग ते
आधिपत्य भावसं
आ सौंप देब फेर कतहु
आधिपत्य भाव द'

सचहुँ मिथिलाक धिया ते थिक धिया
शील-संस्कारसं कखनहुँ नञ डोलै हिया
करै स्वयंकेँ होम मुदा आनकेँ दुःख किये
सबहक सुखक लेल जारै अपन जिया

शील, संस्कार, ज्ञान, विज्ञान
संग समेट अन्तसमे सब अरमान
संपत्ति पिताक बनल, ताकैत अपन रस्ता
क्षण क्षण ताकै अपन संपत्तिक बस्ता।

■

संपर्क :
ग्राम+पोस्ट : खानपुर,
जिला : समस्तीपुर,
बिहार
मो. 9213152822

से छलीह सीता

अमरनाथ झा 'अमर'

भूमि सँ उत्पन्न, भूमिजा
विदेहक गेह, वैदेही
जनक पुत्री, जानकी
मिथिलाक धीया, मैथिली
मुदा, शिव-धनुख वाम हाथें
टारि
जे नीपथि चिनमार;
से छलीह सीता।

सिरध्वजक प्रण पर, धनुष
भंग लेल
आमंत्रित, पहुँचल, दस सहस्र
राजाक
विफल प्रयासक केन्द्रविंदु;
से छलीह सीता।

धनुख भंग कएल श्रीराम
पुरलन्हि मनकाम
वरण भेल, पाणिग्रहण भेल
अनुसरण, अनुगामी भेलीह
महल सँ जंगल धरि
जंगल सँ जहल धरि
पति भामिनी रहलीह;
से छलीह सीता।

असह वेदन सहि
शरण आ चरण गहि
कथमपि विचलित नहिं
सहनशीलताक प्रतिमूर्ति
बनलि;
से छलीह सीता।

अपन मान सम्मान लेल
नारी चरितक उत्थान लेल
आहत, अपमान सँ
देलन्हि जे अग्निपरीक्षा;
से छलीह सीता।

नारी शक्ति, मातृशक्तिक प्रतीक
पिताक अछैतो, बपटुग्गर पुत्र कें
राजोचित, वीरोचित
बहुविधि शिक्षित करौलन्हि;
से छलीह सीता।

आ, पुत्रद्वय केहेन वीर !
अश्वमेधक अश्व कैँ
पकड़ि,बान्हि कएल थीर
जे छोड़ने छला राम
छोड़ा नञ सकला लक्ष्मण
आबऽ पड़लन्हि स्वयं राम कैँ
ओहो भेला मुग्ध,बालकक
वीरता पर
ठकमूड़ी लागल ठाढ़
ओइ लव आ कुशक
शक्तिस्वरूपा माय छलीह;
से छलीह सीता।

राजतंत्रक दम्भक प्रतीकारमे
पुनर्परीक्षा लेल बाध्य भेलि
नारी चरित्रक सम्मान लेल
पुनि धरतीमे समा गेलीह;
से छलीह सीता।

जनिकर वियोग, विछोहमे
राम कैँ आराम नहिं
वामांगीक पक्षाघात
हरिलेलक सद्‌गुण हरिक;
से छलीह सीता।

तें नञ वैदेही, नञ जानकी
आ ने मैथिली
नारी आ मातृशक्तिक प्रतीक
जनिकर अप्पन नाम छलनि
मान आ सम्मान छलनि;
से छलीह सीता। ■

संपर्क *: ग्राम पो. महरैल,*
भाया-झंझारपुर (मधुबनी),
पिन-847404
मो. 8789013213

अहीं बचा सकैत छी जानकी

दिलीप कुमार झा

हमरा लोकनि करैत छी
परिकरमा
दोलाक पाछू दुलकल
जाइत छी
नपैत छी कोस चौरासी
पयबा लय एक अझक
अपन किशोरीजी कैँ
मुदा जानकी आब जनकपुर
नहि रहै छथि
पुनौराक सिराउरसँ निकसि
वाया अयोध्या, चित्रकुट,
दण्डकारण्य
फेर आबि गेल छथि
अपन मूल वासस्थान।

साँचे कहै छी
जँ विसवास नहि हुए
तँ आउ हमर गाम मिथिला
चलु बुलि लिअ जानकीक
नैहर
अपनहि नयनसँ देखब
रहरहां मैथिलानी सभकैँ
अपन नेनाक डेन पकड़ने
पाठशालाक मुहथरि धरि
पहुँचबैत
धानक बिहनिक आँटी
माथपर नेने
एक-एक ढुट्ठीपर
हाली-हाली गब लगबैत।

बड़द ल'क' पशुपतिनाथ
चलि गेला कैलाश
ताहिसँ की
अहल भोरे गाय महीसक
सानी-पानी लगबैत
भेट जेती रामबती, फूलमती
आ रुचि, स्मृति
सुन्नर-सुन्नर बसनी गढ़ैत
पचरत्तनवाली कुम्हाइन
तकरा ढौरैत हमर बेटी भावना
ओहि पर रंगटीप दैत चन्दना
टेकुड़ी तेसुत माय नहि
सिखौलखिन।

ताहीसँ की
कंप्यूटरक की-बोर्ड पर
अँगुरी नचबैत
मिथिलाक ना सगरो
दुनियाँमे पसारबक
यत्न करैत
भेट जायत हमर बेटी
मैत्रेयी, चित्रा, सुमित्रा
नव-नव रूपमे अवतरित
भेलीह अछि जानकी
मंदिरे-मंदिर तकलासँ नहि
भेटतीह
जहिया ओ क' देल गेल
छलीह अयोध्यासँ निर्वासित
तहिये ल' लेलनि संकल्प
जे हमरे बदल' पड़त
एहि विकृतिके
हमरे तिरोहित कर' पड़त
सभटा टाटक, भाभट
एकदिन सभटा राम कल
जोड़ि कहता
पतियानीमे ठाढ़ भ'
सभटा बात हमर सुनता। ■

संपर्क *: 943098449*

जानकी

नमिता झा

निज धर्म सँ, निज कर्म सँ माँ जानकी प्रधान छथि,
मिथिलाक गौरव मैथिली घर-घर के ओ शान छथि।
सहिष्णु व शक्ति स्वरूपा नारी के पहचान छथि,
जँ कियो निष्प्राण छथि ओहि नारीक, ओ ते जान छथि।
एहेन माता जानकीक गढ़ी भेलनि सीतामढ़ी,
धन्य पुनौरा गाम, जतय जानकी अवतरित भेलीह।
ईलाक छाती चीरि कें हल सँ जिनक उत्पत्ति भेलनि
सीता तिनक नाम राजा जनक अपने सँ देलनि
चान्दनीक शीतलता नेने छथि पुष्पसन कोमल बनल,
सब रूप ओ लावण्य सँ ओतप्रोत निर्मल बनल।
छथि, जखन सीता एक दिन संगीक संग उद्यानमे।
सुग्गाक जोड़ा आबि कें बसि गेल हुनक परानमे।
जानकी रामक कथा ओ सुनि जखन गद्गद् भेली,
पकड़ि जोड़ा कें तखन अपना शरणमे ओ लेली।
गिड़गिड़ायल कानल बहुत माँ जानकी छोड़ू अहाँ,
प्रसव पीड़ा बिनापति नहि सहि सकब बाँचब कोना।
बालकोचित हठक कारण नहि पसीजलि जानकी,
लाचार भऽ सुग्गी निछावरि केंलनि अप्पन प्राण कें।
राम-राम कहि देह त्यागल विलग भऽ पतिसँ जखन,
शापित भेली माँ जानकी सुग्गो प्राण तेजल जखन।
विदेह नन्दिनी जानकी कें विरह दुःख तखने भेटल,
वएह बैरक कारणे शुक् अबधमे धोबी बनल।
भेली सयानी जानकी, प्रण लेल जनक विवाह कें
रचि स्वयंबर राखल प्रतिज्ञा तोड़त धनुष जे आबिकें।
दिग-दिगन्त सँ जे एला, धनु देखि ओ विस्मित भेला
नहि टसकलनि ककरो सँ धनुष, तोड़लनि रघुवर लला।
धनुष तोड़ल जखन रघुवर, माँ जानकी रामक भेली
आकाशमे दुन्दुभि बाजल जयघोष सँ गद्गद् भेली
रामक संगे जानकी भेली बिदा निज गेह सँ
सचमे नरेश विदेह भऽ बेसुध भेला निज देह सँ।
एली सिया अवधेश संग धन्य अयोध्या धाम भेल
संगहि सुखमे ग्रहण लागल बनवास रामक नाम गेल
मन्थराक चक्रब्यूहमे कैकेयी माँ जा फसल
राम कें बनवास ओ भरत केर गद्दी भेटल
सभ हतप्रभ बनल छथि बेचैन देखि नरेश कें,
वरदान दए दशरथ तेजल कहि राम-राम दूह लोक कें।
वन गेला, सिया राम संग बेचैन भऽ लक्ष्मण अनुज,
पूरा अयोध्या सन्न भेल, की देव आओर की दनुज।
सोना केर सुमेर त्यागल, त्यागल वरुण कुबेर कें,
रत्न-राज्य कें त्यागि जानकी धन बुझल श्रीराम कें,
केलक अपमान दशानन नहि बचल सिया के कोप सँ।
बनल पुत्र हनुमान जखन नहि बचल लंका प्रकोप सँ।
धू-धू कें जरल लंका प्राण गेल लंकेश के,
विभीषण के राज्य भेटल, भेटली सिया कुरुणेशकें
शिक्षाक हेतु सतीत्व केर परीक्षा देलनि माँ जानकी,
प्रज्ज्वलित चिताक बीच झट समेली माँ जानकी।
एहेन छथि माँ जानकी, घर-घर के बेटी बनल,
कर्तव्यनिष्ठ छथि जँ कियो तँ जानकीक उपमा भेटल।
प्रणम्य छथि माँ जानकी चिरकाल धरि रहती सदा,
दए आशीष माता अहाँ करु धन्य मिथिलाकें सदा। ■

***संपर्क** : ग्रामः सुखसेना, पोस्टः भट्टोत्तर चकला,*
जिलाः पूर्णिया, बिहार

मैथिलीक प्रख्यात विद्वान प्रो. प्रेमशंकर सिंह कें श्रद्धांजलि

जन्म : 20 जनवरी 1942
मृत्यु : 17 फरवरी 2018

वरिष्ठ अधिवक्ता आ समाजसेवी बालेन्दु अरुण झा कें नमन

जन्म : 14 मार्च 1953
मृत्यु : 4 अप्रैल 2018

एक बेर फेर फाटू हे धरती

कल्पना झा

एक बेर फेर फाटू हे धरती
घुरा दियऽ हमर ओ
सर्वगुण सम्पन्न सीता
पूजा अर्चना लेल नहिं
मान सम्मान लेल नहिं
स्नेह दुलारो लेल नहिं
एक बेर घुरा दियऽ
हमरा सभ मिथिलानीक
अनुत्तरित प्रश्नक उत्तर लेल
उलहन उपराग लेल
डांट फटकार लेल
हॉट दवाड़ लेल
जँ भटतीह तऽ
पुछवन्हि हुनका सँ
हे जगजननी
अहाँ एहन कियेक छी?
साक्षात् महाशक्ति रहितो
कतए गेल अहाँक
स्वाभिमान
मिथिला माटिक
आन-बान आओर शान
एतबो उदारता नीक नहिं
जाहि सँ विवश भ' जाई
सदतिकाल सहबा लेल
सभक अत्याचार व अपमान
अहाँ तऽ जनैत छी मैथिली
अहींक अनुशरण करतीह
सदति सभ मैथिली
अहींक पद्चिन्ह पर चलैत
सहैत रहति अनन्य संताप
मर्यादा के रक्षार्थ
देवय परतैन्ह कतेको
स्वाभिमानक रक्षार्थ
समाय चाहती धरतीक कोरमे
मुदा कतेक बेर
फाटती धरती
कतेक मैथिली कें समेटतीह
अपन कोरमे
कतेक बेर क्षत्विक्षत् होइत
रहत
माए वसुधा केर कोंढ़
हे महाशक्ति माता जानकी
कोन बेगरता छल
श्रीराम केर पराक्रमक
ध्वज-पताका फहरेबाक
की अहाँ श्रीरामक
परीक्षा लए रहल छल हुँ?
अगर नहिं तऽ
रामक मर्यादा
रघुकुलक रीति
पत्नी धर्मक कर्तव्य
अहूँ कें तऽ देने छलाह
एक नहिं सात गोट वचन
अग्नि कें साक्षी मानि
पृथ्वी, जल, वायु आ
समस्त मिथिलावासीक समक्ष
पुछितहुँ अहाँ
वचन निर्वाहक रीति
अंकुश लगवितहुँ अहाँ
सूर्पनखा केर फरेब पर
स्वर्ण मृगक माया पर
रावणक अहंकार पर
धोबी केर उदण्डता पर
रामक नीति पर
अश्वमेधक सफलता पर
होमय दितियैक महायुद्ध
लव-कुश आ राम कें
फहराय दितियैक परचम
जननी केर दूधक
नस्तनाबूद करितहुँ अहाँ
पुरुषक दम्भ क
(पुरुष प्रधान) पितृसत्तात्मक
समाज
राम राज्यक
स्थापित करितहुँ अहाँ
जननीक सतीत्व
मातृ सत्तात्मक समाज
समानताक अधिकार
सीता राज्य। ■

संपर्क : 9873442999

भारतीय भाषामे शोध: एकटा परिचर्चा

मैथिलीक शोध पत्रिका तीरभुक्ति द्वारा विश्व पुस्तक मेलामे "भारतीय भाषामे शोध" विषय पर एकटा परिचर्चा आयोजित भेल जाहिमे भारतीय जनसंचार संस्थान, दिल्ली केर डायरेक्टर जेनेरल तथा सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री के.जी. सुरेश जी मुख्य वक्तव्य प्रस्तुत कयलनि। श्री सुरेश जी मैथिली भाषामे तीरभुक्ति सन तथ्यपरक शोध पत्रिका केर प्रकाशन कें एकटा महत्वपूर्ण डेग बतौलनि। ओ कहलनि जे देश भरिमे भारतीय भाषा सभमे शोध शुरू करबाक अविलम्ब आवश्यकता अछि। भाषाक विकासमे समाजक संघर्ष आ संस्कृतिक कथा निहित रहैछ, अहि दुवारे भाषाक अध्ययन सँ समाजक अध्ययन आ असली भारतक दर्शन संभव थिक। तीरभुक्तिक प्रकाशनक प्रशंसा करैत ओ मैथिली भाषाक समृद्ध साहित्यिक विरासत पर सेहो प्रकाश देलनि। भारतीय भाषामे शोध कें आगाँ बढ़बे केर उद्देश्य सँ ओ आश्वासन देलनि जे शीघ्र भारतीय जनसंचार संस्थानमे संविधान केर आठम अनुसूचिमे शामिल भाषा सभमे पत्रकारिता केर डिप्लोमा कोर्स शुरू कराओल जायत। एहि घोषणा सँ मैथिल अनुरागी सभमे हर्षक संचार भेल।

एहि परिचर्चामे मिथिलाक युवा नाटककार आ रंगकर्मी श्री प्रकाश झा सेहो उपस्थित छलाह। ओ मैथिली भाषामे नाटक आ नाट्य साहित्य विषय पर शोधपरक तथ्य सभ प्रस्तुत कयलनि। तीरभुक्तिक सम्पादक श्री विनीत उत्पल तथा भारत सरकार केर प्रकाशन विभाग सँ प्रकाशित पत्रिका, 'योजना' केर संपादक श्री ऋतेश पाठक मैथिलीमे शोध विषय पर अपन विचार प्रस्तुत कयलनि आ तीरभुक्ति कें अबे बला समयमे उच्च सँ उच्चतर शोध पत्रिका बनेबा लेल प्रतिज्ञा लेलनि। विषय कें आगाँ बढबैत जनजातीय मामला केर विशेषज्ञ श्री राजीव रंजन प्रसाद, यश प्रकाशनक निदेशक श्री राहुल भारद्वाज, तथा दिल्ली विश्वविद्यालयमे सहायक प्रोफ़ेसर श्री प्रवीण झा अपन अपन विचार प्रकट केलाह। एहि अवसर पर जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय केर शोधार्थी श्री भास्कर ज्योति सेहो उपस्थित छलाह आ मैथिली भाषामे शोध सामग्री केर अनुपलब्धता विषय पर अपन भाव प्रकट केलनि। ■

हम लिखैत छी तऽ जीबैत छी

✍ कामिनी

युवा आ चिरपरिचित कवयित्री कामिनी कें 'समय सँ संवाद करैत' पर चेतना समिति पटना द्वारा माहेश्वरी सिंह 'महेश' पुरस्कार, 'पिता चुप छथि' कविता पर युवा कवि सम्मान आ 'खंड खंडमे बटैत स्त्री' कविता संग्रह पर मैसाम सम्मान-2017 भेटल छन्हि।

सच पुछी तऽ हमरा नहि पता हम किये लिखैत छी। कहियो बैसि कें एहि माँदे सोचबे नहि केलौं। समय आ परिस्थिति जे लिखबैत गेल हम लिखैत रहलौं। हृदय जे अनुभव करैत अछि, आँखि जे देखैत अछि, कान जे सुनैत अछि, ओहि सँ मनमे जे घृणा, प्रेम आ आक्रोश जन्म लैत अछि ओ हम शब्दक माध्यम सँ उतारि लैत छी डायरीमे बिना कोनो लाग लपेटक। बिना कोने रंग रोगन केने। कतेको बेर तऽ एना भेल जे छह-छह महिना धरि हम किछु नहि लिखलौं। मन सुसुप्त ज्वालामुखी जकाँ निष्क्रिय भऽ गेल। बस जीबैत रहलौं प्रतिक्रिया विहीन जीवन।

ई समय समाधिक बुझाइत रहल हमरा। जँ मनुख रहितहुं, प्रतिक्रिया विहीन भऽ गेलौं सब नीक-बेजाय पर तऽ मनुख होइत छैक एकटा कलाकार, साहित्यकारक संग। ओ हर समय क्रियाशील रहत ई संभव नहि। ओ बैसि कें सुसताइत अछि। अपन यात्रा आ गन्तव्य पर विचार विमर्श करैत अछि। पुनः नव ऊर्जाक संग आरंभ करैत अछि अपन यात्रा। रास्तामे फूल भेटत या काँट, रोड़ा-पत्थर गरत या कालीन बिछाओल मिलत एकटा लेखक एहि विषयमे कहियो नहि सोचैत अछि। यात्रा मात्र होइत अछि ओकरा लेल महत्वपूर्ण। जँ ओ रुकि जायत तऽ जीवि नहि सकैत अछि। मरि जायत वएह दिन। मृत्यु सँ हमर तात्पर्य शारीरिक विलुप्तता नहि, आत्मिक क्षय अछि। जतय शरीर मात्र साधन, साध्य नहि।

हम किये लिखैत छी एहि बात पर बेर-बेर जोर देलाक बादो किछु स्पष्ट नहि भऽ रहल अछि हमरा। कारण जेना एकटा माय सँ पूछल जाय जे ओ संतान कें कियैक जन्म दैत अछि? तऽ ओ हकबका जायत। ई एकटा अस्तित्व संबंधी सवाल अछि, जकर जवाब आसान नहि। सन्तान आ मायक बीच जे अन्योन्याश्रय संबंध अछि, ओकर मूल्यांकन असंभव अछि। दुनियाक कोनो भाषा आ लेखकक लेखनीमे ओ ताकत नहि अछि, जे माय आ सन्तानक बीच जे संबंध अछि ओकरा स्पष्ट क' सकत।

तहिना एकटा लेखक आ ओकर लेखनीक बीच अन्योन्याश्रय संबंध होइत अछि, जकरा स्पष्ट करब आसान नहि, असंभव अछि। ई अलग बात अछि जे दू चारि टा बिंदु पर नजरि घुमा आगु बढ़ि जाऊ। मुदा ताहि सँ ओकर सम्पूर्ण मूल्यांकन भऽ गेल, ई कहब उचित नहि हैत। हम कियैक लिखैत छी? एहि माँदे हम कहब की लिखब हमर बेगरता अछि। जहिना एकटा व्यक्तिक लेल आवश्यक आवश्यकता होइत अछि - साँस लेबा लेल हवा, भूख मेटेबाक लेल अन्न, प्यास मेटेबाक लेल पानि। तहिना हमरा जीवाक लेल आवश्यक आवश्यकतामे

***संपर्क** : द्वारा नरेश कुमार चौधरी, मकान संख्या-15/8-2, रोड नंबर-7, इन्द्रपुरी, पटना-800024,* Mob: 7564834210

शामिल अछि हमर लेखनी। जाहि दिन हमरा सँ हमर लेखनी छिनि जायत ओ दिन हमरा लेल अंतिम होयत।

जीबाक मतलब ई नहि होइत अछि की हम भरि थारी अन्न खाइत छी आ पसरि कें सुतैत छी। जीबाक मतलब होइत अछि प्रतिक्रिया। नीक बेजाय पर अपन आवाज दर्ज करायब। एकटा लेखक कें हथियार होइत अछि अपन कलम जाहि कें माध्यम सँ ओ प्रतिकार करैत अछि सभ अन्याय-अत्याचारक। एकटा लेखक कें लेल सबसँ कोमल तत्व होइत अछि ओकर लेखनी जे अनुभव करैत अछि दुनियाक सबसँ कोमल तत्व प्रेमक। एकटा लेखक कें लेल सबसँ मजबूत पक्ष होइत अछि ओकर लेखनी जे अपन हृदयमे संरक्षित करैत अछि दुनियाक सबसँ संवेदनशील वस्तु करुणा कें जे सम्पूर्ण सृष्टि कें जोरने अछि एक दोसर सँ।

ई सृष्टि जँ सुचारू रूप सँ चलि रहल अछि तऽ एहिमे बड़ पैघ योगदान छै करुणा, प्रेम आ प्रतिकारक। जँ एहिमे सँ एकोटा गुण मनुख सँ छिन जाय तऽ मनुख, मनुख नहि रहत। ओ पाथर भऽ जायत। हम ईश्वरमे विश्वास करैत छी आ धन्यवाद दैत छीयैन हुनका जे ओ हमरा एहि योग्य बनेलनि कि हम अपन आवाज, अपन अनुभव, अपन प्रतिक्रिया लोक धरि पहुँचा सकी। हमर ईश्वर, नहि काबामे बसैत छैथ आ नहि काशीमे। हमर ईश्वर त' हमरा हृदयमे बसैत छथि जे सब नीक-बेजाय हमर कर्म पर एलार्म घड़ी जकाँ आवाज दैत छथि। सही आ गलतमे फर्क बुझबैत छथि। हमर ईश्वर त' दुनिया रूपी बारीमे तोरीक दाना सन छिरियाओल छथि जे मनुख कें जाति-धर्म, वर्ग, सम्प्रदायमे नहि बांटि मनुख रूपमे देखैत छथि। हमर ईश्वर जँ बसंतमे फूल जकाँ फूलाइत छथि त' पतझरमे पात जकाँ झरियो कें खसैत छैथ।

हम कियैक लिखैत छी? हम एहि दुआरे लिखैत छी कि हमरा खूनमे हमर लेखनी समायल अछि। जे विरोध करैत अछि सामंतवादी सोचक। जे तहस नहस क' देब' चाहैत अछि, ओहि सभ मानसिकताकें जे सपनो मनुख कें स्त्री आ पुरुषमे बंटैत अछि। छोट-पैघक देवाल ठाढ करैत अछि। जे एक केँर थारीमे छप्पन भोग आ दोसर केर थारीमे सुखलो रोटी पर आफत खसबैत अछि। जे सम्पूर्ण सृष्टिक प्रेम, करुणा, ममता कें अपन मानि संरक्षित, संवर्धित करैत अछि। हम कियैक लिखैत छी? हम एहि दुआरे लिखैत छी कि एहि सृष्टिमे जे कोनो विष तत्व विद्यमान अछि ओकरा शिव जकाँ ग्रहण क' एहि धरतीक सम्पूर्ण रचना कें सुख, शांति, संवृद्धि पूर्ण जीवन देमय चाहैत छी। जे कोनो हालमे मनुख आ मनुखक बीच वैमनस्यता नहि पसारय। पैघ छोटक डिडीर नहि फारय। ■

वृहत स्तर पर मनाओल गेल स्वर्ण जयंती समारोह

अखिल भारतीय मिथिला संघक स्थापनाक स्वर्ण जयंती समारोह दिल्लीक तालकटोरा स्टेडियममे 24 दिसम्बर कें वृहत स्तर पर मनाओल गेल। एहि कार्यक्रमक उद्घाटन देशक गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जीक कर कमल सँ भेल। स्वर्ण जयंती समारोहक अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष श्रीमति सुमित्रा महाजन जी सेहो उपस्थित छलीह। समारोहमे बिहारक मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी सेहो छलाह। ओ अपन उद्बोधनमे बजलाह जे जाहि तरहें देशक विकास लेल बिहारक विकास आवश्यक अछि ओहि रूपेण बिहारक विकास लेल मिथिलाक विकास परमावश्यक थिक। ओ बजलाह जे मिथिला पेंटिग केर विकासक लेल विशेष चित्रकला संस्थानक स्थापना कयल जा रहल अछि, मिथिलाक पान, माछ आ मखान कें विश्व स्तर पर पहिचान प्राप्त कराओल जायत, ताहि दिशामे प्रयास जारी अछि। मिथिला कें हवाई मार्ग सँ जोड़बा लेल जल्दिये दरभंगा आ पूर्णिया एयरपोर्ट केर शुरुआत कराओल जायत। पटनामे निर्माणाधीन एयरपोर्ट टर्मिनल केर देबाल सभपर मिथिला पेंटिंग लगाओल जायत। ओ बजलाह जे मिथिला भाषी देशक कोना-कोनामे बसैत छथि। गृहमंत्री आ लोकसभा अध्यक्षक उपस्थितिमे अखिल भारतीय मिथिला संघक स्वर्ण जयंती स्मारिका आ त्रैमासिक मैथिली शोध पत्रिका *तीरभुक्ति* केर विमोचन कयल गेल। स्मारिकामे मिथिलाक विभिन्न आयाम यथा संस्कृति, साहित्य, शिक्षा आ राजनीति सँ जुड़ल भिन्न-भिन्न विषय पर विशेषज्ञ लेखक द्वारा लिखित लेख प्रकाशित कयल गेल जे अबै बला समयमे मिथिलाक संस्कृति जनबा लेल महत्वपूर्ण दस्तावेज सिद्ध होयत। स्वागताध्यक्ष श्री प्रभात झा जी गृह मंत्री केर उपस्थितिमे जनक जननी जानकीक जन्मस्थली पुनौरा धाममे भव्य मंदिर बनेबाक प्रस्ताव राखलनि। सुमित्रा महाजन जी बजलीह जे ओ आब जहिया बिहार जेतीह त' पुनौरा धाममे सीता जीक जन्मस्थली पर जरूर जेतीह। अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा जी मिथिला संघक उपलब्धि आ आगू केर योजना सभ पर प्रकाश देलनि संगहि सचिव श्री विद्यानंद ठाकुर जी संघक दिस सँ मंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत कयलानि। समारोह कें पुरी पीठक शंकराचार्य श्री निश्चलानंद सरस्वती जीक उपस्थितिक गौरव सेहो प्राप्त भेल। ■

बथान (एनिमल फार्म)

जॉर्ज ऑर्वेल

अनुवाद : विनीत कुमार झा

जॉर्ज ऑर्वेलक प्रसिद्ध उपन्यास *एनिमल फार्म* केर तीन खंडक अनुवाद पछिला अंकमे प्रस्तुत छल। एहि कड़ी कें आगू बढ़ा आब चारिम आ पांचम खंडक अनुवाद प्रस्तुत अछि।

गर्मी बितैत-बितैत बथानमे भेल घटनाक समाचार देशक आध हिस धरि पसैर चुकल छल। सभ दिन स्नोबॉल आऔर नेपोलियन कबूतरक झुण्डकेँ उड़ान पर भेजैत छल। हुनका ई निर्देश छल जे ओ पास-पड़ोसक बथानमे माल-जाल सँ मिलय-जुलय आ हुनका बगावतक खिस्सा सुनाबै। ओ 'इंग्लैंडक पशु' केँ धुन सिखाबै।

मिस्टर जोंस अप्पन बेसी काल विलिंगडनमे 'रेड लायनक मधुशाला'मे बैसिके बीताबैत छल। हुनका जे भी श्रोता भेटैत छल ओकरा आगू ओ वहि दुखड़ा कानैत छल जे कोन तरहे किछु कोरियठ जान-मालक झुंड हुनका हुनकर संपत्ति सँ बेदखल क' देने अछि। हुनका संग बड़ भारी अन्याय भेल अछि। दोसर किसान शुरु-शुरूमे हुनका सँ सैद्धांतिक रूपमे सहानुभूति राखैत छल, मुदा मदद करहि लेल नहि आयल। हुनक मोने मन लड्डू फुटि रहल छल जे कि एहन नहि भ' सकैत अछि जे जोंसक दुर्भाग्यके अप्पन सौभाग्यमे बदलि ली। सौभाग्य सँ बथानक दुनु कातक बथानक मालिकमे कखनो नहि पटैत छल। एहिमे सँ एकटा बथानक नाम फॉक्सवुड छल। ओ नम्हर-चौड़गर, अनेरे आ पुरना तरहक फार्म छल। जतय-ततय जंगल-झाड़ उगि आयल छल। घसबाइरमे किछु उगैत नहि छल आ बथान बड़ दयनीय हालतमे छल। अहि बथानक मालिकक नाम विलकिंगटन छल। ओ आराम-पसंद भलमानस किसान छल। अप्पन बेसी काल मौसमक हिसाब सँ माछ मारय आ शिकार करयमे गुजरय छल। दोसर बथान पिंचफील्ड कहलाबय छल। ओ बड़ छोट आ साफ-सुथरा छल। फ्रेडरिक नामके एकर मालिक कठोर आ धूर्त लोक छल। सदिक्खन केस-मुकदमामे फंसल रहैत छल। ओकरा ल' क' नाम छल जे ओ मोश्किल सँ मोश्किल सौदा कें पटा लेत अछि। दोनों एक-दोसरा कें सोहाबैत नहि छल। अपनामे एतेक बेसी चिढ़ते छल जे अपना हितमे रहलाके बादो, कोनो मेल पर पहुंचब हुनका लेल मोश्किल छल।

एकर बादो दुनू मैनर फार्ममे भेल बगावत सँ डराइल छल। हुनका चिंता हुए लागल जे कत्तो हुनके माल-जाल सेहो एहि ल' क' बेसी नहि बुझय लागे। शुरूमे ते ओ सभ एहि विचार केँ हंसीमे उड़ाबय केँ कोशिश केलक जे माल-जाल अपने आप बथान कोना चला सकैत अछि। हुनकर कहब छल जे पूरा मामला अहि पंद्रह दिनमे निपैट जाइत। ओ ई खबर उड़ेलक जे मैनर बथानमे (ओ एकरा मैनर फार्म बाजय पर जोर दैत रहल, ओ बाड़ा या बथान नाम केँ कोना बर्दाश्त करतिये)। दरअसल, जान-माल अपनामे लड़ि-मरि रहल छल। ओ बड़ तेजी सँ भुखमरी केँ हालतमे आबि गेल अछि। जखन समय बीतल ते पाओल गेल जे जान-माल भूख सँ नहि मरल अछि, तखन फ्रेडरिक आ विलकिंगटन अप्पन राग बदलि लेलक आ आब बथानमे आयल चरित्रहीनता आ दुष्टताक गप करय लागल। ओ खबर उड़ेलक जे माल-जाल आपसमे एक-दोसरा सँ मारि खा रहल अछि, लाल-गर्म सलाख सँ एक-दोसरा केँ दागि रहल अछि आ हुनकर मादा 'एक्के' अछि। सभ कियो मिलके ओकर उपभोग क' रहल अछि। फ्रेडरिक आ विलकिंगटन केँ कहब छल जे प्रकृतिक नियमक खिलाफ बगावत करहि के ई नतीजा आगू आयल अछि।

संपर्क : ग्राम+पोस्ट: आनंदपुरा, भाया: ग्वालपाड़ा, जिला: मधेपुरा, बिहार-852115
मो. 9911364316

ओना ई गप और अछि जे एहि तरहक खिस्सा पर पूर्ण रूप सँ विश्वास नहि कल गेल। एकटा अद्भुत बथान अछि, जतय सँ लोक-वेद कैँ खदेड़ क' भगा देल गेल आ माल-जाल अप्पन सभटा व्यवस्था अपने सँ क' रहल अछि, एकर अफवाह अस्पष्ट आ विकृत रूप सँ प्रचारित होयत रहल। भरि बरख धरि बगावतक लहर देशक दूर-दराजक इलाकामे बहैत रहल। साँड़ जेकरा सदिक्खन सँ विनम्र बुझल जाइत छल, अचानके बिगैड़ गेल। भेड़ बथानके तोड़ि देलक आ घासक खोदि देलक। गाय लाति मारि के बाल्टी उलट देलक। शिकार पर जाइत घोड़ा अप्पन सवार कैँ गप मानहि सँ मना क' देलक आ उल्टे उनका सभके उछाल के फेंकि देलक। सबसं पैघ गप ई भेल जे 'इंग्लैंडक पशु' के धुन आ एतय धरि जे गीतक बोल सभ ठाम सभक जबान पर चढ़ल छल। ई सब अजब जेना चारू दिस पहुंचल छल। जखन मनुख एहि गीत के सुनैत छल ते ओ अप्पन तामस के काबू नहि क' सकैत छल। ओना बाहर सँ ई देखबैत छल जे ई सभटा बकवास अछि। ओ कहैत छल जे ई गप ओ नहि बुझि पाबि रहल अछि जे आखिर माल-जाल कोना एतेक घृणित तुकबंदी के गाबय के जुर्रत क' रहल अछि। जों कोनो माल-जाल एकरा गाबैत पायल जाइत ते ओकरा तुरंत कोड़ासं मारि के धुनल जाइत छल। एकर बादो गीत दबैले के बादो नहि दबि रहल छल। कस्तूरा पक्षी जंगल-झाड़मे नुकाके एकरा कूकैत छल, कबूतर एकरा चिराबेल गाछ पर गुटर-गूँ क' गैलक। ओ लोहारक एतय हल्ला-गुल्लामे मिल गेल आ गिरजाघरक घंटीक गूंजक हिस्सा बनि गेल। आ जखन लोक एकरा सुनलक ते थर्रा क' रहि गेल। ओहिमे हुनका सभके अप्पन कयामत सुना द' रहल छल।

अक्टूबर के शुरूमे, जखन मकईक फसल काटि के खलिहानमे पहुंचायल जा चुकल छल आ ओहिमे सँ किछु दाना सेहो निकालल जा चुकल छल, कबूतरक एकटा झुंड हवामे पंख फड़फड़ाके आयल। ओ झुंड बथानमे बड़ उत्तेजना पहुंचैलक। जोंस आ हुनकर सभटा नौकर-चाकर, फॉक्सवुड आ पिंचफील्डक छहटा लोक संग पाँच सलाख बला गेट धरि आ पहुँचल छल आ बथानक दिस आबयबाली कांच सड़क दिस बढ़ रहल छल। जोंसक सिवाय ओ सब के सब हाथमे लाठी लेने छल। जोंस हाथमे बंदूक थामले आगू-आगू चलि रहल छल। इकरामे कोनो शक नै छल जे ओ बथान पर फेर सँ कब्ज़ा करहि के निमित्ते हमला करहि लेल आयल छल।

एकर आशंका बड़ पहिने सँ कयल जा रहल छल। सभटा तैयारी पूर्ण भ' गेल छल। स्नोबॉल, जे फार्म हाउसमे पड़ल एकटा पुरना पोथीमे सँ जूलियस सीजर के मुहिमक अध्ययन केने छल, एहि काल सुरक्षा क' ल' क' हुए बला हमलाक इंचार्ज छल। ओ फटाफट आदेश देलक आ दू मिनटमे सभटा माल-जाल अप्पन-अप्पन ठाम पर छल।

जहिना लोक सभ फार्म हाउसक लग पहुंचल, स्नोबॉल पहिलुक हमला क' देलक। सभटा कबूतर, जेकर संख्या पैंतीस छल, लोकक माथ के ऊपर उड़य लागल आ हवामे सँ हुनकर सभक माथ पर बीट करय लागल। लोक सभ जा धरि एकरा सँ निपटतीये, जंगल-झाड़क पाछु नुकायल हंसक अचुके हमला क' देलक आ हुनकर सभके पिंडली पर चोंच मारय लागल। ओना ई ते हलुक जेना झड़प छल, जेकर मकसद अव्यवस्था फैलाबैक छल। लोक सभ आसानी सँ हंस सभके लाठी सँ दूर हाँकि देलक। स्नोबॉल तखन दोसर पंक्ति के हमला केलक। मुरियल, बैंजामिन आ सभटा भेड़ आ एहि सबसँ आगू स्नोबॉल अपने आगू दिस बढ़ल। ओ चारू कात सँ लोक सभके धकियेलक आ धक्का मारलक, ता धरि बैंजामिन घूमल आ अप्पन छोट-छोट खुर सँ हुनका सभ पर दुलत्ती झाड़य लागल। मुदा एक बेर फेर लोक सभ अप्पन अपनी लाठी सँ आ गुलमेख जड़ल पैताबा सँ भारी पड़य लागल। तखने स्नोबॉलक आवाज सुनि के, जे मैदान छोड़ैक संकेत छल, सभटा माल-जाल पाछां मुड़ल आ दरवाजा भ' क' अहाता दिस भागि गेल।

लोक सभ जीतक सिंहनाद केलक। ओ देखलक जे ओ जेहन सोचने छल, ओहि तरहे दुश्मनक छक्का छुटल। ओ हुनक पाछां अफरा-तफरीमे भागल आ यहि स्नोबॉल चाहैत छल। जहिना ओ अहाताक बाहर पहुंचल, तीनू घोड़ा, तीनू गाय आ बाकी सूअर, जे गोहालीमे घात लगैने नुका के बैसल छल, अचानक लोकक पाछु आबि गेल आ हुनका सभके घेर लेलक। तखन स्नोबॉल हमला करैक इशारा केलक। ओ अपने सँ जोंस दिस दौड़लक। जोंस ओकरा देखलक, अप्पन बंदूक उठैलक आ फायर क' देलक। गोली स्नोबॉलक पीठ कैँ खुरचैत, शोणितक डडीर बनाबैत निकैल गेल, आ एकटा भेड़ के लागि गेल जाहि सँ ओ ख़त्म भ' गेल। एक क्षणक लेल बिना रुकल स्नोबॉल अपन पूरा वजनक संग जोंसक टाँग सँ जा भिड़ल। जोंस गोबरक एकटा ढेरी पर गिर पड़ल। बंदूक ओकर हाथ सँ छिटक गेल, मुदा सबसं बेसी थरथराबय बला दृश्य बॉक्सर के छल। ओ अप्पन पिछला दू टांग पर ठाड़ भ' लोहाक नालसं जड़ल अप्पन बड़का सूमो सँ साँड़क तरहे वार क' रहल छल। ओकर पहिला आघात फोक्सवुडक घुड़सालमे काज करय बला छौड़ाक माथ पर लागल आ ओ थालोमे निर्जीव भ' क' गिर पड़ल। यहि देखैत, कतेक रास लोक अप्पन लाठी कैँ छोड़ि देलक आ भागय के कोशिश करय लागल।

ओकरा सभमे भगदड़ मचि गेल आ अगला क्षण सभटा माल-जाल मिलके हुनका सभके अहातामे चारू दिस दौड़बय लागल। हुनका सभके सींग भोंकल गेल, दुलत्ती मारल गेल, काटल गेल आ हुनका सभके पइर सँ खुनल गेल। बथानमे कोनो भी एहन जान-माल नहि छल जे अपना तरीका सँ हुनका सभ सँ बदला नहि चुकैने हुए। एतय धरि जे बिलाय सेहो अचानके एक छत सँ एकटा ग्वारक कान्हा पर कूदल आ अप्पन पांज सँ ओकर गरमे गरा देलक। ओ ग्वार भयंकर जेना चिकरल। एक पल के लेल जखन बाहर जाहिके बाट साफ देखा पड़ल ते लोक माथ पर पइर राखि के अहाता सँ भागल आ भागैत-भागैत बड़का सड़क धरि जा पहुंचल। आ एहि तरहे अप्पन हमलाके पांच मिनटक भीतर ओ एहि तरहे शर्म सँ मैदान छोड़ैत नजरि आयल। हुनकर पाछां हंसक झुंड फुफकारैत आ हुनकर पिंडली पर चोंच मारैत दौड़ि रहल छल।

एक लोक कें छोड़ि सब कियो घुरि गेल छल। पाछां अहातामे बॉक्सर अप्पन सुमों पर टाप रहल छल। ओ थालोमे मुंह बायल पड़ल घुड़साल बला छौड़ा कें सीधा करैक कोशिश क' रहल छल। छौड़ा बिलकुल नहि हिलल-डुलल।

'ई मरि गेल अछि।' बॉक्सर दुख सँ बाजल। 'एहन करैके हमर कोनो मन नहि छल। हम बिसुरी गेल रहि जे हम नाल लगाके राखने छी। के विश्वास करत जे हम ई जानि-बुझि के नहि केने छी?'

'भावुक हयके जरुरत नहि, कॉमरेड!' स्नोबॉल चिकरल। ओकर घाव सँ एखनो शोणित बहि रहल छल। 'युद्ध-युद्ध होयत अछि। नीक लोक वहि अछि जे मरि चुकल अछि।'

'केकरो की, एतय धरि जे मनुखक सेहो, जान लहि के हमर कोनो इच्छा नहि छल।' बॉक्सर अप्पन गप दोहरैलक।

ओकर आंखि नोर सँ भरल छल।

'मौली कतय अछि??' कियो आश्चर्य व्यक्त केलक।

मौली दरअसल गायब छल। एक पलक लेल संकटक स्थिति आबि गेल। ई भय व्याप्त भ' गेल जे कतो मनुख सभ ओकरा कोनो नुकसान नहि पहुंचेने हुए, या ओकरा अपना संग नहि लेले गेल हुए। मुदा अंतमे ओ अप्पन थानमे नुकायल पाओल गेल। ओ नादमे घासक बीच अप्पन मुंह नुकाके राखने छल। जाहिना बंदूकक गोली चलल, ओ भागि के एतय आबि गेल छल। और जब सभ कियो ओकरा खोजहिके घुरल, ते पाओल जे घुड़साल बला छौड़ा केवल बेहोश भेल छल, होश अइले के बाद ओ सीधे भागल।

आब माल-जाल बड़ तामसमे फेर जमा भेल। सभ कियो दोसरा सँ ऊंच आवाजमे, लड़ाईमे अप्पन बहादुरीक खिस्सा बखान करहि लागल। तुरंत विजय के उपलक्ष्यमे बिना कोनो तैयारीके एकटा उत्सव मनाओल गेल। झंडा फहरायल गेल आ कतेक रास बेर 'इंग्लैंडक पशु' गीत गाओल गेल। तखन मारल गेल भेड़क पूरा सम्मानक संग अंतिम संस्कार करल गेल। ओकर सारा पर कांट बला घास बला एकटा पौधा लागायल गेल। सारा लग स्नोबॉल छोट सन भाषण देलक, जाहिमें ओ एहि गप पर जोरि देलक जे जरूरत पड़ला पर सभटा माल-जाल अप्पन बथानक लेल मरहि लेल तैयार रहू।

माल-जाल एकटा सैन्य अलंकरण 'माल-जाल वीर, उत्तम कोटि' शुरू करबाक निर्णय बहुमत सँ ल' लेलक आ ओतय तखने ई अलंकरण स्नोबॉल आ बॉक्सर के देल गेल। ओहिमे एकटा पीतरक पदक छल। (ई घोड़ाक एकटा पुरना पदक छल जे साज-सामान बला कोठली सँ भेट गेल छल) एकरा रवि दिन वा छुट्टीक दिन धारण करबाक छल। एकटा आओर अलंकरण 'माल-जाल वीर, मध्यम कोटि' सेहो बनाओल गेल, जे मरलाके बाद मृतक भेड़ के देल गेल।

अहि गप पर बड़ चर्चा भेल जे आखिर ई लड़ाई के की नाम देल जाय? आखिरमे एकरा 'तबेलाक लड़ाई' नाम देल गेल, क्याकि ई ओ ठाम छल, जतय घात लगा के हमला करल गेल छल। मिस्टर जोंसक बंदूक थालोमे पड़ल भेटल। इहो पता लागल जे फार्म हाउसमे गोलीक भंडार राखल अछि। ई फैसला करल गेल जे एहि बंदूक कें झंडाक दलान लग, अस्त्र-शस्त्रके तरहे सजा के राखल जाय। एकरा सालमे दू बेर चलाओल जाय। एक बार 12 अक्टूबर के तबेलाक लड़ाई के बरखी पर आओर दोसर बेर 24 जून के अर्थात बगावतक बरखी पर।

5

ठार मौसम के लग आबैक संग मौली आओर बेसी हेहर होयत गेल। ओ रोज भोरे काजक लेल देर सँ पहुंचैत छल। ओ बहिन बनाबैत छल जे ओ बेर धरि सुतल रहि गेल। ओ बड़ रास कष्टक शिकायत करैत छल, मुदा ओकर खुराक ठीक-ठाक छल। ओ कोनो नहि कोनो बहाना सँ काज सँ नुकाबैत छल, ओतय सँ भागैत छल आ पिये बला पोखैर पर चलि जैत छल। ओ ओतय ठाड़ भ' बेहूदाक सन अप्पन छांहके निहारैत रहैत छल। मुदा एकरा सँ बेसी गंभीर तरहक अफवाह सेहो ओकरा ल' क' पसरल छल। एक दिन जहिना मौली मस्ती सँ टहलैत, अप्पन नम्हर नंगरी मटकाबैत आ सुखल दूबके चिबाबैत अहातेमे घुसल ते क्लोवर ओकरा संग भ' गेल।

'मौली,' ओकरा सँ बाजल, 'हमरा अहाँ सँ एकटा बड़ गंभीर गप करबाक अछि। आय हम अहाँके बथानके फॉक्सवुड सँ फराक करय

बला जंगल-झाड़ के ओहि पार झाँकैत देखलहुं। मिस्टर विलकिंगटन के एकटा लोक जंगल-झाड़ के ओहि दिस ठाड़ छल। आ हम बड़ दूर छली, मुदा हमरा पक्का यकीन अछि जे हम देखलहुं जे ओ अहाँ सँ गप क' रहल छल आ अहाँ अप्पन नाक ओकरा सहलाबैक द' रहल छलहुं। एकर की मतलब अछि, मौली?'

'नहि, नहि, ओ ऐना नहि केलक। हम नहि छलहुं। ई सत नहि अछि'। मौली जोर सँ बजलि। ओ लजैलक आ माटि खोदय लागलि।

'मौली, हम आंखि दिस ताकू। की अहाँ हमरा ई सपथ द' सकैत छी जे ओ अहाँ के नाक नहि सहला रहल छल।'

'ई सत नहि अछि।' मौली अप्पन शब्द दोहरैलिक, मुदा ओ क्लोवर सँ आँखि नहि मिला सकलि। तखने ओ अप्पन पांजैर पर उछलल आ बाध दिस सरपट दौड़ गेलि।

क्लोवर के एकटा तरीका सूझल। केकरो से किछु कहे बिना ओ मौलीकक ठाम पर गेल आ अप्पन सुम सँ पुआर के पलटि देलक। पुआरक नीचां कनि-टा शक्करक ढेला आ अलग-अलग रंगक रिबनक गुच्छा नुकायल छल।

तीन दिनकक बाद मौली गायब भ' गेलि। कतेक हफ्ता धरि ओकर किछु पता नहि लागल। फेर कबूतर बतौलक जे ओ ओकरा विलिंगडनक दोसर दिस देखने अछि। ओ लाल-कारि रंगमे पुतल एकटा शानदार टमटमक छड़मे जुतल छलि। ओ टमटम एकटा सार्वजानिक मकानक बाहर ठाड़ छल। एकटा मोटका ललछौंहे मुँहबला लोक, जे चारिखाना बला जाँघिया आ ठेघुन धरि पैताबा पहिरने छल आ भठियार जेहन लागैत छल, मौलीक नाक सहलाबैत ओकरा शक्कर खुआ रहल छल। मौलीक कोट नब छल आ ओ अप्पन भालकेश पर सिंदूरी रिबन बान्हने छल। कबूतर बतोलक जे एहन लागैत अछि, जेना ओ बड़ खुश अछि। एकर बाद कोनो भी माल-जाल मौलीक चर्चा नहि केलक।

जनवरीक मौसम बड़ खराब आयल। धरती लोहा जेना सख्त भ' गेल छल। खेतमे किछु नहि क' जा सकैत छल, बड़का बखारमें कतेक रास बैसकी बजाओल गेल छल आ सुग्गैर आबय बला मौसमक लेल काजक रुपरेखा बनाबयमे अपना के व्यस्त क' लेने छल। ई गप मानि लेल गेल छल जे सुग्गैर, जे घोषित रूप सँ दोसर माल-जाल सँ बेसी होशियार अछि, बथान नीति के सभटा सवाल तय करल करय, मुदा हुनक फैसला बहुमत सँ समर्थनक बाद लागू करैक छल। ई व्यवस्था ठीक-ठाक चलित रहतिये, जों स्नोबॉल आ नेपोलियक बीच लड़ाई नहि उठतिये। ई दुनु ओहि सभटा मामलामे असहमत भ' जाइत छल, जतय असहमत हेबाक गुंजाइश हेतिये। जों दुनुमे से एक बेसी एकड़मे जौ बुनय के सलाह देतिये ते दोसर जौ के लेल बेसी जमीनक मांग करतिये आ जों ओहिमे से एक ई बतैतियई जे फलां-फलां खेत बंदगोभीक लेल नीक अछि, ते घोषणा क' देत अछि जे ओ कंदमूलक सिवाय कोनो दोसर चीजक लेल बेकार अछि। दुनुक अप्पन समर्थक छल, आ कतेक रास बेर गरमागरम बहस सेहो होयत छल। बैसकीमे स्नोबॉल अक्सर अप्पन नीक सन भाषणक कारण जीत जायत छल, मुदा नेपोलियन बीच-बीचमे अपना लेल प्रचार कराके समर्थन पाबि लेत छल। ओ भेड़क ल' क' सफल छल। पिछला किछु काल सँ भेड़ 'चारि टांग नीक, दू टांग ख़राब', मौसम-बेमौसम मिमीयायब शुरू क' देने छल। ओ अक्सर ई गाबि के बैसकीके भंगटाबैत छल। ई पाओल गेल जे ओ स्नोबॉलक भाषणक काल 'चारि टांग नीक, दू टांग ख़राब' के राग विशेष रूप सँ अलापैत छल। स्नोबॉल के फार्म हाउसक 'किसान' आ 'पशुपालक' पत्रिका के किछु पुरना अंक भेंट गेल छल आ ओ एकर बारीकी सँ पढ़ने छल। ओकरा लग नब आ सुधारक लेल बड़ रास योजना छल। ओ बाधक छहर, घासक हरिहर बनाबैक लेल आ कचरा आदि क' ल' क' विद्वत्तापूर्ण गप करैत छल। ओ माल-जालक लेल एकटा एहन योजना बनौलक जे ओ सीधे बाधमे सभ दिन अलग-अलग ठाम पर गोबर करय। एकरा सँ ढोये के मेहनत बचत। नेपोलियन के अप्पन कोनो योजना नहि होयत छल, मुदा ओ शांति सँ कहैत छल जे स्नोबॉलक योजना सभ सँ किछु नहि होय बला अछि। लागैत छल जे ओ अप्पन बेरक प्रतीक्षा क' रहल अछि। मुदा कुल मिलाके हुनकर कोनो विवाद एतेक कटु नहि छल,जतेक पवनचक्की क' ल' के भेल।

नम्हर खेत-पथार, फार्मके मकानक लग ओतय एकटा छोट-सन टेकरी छल, जे बथान सबसं ऊंच ठाम छल। जमीनक सर्वेक्षण करहि के बाद स्नोबॉल घोषणा केलक जे ई पवनचक्कीक लेल सबसं नीक ठाम अछि। पवनचक्की सँ डायनमो चालायल जा सकत आ बथान के बिजली सप्लाई भ' सकत। एहि सँ बथानमे इजोत होयत, सर्दीमे ओ गरम रहत। एहि सँ एकटा चक्करदार आरी, कुट्टी काटय बला मशीन, चुकंदरक फाँक काटय बला मशीन आ दूध दुहैक लेल बिजलीक मशीन सेहो चालायल जा सकत। माल-जाल एकरा सँ पहिने कहियो एहि तरहक चीजक ल' क' नहि सुनने छल, क्याकि बाड़ा बड़ पुरना किस्म के छल आ ओहिमे बाबा आदमक जमानाक मशीन छल। ओ मुँह बैले सुनैत रहल आ स्नोबॉल ओहि शानदार मशीनक मायावी तस्वीरें खींचैत रहल जे हुनकर काज क' देतिये आ ओ आराम सँ बाधमे चरैत रहतिये वा पढ़-लिख के आ गप क' के अप्पन ज्ञान बढ़ाबैत रहत।

किछु हफ्तामे पवनचक्कीक लेल स्नोबॉल योजना के अंतिम रूप द' देलक। एकर बेसी ब्यौरा मिस्टर जोंसक तीनटा पोथी 'घरमे करहि के हजार उपयोगी काज', 'हर लोक अप्पन मिस्त्री' आ 'नौसिखुआ सभक लेल बिजली' सँ आयल। स्नोबॉल अप्पन अध्ययनक लेल सायबान चुनलक, जे कहियो अंडे सेबैक लेल बाकस राखयमे काज आबैत छल। एकर लकड़ीक समतल चिक्कन फर्श ड्राइंगक काजक लेल उपयुक्त छल। ओ अपना के घंटा भरिक लेल एहि कोठलीमे बंद क' लैत छल। एकटा पाथरक टुकड़ाक मदद सँ पोथी खुजल राखैत छल। अप्पन पइरक जोड़क बीच चॉकक एकटा टुकड़ा फँसाके ओ तेजी सँ आगू-आगू चलैत, एक के बाद दोसर डडीर खींचैत आ उत्तेजना सँ कनि-कनि आवाजमे प्याँ-प्याँ करैत छल। कनि-कनि ई खाके क्रैंकों आ दाँतदार पहियाक जटिल जालमे बदलि गेल।

एकरामे सँ आध सँ बेसी फर्श भरि गेल। दोसर माल-जालके ई सभ बिलकुल बुझयमे नहि आयल, एकर बाद हुनका सँ प्रभावित भेल। सबके सब स्नोबॉलक ड्राइंग देखबाक लेल दिनमे कम सँ कम एक बेर ते जरूर आबैत छल। एतय धरि जे मुर्गी आ बत्तख सेहो आयल। ओ एहि गपक खास ख्याल राखैत छल जे कत्तो ओकर पइर चॉकक दाग पर नहि पड़ि जाय। नेपोलियन टा अलग-थलग बनल रहल। ओ शुरू सँ अपना के पवनचक्कीक खिलाफ घोषित क' रखने छल। एक दिन ओ अचानके, बिना कोनो उम्मीद सँ देखहि लेल जा पहुंचल आ सायबानमे बुलैत रहल। ओ खाकक सभटा बारीक के गौर सँ देखैत रहल आ ओहि पर एक-दू बेर घुर-घुर केलक। ओ ओकरा कनखी सँ ध्यानपूर्वक देखैत रहल। अचानक ओ अप्पन टाँग उठैलक, खाक पर मूतलक आ एक्को शब्द बिना बाजल बाहर निकलि गेल।

पवनचक्कीक मामले पर पूरा बथान भीतर धरि बँटल छल। स्नोबॉल एहि गप सँ इंकार नहि करैत छल जे एकरा बनायब मोश्किल काज होयत। पाथरके खोदय पड़त, ओकर भीत ठाड़ भ' जायत आ एकर बाद डायनेमो आ तार के जरूरत पड़त। (एकरा कोना हासिल करबाक छल, स्नोबॉल ई नहि बतौलक) मुदा ओकर दाबी छल जे ई सभ साल भरिमे करबाक अछि। ओ घोषणा केलक जे एकरा बाद एतेक परिश्रमक बचत होयत, जान-माल के सप्ताहमे टीन दिन टा काज करैक जरुरत पड़त। दोसर दिस नेपोलियन ई तर्क देलक जे एहि कालक सबसें पैघ जरूरत अन्न-पइन उपजाबैक अछि, आ जों पवनचक्की पर समय बर्बाद करैत रहि गेलहुं ते सभके सभ भूखल मरि जायब। जान-माल सभ एहि नाराक अंतर्गत अपना के दूटा धड़ामे बांटि लेने छल। 'स्नोबॉल के वोट दियो, सप्ताहमे तीन दिन काज करू' आ 'नेपोलियन के वोट दियो आ भरल नाद पाबियो।' बैंजामिन टा एखन असगरे जान-माल छल जे कोनो दिस नहि झुकल। ओ दुनुक गप मानबा सँ मना क' देलक जे या ते बेसी खाना भेटत आ फेर पवनचक्की सँ मेहनतक बचत होयत। पवनचक्की वा पवनचक्की नहि, ओकर कहब छल, जिंदगी सदिक्खन पहिलुका जेना 'बदहाल'मे चलैत रहत।

पवनचक्कीक लेल विवादक अलावा, बथानक सुरक्षाक सेहो प्रश्न छल। ई नीक तरहे महसूस करल गेल छल जे मनुखके तबेलाक लड़ाईमे हरा ते देने छी, मुदा फेर सँ मिस्टर जोंस के घुरा के आनय के लेल दोसर आ पहिने सँ बेसी संकल्पक संग हमला भ' सकैत अछि। ऐना करैक लेल हुनका सभ लग ठोस कारण सेहो छल, क्याकि हुनकर हारक खबर देशक दूर-दराजक इलाका धरि पहुंच गेल छल आ पड़ोसी बथानक जान-माल आब पहिने के तुलनामे बेसी बैचैन छल। सदिक्खन जेना, स्नोबॉल आ नेपोलियन एक-दोसरा सँ असहमत छल। नेपोलियनक अनुसार जान-माल के जे सबसें बेसी जरूरी काज करबाक छल, ओ ई जे बंदूक आदि पाबि लेल जाय आ ओकरा चलाबैक लेल प्रशिक्षण लेल जाय। स्नोबॉल के कहब छल जे ओकरा बेसी सँ बेसी कबूतर बाहर भेजैत रहबाक चाहि जे पास-पड़ोसक बथानमे बगावतक लेल हुनका सभके उकसाबय। एक गोटा तर्क देलक जे जों ओ अप्पन रक्षा नहि क' सकत ते ई तय अछि जे हुनका हरा देल जाय आ दोसर गोटाक तर्क छल जे जों सभ ठाम बगावत भ' जाय, ते हुनका सभके अप्पन रक्षा करैक जरुरत नहि रहत। जान-माल पहिने नेपोलियन के सुनलक, फेर स्नोबॉलक गप सुनलक। ओ ई तय नहि क' सकल जे एकरामे कोन सही अछि, एकर बेजाय ओ अपना के ओहि गोटा सँ सहमत पाबैत छल जे हुनका लग नहि बाजैत छल।

आखिर ओ दिन आबि गेल जब स्नोबॉलक योजना पूर्ण भेल। आबय बला रवि दिन के हुए बला बैसकीमे ई सवाल मतदानक लेल आगू रखबाक छल जे पवनचक्की पर काज शुरू करल जाय वा नहि। जखन सभटा माल-जाल बड़का बखारमें जमा भेल ते स्नोबॉल उठल आ भेड़ सभके मिमियाहट सँ व्यवधान दैक बादो पवनचक्कीक बनाबैक समर्थनमे अप्पन कारण गिनाबय लागल। तखन नेपोलियन जवाब दैक लेल ठाड़ भेल। ओ बड़ मजामे बाजल जे पवनचक्की सिर्फ बकवास अछि आ कियो भी एकर पक्षमे वोट नहि दिये। ई कहि के ओ बैस गेल। ओ मोश्किल सँ तीस सेकेंडक लेल बाजल होयत आ ओ एहि गपक शायदे परवाह केलक जे ओकर गप कोन तरहे प्रभाव छोड़ने अछि। एहि पर स्नोबॉल अप्पन टाग पर उछलल आ भेड़ कैं, जे फेर सँ मिमियायब शुरू क' देने छल,

बिगड़ि के चुप करबैत, पवनचक्कीक पक्षमे भावपूर्ण अपील करय लागल। ता धरि जे जान-माल अप्पन-अप्पन सहानुभूतिमे बराबर-बराबर बंटल छल, मुदा एक्के पलमे स्नोबॉलक वाकपटुता ओकरा सभके पिघला देलक। आवेशपूर्ण वाक्य सँ ओ ओहि काल बथानक तस्वीर खींचलक, जखैन माल-जालक पीठ पर सँ घिनौना बोझ उतारि देल जायत। आब ओकर कल्पनाशीलता चारा काटय के मशीन आ कद्दू के दू फाँक करयबाली मशीन सँ आगू जा चुकल छल। ओ बाजल जे बिजली थ्रैशिंग मशीन, हल, हेंगा, लोढा चला सकैत अछि आ काटि सकैत अछि, फसलक गट्ठर बाँधि सकैत अछि। एकर अलावा, एहि सँ हर थान के अप्पन बिजली, इजोत, ठंडा आ गर्म पानी आ बिजलीक हीटर भेंट सकत। जब ओ अप्पन गप खत्म केलक जे एहि गपमे कोनो शक नहि रहल जे वोट केकर पक्षमे पड़त। मुदा अचानक तखने नेपोलियन उठल आ स्नोबॉल दिस अजीब जेना कनखी सँ देखैत बड़ जोर आवाजमे पिनपिनाहटक आवाज निकललक। एहन आवाज निकलैत ओकरा कियो नहि सुनने छल।

एहि काल ओतय बाहर दिस सँ भूंकहि के भयंकर आवाज आयल आ नौ टा पैघ-पैघ कुकुर, जे पीतल जड़ बला कॉलर लगौने छल,छलाँगें मारैत बखारमे घुसि आयल। ओ सीधा स्नोबॉल दिस लपकल। ओ ठीक समय पर अप्पन ठाम सँ कुदल आ एहि तरहे ओकर झपटैत पंजा सँ अपना के बचैलक। पल भरिमे ओ दरवाजा सँ बाहर छल, आ ओ एकर पांछां छल। एकदम भौचक आ डरायल अवाक माल-जाल एहि तरहे दृश्य के देखबाक लेल दलान पर भीड़ लगाके ठाड़ भ' गेल। स्नोबॉल सड़कक दिस सँ चारागाहमे सरपट दौड़ल जा रहल छल। ओ एत्तेक तेज दौड़ि रहल छल जतेक एकटा सुग्गैर दौड़ि सकैत अछि। मुदा ई कुकुर एकदम ओकर पांछां लागल छल। अचानक ओ झपटल आ ई लागल जेना ओ एकरा दबोच लेत। ओ फेर उठि के ठाड़ भेल आ पहिने सँ बेसी तेज सँ दौड़ैत लपकल। एक बेर फेर कुकुर बिलकुल ओकरा लग पहुंचि गेल। ओहिमे सँ एकटा ते स्नोबॉलक पूछड़ि अप्पन पंजामे पकड़ि लेने छल जे स्नोबॉल ठीक ओहि काल पूछड़ि के उमेठ के बचा लेलक। तखन ओ कनि आओर दम लगैलक आ किछु इंचक अंतराल सँ बथानक एकटा भूरि पार निकलि गेल आ फेर कखनो कियो ओकरा नहि देखलक।

मूक आ आंतकित जान-माल घुरि के बखारमे सरकि गेल। पल भरिमे कुकुर छलाँग लगबैत घुरि गेल। पहिने ते कियो कल्पना नहि क' सकैत छल जे आखिर ई जीव आयल कतय सं, मुदा जल्दिये एहि समस्याक समाधान भ' गेल। ई वहि पिल्ला छल जेकर नेपोलियन ओकर मां सँ आनि लेने छल आ गुपचुप पैघ करैत रहल। हालाँकि एखन ओ पूर्ण रूपेन जवान नहि भेल छल, ओ बड़ डील-डौल बला कुकुर छल, आ देखहिमे भेड़िया जेना खतरनाक लागि रहल छल। ओ नेपोलियन सँ सटि के ठाड़ रहल। ई देखल गेल जे ओ ओकरा आगू पहिना पूछड़ि हिला रहल छल, जेना दोसर कुकुर मिस्टर जोंसक आगू पूछड़ि हिलाबैक आदि छल।

नेपोलियन आ ओकर पांछां-पांछां कुकुर फर्शक उभरल हिस्सा पर चढ़ल, जतय पहिने अप्पन भाषण दैक लेल कखनो मेजर ठाड़ भेल छल। ओ घोषणा केलक जे रवि दिनक भोरक बैसकी आब नहि होयत। ओ बाजल जे ई कोनो जरूरी नहि अछि आ एकरा सँ समय के बर्बादी होयत अछि। भविष्य मे, बाड़क कामकाज सँ जुड़ल सभटा मामला सूअरक एकटा विशेष समिति द्वारा निबटायल जायत। एकर अध्यक्ष ओ अपने होयत। ई बैसकी गुप्त रूप सँ होयत आ बादमे एकर फैसला दोसरा के सुना देल जायत। माल-जाल तखनो रवि दिन भोर झंडाक सलाम करहि के लेल, 'इंग्लैंडक पशु' गीत गाबैक लेल आ सप्ताह भरि अप्पन आदेश लैक लेल एकत्र होयत, मुदा आब आओर बहस नहि होयत।

स्नोबॉलक निष्कासन सँ ओकरा धक्का पहुँचल, ओकर बाद जान-माल एहि उद्घोषणा सँ आओर निराश भ' गेल। ओहिमे सँ कतेक रास के जों सही तर्क भेंट जयतिये ते ओ एकर विरोध केने हेतिये। एतय धरि जे बॉक्सर अस्पष्ट रूप सँ परेशान भ' गेल। ओ अप्पन कान ठाड़ क' लेलक। अप्पन भालकेश के कतेक रास बेर हिलैलक आ अप्पन विचार के तरबीब दैक पुरजोर कोशिश केलक, मुदा आखिरमे ओ कहैक लेल किछु नहि सोचि सकल। अलबत्ता, खुद सुग्गैरमे सँ किछु बेसी स्पष्ट छल। पहिलुक पैंतमे बैसल चारि टा बलिशूकर असहमति के तेज हुंकार भरलक। चारूटा अप्पन पइर पर कूदि पडल आ एक संग बाजब शुरू केलक। मुदा अचानक नेपोलियनक चारू दिस बैसल कुकुर गहरायल, धमकी भरल गुर्राहट निकालक, जाहि सँ सुग्गैर चुप भ' गेल आ घूरि के बैसि गेल। तखने भेड़ सभ 'चारि टाँग नीक, दू टांग खराब' के भीषण जुगलबंदी शुरू क' देलक, जे पूरे पंद्रह मिनट धरि चलैत रहल आ ई कोनो भी चर्चाक सम्भावना के खत्म क' देलक। बादमे स्क्वीलर के बथानक दोसर माल-जालके नव व्यवस्थाक ल'क' बुझाबैक लेल भेजल गेल।

'कॉमरेड्स,' ओ बाजल। 'हमरा विश्वास अछि जे एतय ठाड़ सभटा माल-जाल कॉमरेड नेपोलियन के एहि त्यागक सराहना करैत चाहि, जे अपना उपर अतिरिक्त बोझ उठा लेने छैथ। ई नहि करू, कॉमरेड्स, जे नेतृत्व सँ

आनंद भेटैत अछि। एकर उलट ई एकटा गहीर आ भारी जिम्मेदारी अछि। एहि गप के कॉमरेड नेपोलियन सँ बेसी केकरो विश्वास नहि अछि जे सभटा जान-माल बराबर अछि। एहि गपक हुनका बड़ खुशी अछि जे अहाँ सभ अप्पन फैसला अपने करू। मुदा कखनो-कखनो अहाँ सभ गलतो फैसला ल'सकैत छी, कॉमरेड्स, आओर तखन हम सभ कतय रहब? मानि लियो, अहाँ सभ स्नोबॉलक पवनचक्कीक खयाली पुलावक चक्करमे ओकर पाछां चलैक लेल फैसला क' लेने हेतिये ते स्नोबॉल, जे आब हम जानैत छी, कोनो अपराध सँ कम नहि छल?

'ओ तबेलाक लड़ाईमे बहादुरी सँ लड़ने छल,' कियो बाजल, 'बहादुरी बेसी नहि अछि,' स्क्वीलर कहलक, 'निष्ठा आ आज्ञापालन बेसी महत्वपूर्ण अछि आ जतय धरि तबेलाक लड़ाईक सवाल अछि, हमरा विश्वास अछि, ओ समय बताओत जखन हमरा पता चलत जे एहिमे स्नोबॉलक भूमिका के कतेक बढ़ा-चढ़ा के बताओल गेल अछि। अनुशासन, कॉमरेड्स, कड़क अनुशासन! आजुक लेल यहि नारा अछि। एकता गलत डेग आ दुश्मन हमरा सभक माथ पर होयत। ई तय अछि कॉमरेड्स जे अहाँ सभ जोंस के घुरि के नहि देखैल चाहैत छी।

एक बेर फेर एहि तर्कक कोनो उत्तर नहि छल। निश्चित रूप सँ जान-माल जोंस के घुरि के नहि चाहैत छल। जों रवि दिनक भोरक काल बहस करहि सँ जोंस घुरि के आबि सकैत छल, ते ई बहस जरूर बंद हेबाक चाहि। बॉक्सर, जेकरा लग आब सोचैक-बुझैक लेल समय छल, आम राय एहि तरहे व्यक्त केलक, 'जों कॉमरेड नेपोलियन ऐना कहैत अछि, ते ई सही होयत' आ तखैन सँ ओ एकटा ध्येय बना लेलक, 'नेपोलियन सदिक्खन ठीक कहैत छथिन।' ई ओकर 'हम आओर बेसी परिश्रम करब' के व्यक्तिगत लक्ष्यक अलावा छल।

एहि काल धरि मौसम खुलि चुकल छल आ वसंतक कालक जुताई शुरू भ' गेल छल। ओ सायबान, जाहिमे स्नोबॉल पवनचक्कीक खाका खींचने छल, बंद क' देल गेल आ ई मानि लेल गेल जे खाका के जमीन पर सँ मिटा देल गेल अछि। सभ रवि दिन के भोर दस बजे सभटा जान-माल पैघ बखारमे जमा होयत छल आ सप्ताहक लेल अप्पन आदेश प्राप्त करैत छल। जनाब मेजरक खोपड़ी, जहि पर सँ मांस झड़ि चुकल छल, फलोद्यान सँ कब्र सँ खोदि के निकालल गेल आ झंडाक डंडाक नीचां एकटा ठूँठ पर ओकरा सजा देल गेल। झंडा चढ़ाबैक बाद आब माल-जाल सँ उम्मीद कल जाइत छल जे ओ बखारमे घुसय सँ पहिने खोपड़ीक आगू सम्मानजनक तरीका सँ जाय। आय-काल्हि ओ पहिने के तरहे एक संग नहि बैसैत छल। नेपोलियन,स्क्वीलर आ मिनिमस नामके एक दोसर सुग्गैरक संग उठल चबूतरा पर आगू-आगू बैसैत छल आ कविता रचयमे माहिर छल। पूरा नौ युवा कुकुर ओकर चारों दिस अर्धचंद्राकार घेरामे बैसैत छल। दोसर सुग्गैर के बैसय के ठाम पाछां छल। बाकी सभटा जान-माल ओका दिस मुंह क' के मुख्य बखारमे बैसैत छल। नेपोलियन रूखल फौजी आवाजमे सप्ताहक लेल आदेश पढ़ि के सुनबैत छल आ एक बेर 'इंग्लैंडक पशु' गीत गाबैक बाद सभटा जान-माल इम्हर-उम्हर भ' जायत छल।

स्नोबॉलक निकासीक बाद तेसर रवि दिन जान-माल के नेपोलियनक ई उद्घोषणा सुनि के किछु हैरानी भेल जे आखिरकार पवनचक्की बनाबैक होयत। ओ अप्पन विचार बदलहि के पाछां कोनो कारण नहि देलक, मुदा जान-माल के चेता देलक जे एहि अतिरिक्त काजक मतलब बड़ रास मेहनत होयत, एतय धरि जे हुनकर राशन कम करहि के जरूरत सेहो पड़ि सकैत अछि। अलबत्ता, खाका आ योजना एक-एक बारीकीक संग पहिने तैयार केल जा चुकल छल। पिछला तीन सप्ताह सँ सुग्गैरक एकटा विशेष समिति एहि पर काज क' रहल छल। दोसर कतेक रास सुधारक संग पवनचक्कीक बनयमे दू बरख लागैक उम्मीद छल।

ओहि साँझ स्क्वीलर माल-जाल के फराक भ' के बतैलक जे नेपोलियन दरसल कहियो पवनचक्कीक विरुद्ध नहि छल। एकर विपरीत, ई नेपोलियने छल, जे शुरू-शुरूमे पवनचक्कीक समर्थन केने छल, आ जे नक्शा स्नोबॉल अंडा सेबय बाली कोठलीमे धरती पर बनैने छल, सत ते ई अछि जे ओ नेपोलियनक कागज सँ चुरायल गेल छल। असलमे पवनचक्की नेपोलियनक दिमागक उपज छल। कियो पूछलक जे तखैन ओ पवनचक्कीक खिलाफ एत्तेक कड़ा विरोधमे क्या बजैत छल? एहि पर स्क्वीलर बड़ धूर्त लखाह देलक। 'ई ते', ओ नेपोलियन के चालाकी छल। ओ ऐना देखाह देत छल जे ओ पवनचक्की के खिलाफ अछि,जाहि सँ स्नोबॉल सँ पिंड छूटय। स्नोबॉल एकटा खतरनाक चरित्र छल आ गलत असर डालि रहल छल। आब स्नोबॉलक काँट साफ भ' चुकल अछि, ताहि सँ पवनचक्कीक योजना बिना कोनो बाधाक पूर्ण कल जा सकैत अछि। 'यहि,' स्क्वीलर बाजल, 'रणनीति कहलाबैत अछि।' ओ गोल-गोल घूमैत पुछड़ि ऐंठते आ ठहाका लगाबैत कतेक बेर 'रणनीति, कॉमरेड्स, रणनीति' दोहरैलक। जान-माल सभके पक्का पता नहि छल जे एहि शब्दक मतलब की होयत अछि। मुदा एक ते स्क्वीलर एतेक विश्वासक संग बाजल आ दोसर संयोग सँ तीनटा कुकुर ओहि काल ओहि ठाम छल जे धमकी भरल आवाजमे गुर्रा रहल छल, सभ कियो कोनो सवाल केने बिना ओकर स्पष्टीकरण मानि लेलक।

(क्रमशः)

मैथिली साहित्यमे जाति विमर्श

मैथिलीमे विमर्शक परंपरा अछि आ कोनो भी विषय पर गाम-घरक मचान सँ ल' क' सोशल मीडियाक सभटा प्लेटफार्म पर देखल जा सकैत अछि। यएह कारण अछि जे जखन जनवरी मासमे राष्ट्रीय राजधानी दिल्लीक प्रगति मैदानमे आयोजित विश्व पुस्तक मेलामे मैथिली भाषाक उत्थानक लेल किछु मैथिल अभियानी 'मैथिली मचान' नाम सँ पोथी के स्टाल लगैलक गेल, कतेक रास कार्यक्रम आयोजित केलक, ते संबंधित संस्था एक सौ टाकामे एकटा कैलेंडर रिलीज केलाह ते एकटा विमर्श आगू बढ़ल। एहि विमर्शमे दूटा गप भेल, पहिलुक विमर्श भेल मैथिली मचान द्वारा आयोजित एकटा कार्यक्रमक पैनलक सदस्यक लेल आ दोसर छपल कैलेंडरमे प्रख्यात साहित्यकारक फोटोक जाइतक मादे। एहि दुनू विषय पर अलग-अलग गोटे कैं फेसबुक पर भेल विचार-विमर्श आ ओहिसँ जुड़ल किछु चुनल टिप्पणीक बिन संपादित केने प्रकाशित क' रहल छी। जे विमर्श हिंदीमे भेल ओकरा तहिना प्रकाशित क' रहल छी। – संपादक

विमर्श–एक

कृष्णदेव झा

चित्रक उपर्युक्त शीर्षकक आशय? एकर अनेक ठाम व्याख्याक संग शेयर कयल गेल अछि।

टिप्पणी

सविता झा खान

हम त विद्वत पैनल पोस्ट केने रही ओकर व्याख्या मात्रे जातिक संदर्भमे होबय लागल, तहन सैह सही। बादमे एडिट कय देलौं शीर्षक ताकि मंथन करबा लेल सामग्री भेटैन लोक सबकेँ। लागि रहल अछि जे भोज नै करय सँ दालि बड़ सुरकय, आब ओ सब दालि बनबैत आ सुरकैत रहथु।

ओना व्याख्या सभक स्वागत अछि, हमर उद्देश्य सैह रहय, आब हमर सबहक यज्ञ पूर्ण भेल कनी आब हमहूं सभ बैसल बैसल दालि सुरकब आ बभना खबास राखब काज लेल। :-)

ओना एकटा डपोरशंख कुनु मनोज किछु नाम रहय से जेएनयू, डीयू के प्रोफेसर के 'रोड के छौंरा' कहि बतीसी निपोरि रहल छल, विद्यापति कैं छोट वा ब्राह्मण बुझि रहल छल, खुब डपटलौं त दिमाग ठीक भेलै, एहने एहने डपोरशंख सब आब मैथिल व्याख्याकार आ साहित्यकार बनि सोशल मीडिया पर छेड़ि कैं भरि रहल अछि, हुनके सभ लेल चुग्गा जरूरी।

विमर्श– दो

सविता झा खान

मचान त मात्र प्रेमक उपज छल, सबहक समान भागीदारी कैं सोच रहय, केकरो आधिपत्य नै मुदा विमर्श के दशा आ दिशा हमरा सबहक हाथमे नहि रहि किम्हरो आर तय होमय लागल। हम त' मात्र प्रतिक्रिया सँ दिमाग ठंडा करैत रही छद्म, पराश्रित, ड्राइंग रूम बुद्धिजीवी सबकेँ जे अनवरत जातिवादमे लेपित दोसरक तरबा चाटब अपन एकमात्र गोत्र आ मूल तय करैत छथि।

आधार छल: मृत, भाषा के 6 आ साहित्य के 6 आ चयनकर्ता रहैथ एक पैनल जाहिमे माननीया उषाकिरण खान, रामानंद झा रमण आ उदय बाबू (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता') छलाह। अंततः हम उदय बाबू जे ब्राह्मण छथि, सबसँ माननीय, आदरणीय ब्राह्मण अपन कर्म, मन, वचन सँ जे भाषा आ साहित्य दुनुमे सिद्धहस्त छथि हुनक चयन कैं संग आगू बढलहुं, वैह मानक। जाहि विद्वान साहित्यकार/पत्रकार सबकेँ दिल्लीमे मैथिली साहित्यिक गतिविधि कैं नाम पर कुकुर-बिलाड़ि जकां वर्चस्वक लड़ाई

सँ फुर्सत नै हो, दु टा मैथिली पोथीक ज्ञान नहि हो, नहिये चेष्टा हो ओ मात्रे जातिवाद के उजाहि उठा सकैत छथि आ भोज खाय लेल जत' तत' आ फोटो फेसबुक गतिविधि, बस अतबे कथा। मचान पर कियो नै टेरलक त पैर पटकि क कानय लगलाह।

विमर्श– तीन

संजीव सिन्हा

अपमान सँ हम नहि विचलित होइत छी। फेसबुक पर परसू मित्र प्रियभांशु एकटा पोस्ट लिखलनि कैलेंडरमे शामिल करल गेल 12 टा 'विभूति'मे सँ 11 टा साहित्यकार एकटा जाइत विशेष केँ देखल गेल (कैलेंडरमें शामिल किए गए 12 'विभुतियों' में से 11 साहित्यकार एक जाति विशेष के दिखे।')।

आ आगू हमरा मेन्शषन करैत ओ लिखलाह – 'हम पहिनो संजीव सिन्हा, ऋतेश पाठक संग कतेक रास मित्रक आगू ई मुद्दा उठोने रहि जे 'मैथिल', 'मैथिली' आ 'मिथिलांचल' केँ नाम पर एहि तरहक विशेष जाइतक दुकान चलायब ठीक नहि'। (मैंने पहले भी संजीव सिन्हा, ऋतेश पाठक सहित कई दोस्तों के सामने ये मुद्दा उठाया है कि 'मैथिल', 'मैथिली' और 'मिथिलांचल' के नाम पर इस तरह एक जाति विशेष की दुकान चलाना ठीक नहीं।')

एहि पर हम टिप्पणी कएलहुं– 'अहाँ जरूरी आ सार्थक प्रश्न उठैलहूं। 'मैथिली साहित्य महासभाक कार्यक्रममे हम एकर ध्यान राखैत छी। वक्ताक सूची देखब त 'पता चलि जाइत' (आपने जरूरी और सार्थक सवाल उठाया है। 'मैथिली साहित्य महासभा' के कार्यक्रमों में हम इसका ध्यान रखते हैं। वक्ताओं की सूची देखेंगे तो पता चल जाएगा।)

सविता जी आ अमित जी (संदर्भ–मैथिली मचान, विश्व पुस्तक मेला) कैलेंडर छपबैक बीक पहल केने अछि, हुनका सभ सँ चूक भेल अछि। विश्वास अछि जे अहाँ के गप पर ओ गौर करताह। (सविता जी आ अमित जी (संदर्भ– मैथिली मचान, विश्वर पुस्तक मेला) ने कैलेंडर प्रकाशित करके अच्छी पहल की है। उनसे चूक हुई है। विश्वास है कि आपकी बात पर गौर करेंगे।)

फेर हम दोसर टिप्पणी कएलहुं– सविताजी आ अमित जी के हम ठीक सँ जानैत छी। समर्पित मैथिल अभियानी छैथ। ई चूक अछि। जखन हम सक्रिय रहैत छी ते चूक होयत अछि। बस, आगू सँ एकर परिमार्जन होयत रहबाक चाही। '(सविताजी और अमितजी को मैं ठीक से जानता हूँ। समर्पित मैथिल अभियानी हैं। यह चूक ही है। जब हम सक्रिय रहते हैं तो चूक होती ही है। बस, आगे इसका परिमार्जन होते रहना चाहिए।')

हमर 'चूक' शब्दक प्रयोग सविताजी आ अमित आनंदजी कें एतेक अखरि गेलनि जे ओ फेसबुकपर हमरा विरोधमे घृणित अभियान चलाब लगलनि।

सविताजी लिखलीह– ''दु टा मैथिली पोथी के ज्ञान नहि'' ''ओ मात्रे जातिवाद के उजाहि उठा सकैत छथि'' ''भोज खाय लेल जत' तत' आ फोटो फेसबुक गतिविधि, बस अतबे कथा'' ''मचान पर कियो नै टेरलक त पैरपटकि क कानय लगलाह।''

अमित आनंद लिखलाह– ''कुकर्मी के पक्ष में ठार छी'' ''राजनितिक व्यक्ति छि आ राजनीति मात्रे करैत छि।'' ''आत्मचिंतन करू।''

हुनकर टीमक लोग सभ हमरा जातिवादी सिद्ध करय लागल। खोजि–खोजि क' लिंक सभ प्रस्तुत करय लगलनि जे हम कर्ण कायस्थ महासभाक आयोजनमे भागीदारी कएने रही।

बहुत विवाद होवय लागल त' अंतमे हम लिखलहुं – मैथिलीक मूर्धन्य कैलेंडर हमहूं लेने छलहुं। जखन एहिमे 12टामे 11टा एकटा जाति विशेषक साहित्यकार प्रस्तुत छथि, तखन एकरा चूक कहब जरूरी छै, हमरा विचार सँ अगिला साल एहि केँ परिमार्जित कएल जेबाक चाही। जं हमर बात अहां केँ गलत लागल, तखन हम खेद प्रकट करै छी।

मुदा एकर बादो लगातार हमरा विरोधमे लिखल जा रहल अछि– ''मामला ब्राहमण बनाम देवान जी मे फंसल – पेंच आसान नै, देवान जी पेंच फंसाबयमे माहिर'' ''सिन्हा आ वर्मा के कर्ण कायस्थ नै मानी – ई श्रीवास्तव कायस्थ होइत छैथ''। आइ भोरमे बहुत लोगक कॉल आएल छल। ओ कहलनि जे देख लेलहुं नै, मैथिली साहित्यितक परिदृश्यक विद्रूप चेहरा। एहि लेल हम सभ सक्रिय नहि होइत छी। हम हुनका कहलहुं जे सभ ठाम नीक आ बेजाय लोग होइत छै।

किछु लोग कहलाह जे अहां पांच बरख सँ पूर्णकालिक मैथिली साहित्यिक गतिविधिमे लागल छी कतेक लोग अहांक समर्थनमे लिखलाह? हम हुनका कहलहुं जे एहि सभ सँ हमरा कोनो फर्क नहि पडैत अछि। जतय नीक बुझाएत ओतय प्रशंसा करब आ जतय खराप लागत ओतय आलोचना करब। हमरा अपन विवेक पर भरोसा अछि।

ई कोनो पहिल बेर हमर अपमान नहि अछि, अनेक बेर भ' चुकल अछि। एहि सभ सँ हम अपन मार्ग सँ विचलित नहि भ' सकैत छी। एक बात हम स्पष्ट क' देब' चाहैत छी जे तमाम कुचेष्टाक बादो हम जातिवादी लोकक मंसूबा कामयाब नहि होबय देब। हम एक शब्दि ब्राह्मणक खिलाफ की, कोनो जातिक विरोधमे नहि लिख सकैत छी। आ नहि हम गारि लिखि सकैत छी।

हम सीतामढी सँ छी। ई मैथिलीजीक प्राकट्यस्थहली अछि। हमर मातृभाषा अछि मैथिली, आ एकर उत्थान लेल हम सगरो झंझावातक बीच लागल रहब।

विमर्श-चारि

रमण कुमार सिंह

मैथिली मचान आ ओकर तमाम आयोजक एहि खातिर बधाई के पात्र छथि, जे ओ सभ विश्व पुस्तक मेला में मैथिली पोथी सभ कें एगो मंच देलनि। मुदा जाहि तरहें पुस्तक मेलामे घटनाक्रम भेल आ ओकर बाद ई बहस जेहन दिशा में आगू बढ़ि रहल अछि, ओ क्षुब्ध करैत अछि।

सभ सँ पहिने ते हमरा लगैत अछि, जे ई मैथिली पोथी के बिक्री के बढ़ावा देबाक नहिं, बलु आत्मप्रचार, आत्मप्रशंसाक आ जातिवादी एजेंडा के आगू बढ़ेबाक कोशिश छल। जों केओ मैथिली मचानक कैलेंडर जँ एगो जाति विशेषक बेसी लेखकक फोटो लगेबाक आरोप लगेलनि अछि, हुनक आलोचना कोना गलत नहिं छनि। यदि केओ ई सफाई द' रहल छथि, जे मैथिली लेल जैह लोक काज करताह,हुनके ने फोटो हेतै, त' हुनका सँ हम पूछय चाहब जे की प्रबोध नारायाण सिंह आ अणिमा सिंहक मैथिली सेवा केकरों सँ न्यून अछि?

फेर मैथिली मचानक मुख्य आयोजक केर फेसबुक पर ई पोस्ट (पुरा ब्राह्मण पैनल अछि, एकदम शुद्ध, खांटी) हुनक उद्देश्य कें स्पष्ट करैत अछि। एकदम जातिवादी अहंकार सँ भरल ई पोस्ट बहुत रास लोक कें क्षुब्ध कयलक। हम हुनका सँ पूछय चाहैत छी, जे ई पोस्ट लिखैत की हुनका मैथिली के ओहि वरिष्ठ, साहित्य अकादेमी पुरस्कार सँ सम्मानित लेखक सभ केर खयाल नहिं अयलनि, जे हुनका मान-सम्मान दैत छथिन। हुनका सभ कें ई केहन लागल हेतनि? हम जानय चाहब जे एहि पर हुनका सभ के की कहब छनि। जातिवादी एजेंडा के मादे एगो उदाहरण ईहो अछि, जे मैथिली मचानक स्टॉल पर जखन पहिल बेर हम गेल रही और सविता झा खान जी सँ हमर गप भेल छल, तो ओ हमर नाम में सिंह उपनाम सुनि तुरंत पूछलनि, जे की अहां सोइत छी, जखन हम नैमे उत्तर देलियनि, त' ओ कहलनि जे 'सिंह' सुनि हमरा ई बुझाइल। एकटा पोस्टमे इहो पढबामे आयल जे ओ लोकनि अपन पाइ खर्च करि के ई कैलेंडर छपौलनि। हमर प्रश्न अछि, जे की अपन पाइ सँ कैलेंडर छपा के ओ मुफ्तमे बांटि देलखिन? नहि, एक-एक कैलेंडर के लोक सभ सँ मैथिली लेखकक नाम पर सौ-सौ टाका लेलनि। तखन एकरा खर्च करब नहि, लाभ कमेबा लेल कयल गेल निवेश कहल जेबाक चाही। सेवे हम इहो पूछय चाहब, जे जाहि लेखक सभक फोटोक उपयोग एहिमे कयल गेल अछि, ओहि लेखक अथवा हुनक परिवार कें एकर रॉयल्टी ओ सभ देथिन? कोनो वस्तु जे लोक पाइ लगाके कीनैत छथि ओकर गुण-दोष पर टिप्पणी करब, ओकर आलोचना करब हुनकर हक होइत छन्हि।

दोसर गप, ओ सभ विभिन्न लेखक आ प्रकाशक कें अपन-अपन पोथी पठेबा लेल विभिन्न माध्यम सँ सूचना देलखिन, मुदा ई नहि बतेलखिन, जे हुनक स्टॉल छोट छनि।सरकार द्वारा बनायल जाय बला खैरात शौचालयो सँ छोट। नतीजा, सविता जीक शब्दमे "लोक सभ एकरा गोदाम बुझि लेलक अछि आ देखियौ ने केओ-केओ त अपन पोथी के डेढ़-डेढ़ सौ कॉपी पठा देने अछि।'' मैथिली मचानक जं उद्देश्य असलमे पोथी कँ बिक्री के बढ़ावा देब छल त' पोथी कँ सर्जक (लेखक) लोकनि कँ अपमानित करबाक कोन बेगरता छल?

तेसर गप, मैथिलीमे के-के लीखि रहल अछि, हुनका तेकरो पूरा ज्ञान नहि छनि, हमरा तेहने सन बुझायल। पोथी कीनय बला आम पाठक कँ केओ ई बताबै बला नहि छल, जे कोन पोथी बेस बढ़िया अछि। एहनामे लोक स्वयं देखि-परखि के पोथी चुनि सकैत छल, मुदा तेकरा लेल नहि ते जगह ओतय छल आ ने तेहन माहौल। ओतय हमेशा या ते सेल्फी सेशन चलैत छल अथवा आत्म प्रचार लेल लाइव। बादमे जखन हुनका ई अनुभूति भेलनि, त' ओ फेर पोस्ट लिखलखिन जे आइ सँ पोथी लोकार्पण आ पब्लिसिटी स्टंट नहि होयत। एकरा शुरू के केने छल? हमरा बुझायत अछि जे एकर कारण एहि पोस्ट सँ एक दिन पहिने भेल तीन पोथीक लोकार्पण ामे छिपल अछि। अहांक मंच सँ केओ दोसर सूर्खी लूटि कँ चल जाइत त' दुख आ तामस हैब स्वाभाविक थिक।

चारिम गप, मेला कँ दोसरे दिन सँ लोक सभक ई शिकायत सुनबामे आबय लागल जे मैथिली मचानक आयोजकक व्यवहार बहुत अपमानजनक छनि। एहन शिकायत करीब पचासो लोक कयने हेताह। हम हुनका सभक नामक खुलासा एतय नहि करब।

पांचम गप, लोकक आलोचना कें सकारात्मक रूपमे लेबाक बदला अपमानित करब शुरू क' देल गेल। ई कोन संस्कार आ संस्कृति अछि? की एहन बोली-भाषा आ व्यवहारक बल पर मिथिला आ मैथिली के विकास संभव अछि? दुखद त ई अछि वरिष्ठ रचनाकार सभ एहि घटनाक्रम पर चुप छथि। जं हमर कहब गलत हुअय त' वरिष्ठ लोक हमारा डांटि सकैत छथि। छगुंता एहु बातक अछि जे किछु नवतुरिया रचनाकार जिनका सँ प्रगतिशील आ लोकतांत्रिक विमर्शक अपेक्षा छल, ओहो सभ एहि जातिवादी एजेंडाक समर्थन क' रहल छथि। हालांकि एहन लोकक संख्या अल्प अछि। बेसी नवतुरिया सभ कें ई सभ पसंद नहि हेतनि, से हमरा भरोस अछि।

पांचम गप, पटना स्थित जाहि दलित लेखक पर सविता जी टिप्पणी कयने छथिन हुनक मैथिलीक मादे प्रतिबद्धता

आ निष्ठाक बारेमे हुनका संभवत: बूझल नहि छनि। हुनकामे ई व्यावहारिक ज्ञानो के अभाव बुझाइत अछि जे सरकारी विभागमे केओ दोसर विभागमे दखल नहि द सकैत अछि। भाषायी अकादमी, साहित्य आ उच्च शिक्षा शिक्षा विभागमे अबैत अछि।

आ अंतमे कहय चाहब जे मैथिली मचान पूरा मैथिली आ मिथिला नहि थिक। आ अहंकार त' रावण सन विद्व ानो के ढहि गेलय। केकरो अपमान करब हमर अभीष्ट नहि। जं हमर पोस्ट सँ केकरो ठेस पहुंचय त' हम क्षमाप्रार्थी छी।

टिप्पणी

रवीन्द्र दास

मैथिली मचान के आयोजक सविता जी के बधाई मुदा आब मैथिली साहित्य माने जातिवादी एजेंडा - सब कार्यक्रम, विचारगोष्ठी, पुरष्कार समिति, आ आंदोलनमे देखल जा सकैत अछि सँ सच बात अछि जे मैथिली भाषा-साहित्यमे प्रकाशित आ पुरस्कृत काज बेसी ब्राह्मण ाहि केर अछि मुदा एकरा लेल ब्राह्मणहि केँ दोष देल जाय ई उचित नहीं।

प्रवीण नारायण चौधरी

मैथिली भाषा-साहित्यमे प्रकाशित काज यदि बेसी ब्राह्मणहि केर अछि ताहि लेल गैर-ब्राह्मण केँ मन छोट नहि होबक चाही। बल्कि एहि विन्दु पर मन्थन कयल जाय जे अन्य जातिक लोकमे सेहो बेसी सेवा भावना आ रचनाकर्मक संग साहित्यिक सृजन दिस कोना आकर्षण उत्पन्न कयल जाय। कोना बेसी सँ बेसी डा. तारानन्द वियोगी समान पुत्र मिथिलाक धरती सँ आगू अबैथ - ताहि दिशामे मंथन बेसी उचित होयत।

अमित आनंद

एखन हम सभ मैथिली मचान पर मैथिली लेखकक पोथीक संयोजनमे लागल छि आ संगहि ओकर हिसाब किताबमे ताकि बिना बेशी विलंब केने हुनकर सबके खातामे पहिल बेर पोथीक मादे पाय पहुंच जाए। पहिल बात कैलेंडरक मादे बता दी ई तैयार केला प्रो उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', पद्मश्री उषाकिरण खान आ डॉ. रामानंद झा रमण। हाँ आब अहाँके हिनका पर विश्वास नै त' की कहल जाय। इहो बता दी ई तीनों मैथिली स्तंभ क कोनो दिक्कत नै अछि आ अहाँके परेशानी अछि। एक सवाल अहाँ सँ पूछी जे की करैत रही एत्ते साल सँ अहाँ सब मैथिली के पुरोधा जे एकटा स्टॉल नै लगा सकलौं विश्व पुस्तक मेलामे। दिल्लीमे बस राजनीति। मोन परैत अछि पिछला साल सहरसा सँ महेंद्र बाबु फ़ोन केने छलाह एहि विश्व पुस्तक मेला क मादे जे अमित, हमर पोथी सेहो अहाँ सँ ल क राखी दियौ मैथिली स्टॉल पर। पर दुर्भाग्य जे एक्को स्टॉल नै छल।

रमन जी, आब अहाँके एहि पोस्ट पर एक बात आरो, अहाँ 5 सँ बेशी बेर फोन केलौं कुनु पोथी के लोकार्पण क मादे, जे हमरा समय नै अछि आदि आदि, जे नै भेल। ताहि कारण ई फ्रस्ट्रेशन।

आ, इहो बता दी हमर गाम महिषी अछि, राजकमलक कुल मे, तें सब बात बुझैत छि, बस मैथिली के खवास छि।अपने सब सँ ई अपेक्षा जे अगिला साल सँ मैथिली भाषा क 5 स्टॉल लगाउ, आ सामाजिक समीकरण क पुष्ट करू साहित्य मे! विद्वान आ विदुषी के कुनु जाति नै होयत अछि ई स्पष्ट बुझैत छि हम सब। विद्वान सर्वत्र पूज्यते।

रमण कुमार सिंह

फ्रस्टेशनमे हम कहियो नै रहैत छी। जाहि पोथी के लोकार्पण मादे कहने रही ओ भाइ रामलोचन ठाकुर द्वारा अनूदित विभूतिभूषण मुखोपाध्याय कर पोथी अयाची संधान छल। पोथी छपी के अयले त देखल जे ओहमे फोन्टक गड़बड़ी केँ कारण गलत छपाई भ गेल छैक। ओ पोथी फेर सँ छपि रहल छैक। त' जखन हम पोथी दइए नहि सकलहुं त हमारा फ्रस्टेशन कथी के हैत?

दोसर गप, लेखकक काज थिक लिखब आ प्रकाशक, वितरक आ विक्रेता केर काज थिक पोथी बेचब। जं अहां एहि भूमिकामे परिवर्तन चाही त हमरा अहांक चुनौती स्वीकार अछि, बशर्ते अहां सभ अगिला साल धरि पांच-पांचो टा मौलिक मैथिली पोथी छपा के दियअ। पांच टा स्टॉल बिना पोथी के त नहि खुजत ने?

तेसर गप, विश्व पुस्तक मेलामे कोनो पहिल बेर मैथिलीक स्टॉल नहि खूजल अछि। पता करि लीयअ।

दिलीप कुमार झा

जातिवादी मानसिकता कतहुँसँ परिलक्षित हुए निंदनीय अछि।हँ,ब्राह्मण एकटा जाति के रुपमे साफ्ट टारगेट अछि। ई केना भ' रहल अछि जे ब्राह्मण द्वारा कयल कोनो राष्ट्रीय,अन्तर्राराष्ट्रीय किर्ति हुनक व्यक्तिगत छनि आ कोनो ब्राह्मण द्वारा कयल गेल कोनो अलोकप्रिय काज सम्पूर्ण जातिक भ' जाइछ! सबिता झा जे मैथिली मचानक माध्यमसँ काज केलनि अछि अति प्रसंशनीय अछि।भाई रमणजी मैथिलीक एकटा उत्कृष्ट कवि छथि,हम व्यक्तिगत रुपसँ हुनक प्रसंशक छी,जँ हुनक भावना कतहुँसँ आहत भेल अछि त' संग्यान लेल जाय।जय मैथिली।

बैद्यनाथ झा

मैथिली मचान: नीक बात।मुदा हमरा सभ कें ई नहि बिसरबाक चाही जे शरदिन्दु चौधरी बरसों तक पटना पुस्तक मेलामे मैथिलीक सेवा करैत रहला, के-के खोज कलकन्हि? भाइ एतय सभ आत्म विज्ञापनमे लोक लागल रहैत अछि। फेसबुक पर बहुत कम काल कियो दोसरक रचना दैत हेथिन्ह। जाति कय बात छोड़ू। हम सभ उपजातीय बन्धनमे जकरल छी।

सविता झा खान

"खैरात के शौचालय"!! मैथिली

के अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति के इ विवरण? अहांक सब परिचय भेंटि गेल। प्रभु अहांक इहो शिकायत रहय जे हम अहांक फेसबुक फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज चुकल छी, प्लीज एक्सेप्ट क ली। पोथी विमोचन खटाईमे परि गेल। कते दुख सहब आब अहां? आह! शौचालयमे अपन पैर राखबाक आभार, मुदा दालि नै गलल अहांक। बुझैत छी अहां आक्रोश में छी।

केदार कानन

रमणजीक पोस्ट के गँभीरतासँ मनन करबाक बेगरता अछि, हम हुनका सँ सहमत छी।

विभूति आनंद

हम सभ सुदूरमे बैसल गदगद। मुदा रमण जी जे-जे लिखलनि, अचंभित करैछ।

सतीश वर्मा

ई खुशफहमीमे कियो न रहियो जे मैथिली मने ब्राह्मण, पांडित्य आ लालित्य होईत अछि। मैथिली बहुजनक भाषा थिक, ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ एहि भाषा पर अनेरो अपन सर्वाधिकार के गुमानम रहैत छैक... रमणजी सँ सोलह आना सहमत।

रोमिशा झा

साहित्य हरदम जाति धर्म सँ ऊपर मनुष्यताक संवाहक होइत अछि आ भाषा कखनो जातिविशेषक नै होइत अछि ताहि सँ एहन विषय अगर उठि रहल अछि तँ ई भाषाविशेषक लेल चिंतनीय।

विमर्श-पांचम

अरविन्द दास

मैथिली के अजेंडे में पिछड़े-दलित क्यों नहीं

"इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में भी यह सवाल उसी रूप में मौजूद है कि मैथिली भाषा-साहित्य में ब्राह्मणों और कर्ण कायस्थों की उपस्थिति ही सब जगह क्यों नजर आती है''

बीसवीं सदी के पहले दशक में यह राय कायम थी कि मैथिली केवल ब्राह्मणों और कर्ण कायस्थों की भाषा है। मैथिली महासभा (1910) ने इस अवधारणा की पुष्टि की। मैथिली भाषा के प्रचार-प्रसार और समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए बनाई गई इस सभा में केवल पंजीबद्ध मैथिल ब्राह्मणों और कर्ण कायस्थों का प्रवेश सुरक्षित था। फिर समाज के हाशिए पर जो लोग थे वे कहां थे, जिनकी भाषा मैथिली थी, जो बहुसंख्यक थेध इस सवाल का जवाब मुख्यधारा के भाषाई इतिहास में नहीं मिलता।

वर्ष 2004 में मैथिली को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कर भाषा का दर्जा दिया गया, पर दुर्भाग्यवश, इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में भी यह सवाल उसी रूप में मौजूद है कि मैथिली भाषा-साहित्य में ब्राह्मणों और कर्ण कायस्थों की उपस्थिति ही सब जगह क्यों नजर आती है जबकि पूरे मिथिला भू-भाग में यह बोली ओर समझी जाती रही है।

पिछले दिनों पहली बार दिल्ली स्थित एक स्वयंसेवी संस्था ने 'मचान' नाम से विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली में मैथिली के प्रकाशकों का स्टॉल लगाया। इसे लेकर दिल्ली में रहने वाले मैथिलीभाषियों में काफी उत्साह था। 'मचान' ने एक कैलेंडर जारी किया जिसमें मैथिली के साहित्यकारों में 11 ब्राह्मण और एक कायस्थ रचनाकार की चर्चा थी। सवाल है कि क्या मैथिली आधुनिक काल में एक भी गैर द्विज रचनाकार तैयार नहीं कर पाईध माना कि नागार्जुन, राजकमल चौधरी, हरिमोहन झा आदि रचनाकारों की प्रगतिशीलता, प्रतिबद्धता ने मैथिली साहित्य को एक नई धार दी, उसे आधुनिक रंगों में रंगा। पर सवाल यह भी उठता है कि 'बलचनमा' (मैथिली) और 'हरिजन गाथा' (हिंदी) लिखने वाले नागार्जुन की प्रतिक्रिया इस कैलेंडर को लेकर क्या होती या ब्राह्मणवाद पर प्रहार करने वाली 'खट्टर ककाक तरंग' जैसी अद्वि तीय कृति रचने वाले हरिमोहन झा इसे किस रूप में देखते।

इसी मंच से 'मिथिलाक लोक-संसार में पर्यावरण संरक्षण' पर हुई बहस में वक्ताओं में सब एक ही जाति विशेष के विद्वान थे। लोक-संसार की यह चर्चा लोक की अवहेलना करके कैसे हो सकती है। गौरतलब है कि इस विमर्श को 'मैथिली-भोजपुरी अकादमी' और 'नेशनल बुक ट्रस्ट (एनबीटी)' का सहयोग प्राप्त था। लोकतांत्रिक भारत में सरकारी सहयोग से हो रहे इस तरह के विमर्शों में हाशिए के समाज की भागीदारी न होना आयोजकों की मंशा पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है।

प्रसंगवश, इस बार मैथिली के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित, भाषा वैज्ञानिक उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' पुस्कृत कविता पुस्तक 'जहलक डायरी' की प्रस्तावना में लिखते हैं, 'पिछले पचास वर्ष के साहित्य जीवन में मैं ऐसे किसी से नहीं मिला जो मैथिली के लिए प्राण समर्पित कर सके। हमारे पास कोई पोट्टी श्रीरामुलु नहीं हैं।' इसी संदर्भ में यह भी याद किया जा सकता है कि जिन करीब 50 साहित्यकारों को मैथिली में साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला है, सभी उच्च जातियों से ही आते हैं।

मैथिली भाषा के आधार पर अलग राज्य बनाने का आंदोलन कई बार उठ कर बैठ गया। यह जन आंदोलन का रूप लेने में असमर्थ रहा है। राजनीतिशास्त्रियों ने इसके कारण के रूप में मैथिल ब्राह्मण ों व कर्ण कायस्थों की संस्कृति और गैर ब्राह्मणों और गैर कायस्थों की संस्कृति में फर्क को रेखांकित किया है। कह सकते हैं कि मैथिली भाषा आंदोलन से बाकी मैथिलों का कोई लगाव नहीं है।

इतिहासकार पंकज कुमार झा लिखते हैं, 'आधुनिक काल में, ख़ास कर आजादी के बाद विद्यापति जिस 'गौरवशाली मैथिल संस्कृति' के प्रतीक-चिह्न बन कर उभरे हैं उसमें गैर-द्विजों एवं ग्रामीणों की भागीदारी लगभग नगण्य है।'

साहित्य जब राजनीतिक चेतना से शून्य हो जाता है तो किस तरह की परिस्थिति पैदा होती है, उसे राजकमल चौधरी ने अपनी एक कविता 'कवि परिचय' में इस तरह व्यक्त किया है: 'कविता हमर काँचे रहि गेल। एहि जारनि सँ उड़ल कहां धधरा / व्यथा कहब ककरा / कथा कहब ककरा (कविता मेरी कच्ची ही रह गई / इस जलावन से आग की लपटें कहां उठीं / किससे अपनी व्यथा कहें।

टिप्पणी

राजेश पासवान

देशी भाषायों की राजनीति करने वाले अपनी अपनी जातियों के गिरोह चलाते है। भोजपुरी के साथ भी ऐसा ही है।

सविता झा खान

किसी भी लेख का प्राण और अर्थ उसकी तथ्यात्मक सत्यता और मंशा में होती है। इसमें तथ्य गलत हैं, अकादमी का कोइ सहयोग व भागीदारी संपदा के लिये नहीं थी। वैसे विमर्श जब जातियता के अनावश्यक जहरीले बीज से किसी भी प्रांतिय भाषा के विश्व मंच पर रखे डेग को तोडना ना हो तो समीचीन हो सकेगा। वैसे जिन लेखक का नाम (उदय नारायण सिंह नचिकेता) यहां दलित वर्ग के सकारात्मक परिप्रेक्ष्य में लिया गया हैं कैलेंडर के भाषा और साहित्य विषारदों को, उन्हीं ने चुना है। मंशा मैथिली भाषा के लिये वैसे भी नकारात्मक प्रतीत हो रही है क्यूंकि वह सिर्फ मचान नहीं मैथिली मचान था जहां भारत और नेपाल से तकरीबन सभी दलित लेखकों की पुस्तकें शामिल थीं और बिकीं भी। बिना तथ्यातमक पडताल के, जल्दबाजी में निष्कर्ष और छपाने की हरकत एक गंभीर भाव और विमर्श पर प्रश्न चिन्ह खडे कर रही है।

कमलेश वर्मा

आपने एक खतरनाक सवाल उठा दिया है। उस क्षेत्र में मुसलमान भी रहते हैं। भाषा से क्षेत्र का संबंध होता है, उस क्षेत्र की एक-दो जातियों का केवल नहीं। 'जाति के प्रश्न' असुविधाजनक होते हैं, मगर उनमें अनेक सच्चाइयाँ मौजूद होती हैं।

पुष्य मित्र

आपकी इस बात से सहमत हुआ जा सकता है कि लंबे समय तक मैथिली के सरकारी सामाजिक आयोजनों में सवर्णो का प्रभुत्व रहा है। मगर आज जब सत्ता से लेकर समाज तक में हर जगह गैर सवर्ण मजबूत हैं, तब भी ऐसा क्यों हो रहा है। ऐसे में सवाल यह भी है कि गैर सवर्णो की अपनी राजनीति में उनकी भाषायी पहचान का कितना महत्व है। वे क्यों भाषाई पहचान के लिये संघर्षरत नहीं हैं। क्यों उनकी लड़ाई सिर्फ सत्ता केंद्रित है। उनके एजेंडे में कब भाषा और संस्कृति आएगी।

सच तो यह है कि आज हमलोग मैथिली के लिये अधिकार उस सत्ता से मांग रहे हैं, जिन पर पिछड़े काबिज हैं। पटना में भी और दिल्ली में भी। पटना में तो 27 सालों से है। मैथिली क्षेत्र की राजनीति में भी कई दशकों से पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक काबिज हैं। फिर भी यह सत्ता न मैथिली के लिये कुछ कर रही न गैर सवर्ण मैथिलों के लिये। इसलिये इस चूक को सिर्फ सवर्णो पर फेंक कर काम नहीं चलाया जा सकता।

कुमार पद्मनाभ

100 प्रतिशत सहमत पुष्यमित्र जी। मंडल गैंग मैथिली के ख़िलाफ़ दुष्प्रचार किए, जबकी ग़ैर ब्राह्मण ही अधिकतम मैथिली बोलते हैं

सविता झा खान

आश्चर्य यह भी है कि हरिमोहन झा, सुभद्र झा, यात्री और राजकमल चौधरी को खासकर उनकी रचनाओं के तेवर और विषय वस्तु को देखते हुए क्या महज एक जाति विशेष के तौर पर देखा जायेगा? वैसे कैलेंडर के तमाम बाकी भाषाइ-साहित्य के विद्वानों के विषय में भी यही सवाल खड़ा होगा? क्या यात्री और राजकमल दलित और पिछड़े के हित में और प्रतिनिधि नहीं माने जायेंगे। आश्चर्य ही है और मंशा साफ है।

राज झा

कहीं बोर्ड लगा था क्या दलित पिछड़ों का आना मना है या उनकी किताब नहीं होगी। क्या लिखने वाले ने यह देखा था की पिछले वर्षो में प्रकाशित कितनी पुस्तकों का आयोजन था। भाषा को धर्म और जाट पात का आवरण देना मूर्खता है। इसी खींचा तानी में इन लोगों ने एक भाषा और संस्कृति की हत्या करदी। घिन्न आते है ऐसी सोच पर

सविता झा खान

मैथिली मचान पर भागीदारी और प्रतिनिधित्व सभी वर्गो का था और रहेगा सभी लाभान्वित भी हुए। फिर भी हार्दिक खुशी है कि मैथिली मचान ऐसे प्रश्नों को उठाने में एक एजेंट बन रहा है। लेखक को खासकर बधाइ कि उनहोंने बगैर तथ्यों को पडताल किये ही सही सवाल खड़ा किया। साथ ही आशा है कि लेखक दिल्लीमे हाल ही में मनाये गये कायस्थ महासभा और उसमें लेखकों की भागीदारी पर भी प्रश्न खडे करेंगे। 21 वीं सदी जाति महासभा की नहीं होनी चाहिये।

राज झा

(दी, हमारा नहि लागैत अछि जे एकरा जवाब देबाक चाहि... हम एहि तरहक लोक सँ परेशान आ थाकि गेल छी। ओ सभ किछु क' राजनीतिक दृष्टि सँ देखैत छैथ) Di..i do not think this

deserves a reply... I am sick n tired of these people. They have only political lens to everything.

सविता झा खान

(ई एक संग आबय के आ समसामयिक के बहस करबाक लेल सबसं नीक समय अछि। एकरा सँ कतेक रास मनगढंत गप स्पष्ट होयत) This is a good time to come together and discuss the relevant. It will clarify many myths in the process.

अविनाश दास

मैथिली मचान इस आलेख को व्यक्तिगत न ले। यह पूरे समाज और भाषा की व्यापक और ज़रूरी चिंता है।

रवींद्र दास

गैर सवर्ण जिस तरह राजनीति में सक्रिय हैं बिहार में उनकी वैसी सक्रियता साहित्य व कला संस्कृति को लेकर क्यों नहीं दिखती है और इसमें सवर्णो का क्या दोष स अधिकतर साहित्यकार जीवन भर अपनी एक भी पुस्तक छपवा नहीं पाते स पुरस्कारों की लड़ाई उसके बाद शुरू होती है

प्रवीण झा

मैथिली मचान फेर सँ एहि लेखमे अप्रासंगिक भेल, मुदा अहाँ के दिलचस्पीके कद्र करैत छी। हम चाहैत छी जे अहाँ नागार्जुन आ नचिकेता जी के बदला दलित लेखक कें खास कें उद्धृत करूण हालाँकि, हम महसूस करैत छी, जखन हम केकरो पक्ष लैत छी, हम कारण के कमजोर करैत छी। हसिया सँ बहरायल लोक दिस सँ प्रयास हेबाक चाही। मुदा, 'लुत्ती लगेनाई' एप्रोच ठीक नहि... (Maithili machaan again seems irrelevant in this article, but respect your concern. I wished specific mention to Dalit authors rather than people like Nagarjun and Nachiketa jee. Somehow I feel, when we try to appease or take the guard, we just weaken the cause. The efforts have to come] and actually do come from the marginalised. But, overall, inspite of a typical 'लुत्ती लगेनाई' approach, its an important question on Akademi.)

कुमार पद्मनाभ

इस तरह के आर्टिकल में यह क्यों नहीं पूछा जाता कि कितने प्रतिशत ग़ैर ब्राह्मण मैथिली मंन लिखते हैं। मिथिला क्षेत्र में अधिकतम ग़ैर ब्राह्मण कौन सी भाषा बोलते हैं? मैथिली... फिर वे लोग मैथिली साहित्य सृजन में 10 प्रतिशत से भी कम भागीदार क्यों है। इस तरह के आर्टिकल में इस बात पर शोध ज़रूरी है।

अरविन्द दास

दो-तीन किताबें हैं पद्नाभ जी, मौका मिले तो देखिएगा... एक 70 के दशक में राधाकृष्ण चौधरी की है- मिथिला इन द ऐज ऑफ़ विद्यापति (Mithila in the age of Vidyapati), दूसरी इसी दशक में पाल ब्रास की है- लैंग्वेज, रिलिजन एंड पॉलिटिक्स इन नार्थ इंडिया (Language, Religion and Politics in North India (एक अध्याय अछि मैथिलीमिथिलाक ऊपर) और एक हाल की किताब है मिथिलेश झा की- लैंग्वेज, पॉलिटिक्स एंड पब्लिक स्फीयर ओएँ नार्थ इंडिया (Language Politics and Public Sphere in North India...)

प्रवीण झा

पोट्टी श्रीरामुलु जी दरअसल हिंदी में भी नहीं है। हिंदी साहित्य अकादमी का भी प्रतिशत देखा जा सकता है। मैं अब भी कहूँगा कि यह भारतीय मुद्दा है कि साहित्य में दलित भूमिका कम रही है, और आवश्यक है। अकादमी तो सरकारी संस्था है, पर छोटे स्तर (ग्राम संस्था) पर रिप्रेंजेंटेशन लिए जा रहे हैं। इसका चश्मदीद मैं हूँ।

पुष्य मित्र

वामदलों का भी यही हिसाब है, एक बार एक सर्वेक्षण आया था जिसमें पता चला कि पोलित ब्यूरों में 87 फीसदी सदस्य अब तक ब्राह्मण ही रहे हैं। यह भारतीय जातिवादी एप्रोच है। यह फार्मूला कहीं भी फिट किया जा सकता है। किसी को भी घेरने के लिए... लेकिन अब जब देश में।

रमण कुमार सिंह

तो क्या रमण कुमार सिंह की तरह अरविंद दास की भी मैथिली मचान पर दाल नहीं गली? मैथिली मचान का स्टॉल मैथिली किताबों की बिक्री को प्रोत्साहित करने के लिए नहीं, दाल गलाने के लिए ही लगाया गया था। क्योंकि मैथिली मचान के आयोजकों के मुताबिक, वे लोग सवाल उठा रहे हैं जिनकी दाल नहीं गली। यानी जो लोग इनके जातिवादी अहंकार और एजेंडे पर चुप हैं, उनकी वहाँ पर दाल गली। अब चुप रहने वाले तय करें कि वे कहाँ खड़े हैं?

लेकिन अरविंद दास तो मैथिली लेखक भी नहीं हैं, बस मिथिला और मैथिली साहित्य से अनुराग रखते है। जिनकी भावना मेरे पोस्ट से आहत हुई थी, उनसे मैं पूछना चाहता हूं पूरी विनम्रता और सम्मान के साथ कि तब क्यों नहीं आपकी भावना आहत हुई जब मैथिली मचान के आयोजकों ने जातिवादी अहंकार से भरी टिप्पणी की, तब क्यों नहीं हुई जब युवा कवि विनीत उत्पल के लिएअपमानजनक टिप्पणी की गई? असलमे हम लोगों ने बेकार ही मैथिली मचान से थोड़ी अपेक्षा पाल ली थी कि यह मैथिली पुस्तकों की बिक्री को बढ़ावा देगा। यह मचान भी मिथिला समाज के अन्य मचानों की तरह ही निकला, जहां अक्सर खेल (ताश- निट्ठलों का खेल जिसमें शारीरिक श्रम की जरूरत नहीं होती) होता है, उठाने-गिराने की राजनीति होती है।

रोशन कुमार मैथिल

दुर्भाग्य है कि अरविन्द दासजी को आलेख लिखने के लिए एक बाभन इतिहास कार पंकज झा का रिफरेंस लेना पड़ा। क्या आज तक किसी डोम चमार इतिहासकार नहीं बन पाए हैं। अरविंद दास ने दलित महादलित साहित्यकारों का नाम क्यों नहीं लिया।

रोशन कुमार मैथिल

इस आलेख में एक जगह लिखा है कि अगर इस कैलेंडर को हरिजन गाथा लिखने वाले नागार्जुन और ब्राह्मणों पर खट्टर ककाक तरंग लिखने वाले हरिमोहन झा देखते तो क्या कहते. ..दासजी को शायद यह मालुम नहीं कि दुर्भाग्य से यह दोनों रचनाकार बाभन थे और हैं...

विमर्श–छठम

विनीत उत्पल

(मैथिलीक एजेंडामें निचला जाइतक कोनो ठाम नहि अछि। ई गप एकटा विमर्श चाहैत अछि। वरिष्ठ पत्रकार अरविन्द दास नीक लिखने अछि) There is no space of backward classes in the agenda of Maithili. This demands a discourse. Good written by senior journalist Arvind Das.

प्रमोद झा

सर के कोटि कोटि नमन। यहि कारण अछि जे मैथिली अखन धरि पिछड़ल अछि।

टिप्पणी

पंकज प्रियांशु

के कहलक जे मैथिली पिछड़ल अछि।

सविता झा खान

(देखल जाए, विमर्श पांचमे हिनक टिप्पणी)

उदय नारायण सिंह

एकटा बड प्रासंगिक आ सामयिक आलेख (An extremely relevant and timely essay)- बड्ड नीक लागल। आबहु क्यो ई बात नही उठाओत त कहिया कहत?

ऋतेश पाठक

लाख टकाक सवाल: के एजेंडा सेट क' रहल अछि? (A million dollar question who is setting the agenda?)

सविता झा खान

(देखल जाए, विमर्श पांचमे हिनक टिप्पणी)

रामबाबू सिंह मधेपुर

कर्ण कायस्थ सभा अहिना भेल जेना ब्राह्मण महासभा जाहिमे केवल ब्राह्मण वर्ग विशेषकें प्रवेश शेषक नॉट प्रवेश... तँ अहिठाम लोकोक्ति कहल जा सकैए " हँसुआ बिआहमे खुरपिक गीत"।।

ब्रजेश मिश्र

(कमजोर लेखक आ ओकर पाठक: जाइत आ जातिवादक समय मे) Poor writers and followers. Still in the age of cast and castism.

ईशनाथ मिश्रा

इतनी संकीर्ण जातीय सोच वाली लेख को इतनी महत्वपूर्ण जगह मिली, सबको धन्यवाद्, मैथिली मचान के बहाने ही सही,लोग मैथिली भाषा के उत्थान के बजाय दलित विमर्श में लग गए हैं, सब की जय हो,

आशीष अनचिन्हार

बधाई अरविंदजी को इस विचारोत्तेजक बहस के लिये। मगर यहाँ पहले ही कह देना चाहता हूँ कि अरविंदजी खुद बड़े जातिवादी हैं। जातिवादी का मतलब ही होता है "उचित को इग्नोर करने वाला"। भाइ अरविंदजी को मैथिली साहित्य में ब्राह्मणवाद तो दिखा मगर 2008 से ले कर अब तक "विदेह" पत्रिका का वह काम नहीं दिखा जिसके तहत मैथिलीमे अब तक 30-40 दलित एवं पिछड़े लेखक आये (साथ ही साथ ब्राह्मण लेखक का एक बड़ा तबका भी आया)। अरविंद जी को सब कुछ दिखा मगर श्रुति प्रकाशन का काम नहीं दिखा जिसने बिना किसी भेदभाव के 20-22 दलित एवं पिछड़े लेखकों की किताब बिना किसी पैसे के प्रकाशित किया जिसकी संख्या लगभग 80-90 है। अरविंदजी ने सही प्रश्न उठाया है मगर ठीक उसी तरह अतिवादी होकर।

फिर भी मैथिली के मुख्यधारा के ब्राह्मणवाद के विरोध में मैथिली के मुख्यधारा का कायस्थवाद आया है जो कि स्वागत योग्य है। मगर साधारण पाठक को पता है कि यह लड़ाई सिर्फ मुख्यधारा के ब्राह्मण ओ कायस्थ के बीच है। समानांतर धारा और दलित लेखक पाठक को इस लड़ाई से क्या मतलब। ब्राह्मणवाद और

कायस्थवाद के संयुक्तरूप अरविंदजी को इस लेख के लिये बधाइ...

शिव नाथ मिश्र

भाषा, संस्कृति और साहित्य से आपका कोई लेना-देना नही है, आपका अजेंडा शुरु से समाज को जाति के नाम पर बांटना रहा है। दलित और पिछड़े को अपने राजनीतिक अजेंडा से बाहर रखिये जो आपलोग पिछले कई सालों से करते आ रहे हैं। उन्हे इस योग्य बनाईये कि वो दो जून की रोटी से ऊपर उठ साहित्य और संस्कृति की बात करें और साहित्यमे अपना योगदान दें सकें। फिर निश्चित ही कैलेंडरमे उनका नाम भी होगा और अकादमी पुरस्कार भी उनको मिलेगा। उन्हे जाति के नाम पर भड़काने की नही उन्हे बनाने की जरुरत है।

रोशन कुमार मैथिल

साहित्यमे खैरात नहीं बंटता है जनाब, मुल्यांकन कलम से होता है ना कि जात से। इतिहास साक्षी है कि समाज ने उन सभी रचनाकारों को उचित स्थान दिया है जिसने उत्कृष्ट रचना की है। हमरा यहां अब भी सलहेश का पूजन होता है। कबीर के दोहे गाए जाते हैं। रहीम के भक्ति काव्य पढ़े जाते हैं। रैदास के भजन गाए जाते हैं। आरक्षण चाहिए तो सरकार पास जाकर भीख मांगना होगा। वैसे भी साहित्य में सभी ब्राह्मण या कर्ण कायस्थ विद्यापति, सुर, तुलसी, वाल्मिकी का स्थान नहीं ले सकते हैं।

रोशन कुमार मैथिल

(देखल जाए, विमर्श पांचमे हिनक टिप्पणी)

रजनीश के. झा

दास जी का एजेंडा दलित पिछड़ा है या कर्ण कायस्थ ये लेखनी की मजबूरी के दर्द से समझा जा सकता है... जातिवाद में आज भी सबसे बड़ा एकजुट समाज कर्ण कायस्थ समाज का ही है, बिखरे और कभी ना एकत्रित होने वाले ब्राहमण पर आरोप निर्धारित किया जा सकता है!!

किशन कारीगर

मिथिला मैथिलीमे आनजाति वर्गमे कतेको लेखक छैथ। मुदा सुनियोजित जातिवादी ज्यूरी सब अनजाति के पुरूस्कार नै दैत छैक आ ने साहित्यक आयोजनमे जगह देल जायत छैक।

सब देखावटी... असलमे सब जातिवादीक सिरोमणी सब अछि।

बापौतीवादमे ओझराऊल अछि मैथिली।

अशोक मेहता

अरविन्द जीक चिंता वाजिब। वस्तुत: मैथिलीमे दलित-पिछड़ा संवर्गक रचनाकारक संख्या अल्प अछि मुदा अत्यल्प नहि। अन्वेषणक आवश्यकता। एखन किछु नाम ध्यान पर अबैए-सुभाष चन्द्र यादव, तारानंद वियोगी, बुचरू पासवान, महेन्द्र नारायण राम (सा.अ.पुरस्कृत), राम ना. सिंह (सा.अ.पुरस)।

हीरेन्द्र कुमार झा

ई सब सोच हीन मानसिकताक द्योतक छी। वास्तविकता ई छै जे बहुतो पिछडा आ दलित के मैथिली साहित्यमे हुनक योगदानसँ बहुत बेशी महत्व व प्रोत्साहन देल गेल छनि आ देल जा रहल छैन। रचना करसँ क्यो रोकलकनि अछि कहियो। संगहि रचनाकारेटामे अहगर समावेश चाही पाठक वर्ग के प्रति ओ लोकनि की कै रहल छथि। जँ पाठक वर्गसँ सहयोग आ माँग बढ़तनि त स्वत: रचनाकार के मान बढतनि।

प्रवीण नारायण चौधरी

मैथिलीक हितैषी ओ एकदम नहि थिक जे एखन मैथिली मचानक सार्थक उपलब्धि पर चर्चा केँ रोकबाक कुत्सित कार्य कय रहल अछि।

विजय देव झा

अंतमे अरविंद दास आपने मैथिली में कितनी पंक्ति लिखी है जिससे हम लोग आपको महान की श्रेणी में शामिल करें। और अगर आप हिंदी की पादुका ढोते हैं तो ये ज्ञान उधर दीजिये। जरा हिंदी वालों से पूछिये की बिहार से कितने हिंदी भाषी साहित्यकारों को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

रवीन्द्र दास

हम त' साहित्यकार नहीं छी मुदा पाठकक दृष्टिसँ देखैत छी त' सांचे पिछड़ी या दलित जाति आ स्त्रीगण केँ मोजर नहि भेटलनि मैथिलि साहित्य में ओकर कारण चाहे जे होय...

तरुण कुमार प्रभात

इसमें आरक्षण नहीं कर्मफल सिद्धान्त लागू है। आज तक कोई दूसरा विहंगम राजेंदर बनने का प्रयास ही नहीं किया। जो चन्द कलम सेवी साहित्यानुरागी हैं उन्हें किसी बैशाखी की आवश्यकता नहीं होती। वे सर्वत्र सम्मानित हैं। ऐसा प्रश्न, कलम के बिक्रेता, जाति के दलाल ही करते। कोई कर्मयोगी नहीं। कर्मयोगी का काम बोलता है जुबान नहीं। फेसबुक पर अपनी कलम मजबूती से डाल, अपनी भावनायें समझ को साहित्यिकी रस में डुबाओ। कविता के चन्द शब्दों का निर्माण करो। या नहीं तो समाज में वैसे गुणीयों की ही सूची तैयार कर जन मानस के सामने लाओ जो साधन समय की अनुपलब्धता के कारण गुमनामी के अंधेरोमे फंसे हैं। याद रखो। शिक्षा अध्ययन अध्यापन सृजन संम्पेशन विवेचन विश्लेषण जैसे कार्यो में आरक्षण का कोई विधान या स्थान न है न होगा। यहां मात्र शिक्षा और सरस्वती की साधना, जो सबों के निज कर्म पर निर्भर है, करता है। उसे ही यहां स्थान प्राप्त होता है। पटना में एक रघुवीर मोची हैं। वे चेतना समिति, अरिपन, भंगिमा तीनों ही मिथिला मैथिली साहित्य संस्कृति की अग्रणी संस्थाओं में रघुवीर या मोची नहीं गांधी जी के नाम से जाने जाते हैं। यह सम्मान उन्होंने अपने व्यवहार कुशलता से उन्हीं कथित मैथिल अर्थात् ब्राह्मण लालाओं के बीच पाई है। बिना किसी आरक्षण या पैरवी के। यार कुछ कर फिर देख। तुम्हें भी वह सब मिलेगा जो तू चाहते पर इसे पाने के लिए पढना लिखना खेलना खेलाना वो सब का होगा जो आवश्यक है। और जो सभी करते हैं। ■

अखिल भारतीय मिथिला संघक स्वर्ण जयंती समारोहक चित्रमय झलक

स्वर्णजयंती कार्यक्रमक विधिवत शुभारम्भ करैत
गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह

लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन कें मिथिला पेंटिंग भेंट करैत डॉ. ममता ठाकुर, संग मे ठाढ़ छथिन श्री राजनाथ सिंह आ राज्यसभा सांसद आ 'तीरभुक्ति' पत्रिकाक संरक्षक श्री प्रभात झा

कार्यक्रमक काल पुरी पीठक शंकराचार्य श्री निश्चलानंद सरस्वती जीक सं आशीर्वाद लैत भारतक गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह

मिथिला कला प्रदर्शनीक गैलरीक उद्घाटन करैत
बिहारक मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार

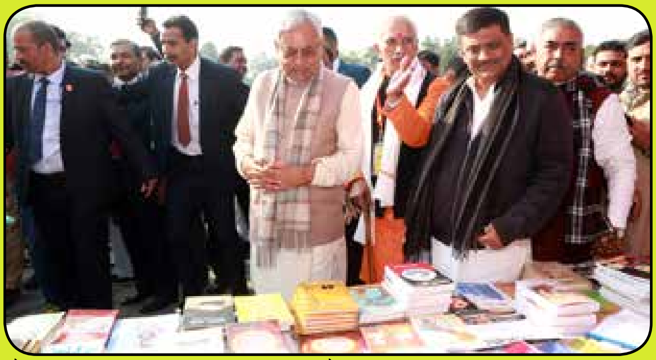

मैथिली पोथी स्टालक अवलोकन करैत श्री नीतीश कुमार, संग में छथिन विधायक श्री संजय झा आ बिहारक कैबिनेट मंत्री श्री विनोद कुमार झा

लोकसभा सांसद श्री हुकुमदेव नारायण यादव कें शाल ओढ़ाके सम्मानित करैत अखिल भारतीय मिथिला संघ के अध्यक्ष आ 'तीरभुक्ति' पत्रिका के संस्थापक श्री विजयचन्द्र झा

रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करैत मिथिलाक कलाकार

दरभंगा में प्रख्यात वैज्ञानिक पद्मश्री मानस बिहारी वर्मा कैं सर गंगानाथ झा सम्मान-2017 सँ सम्मानित करैत अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष श्री विजयचन्द्र झा आ सदस्यगण

Teerbhukti - The Journal of Akhil Bhartiya Mithila Sangh
RNI Reference NoA : 1322786, Title Code : DELMAI00042

29 मार्च 2018 केँ प्रकाशित

तीरभुक्तिक लोकार्पण करैत श्रीमती सुमित्रा महाजन (माननीया अध्यक्ष लोकसभा), श्री राजनाथ सिंह (माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार), श्री प्रभात झा (माननीय सांसद, राज्यसभा), श्री हुकुमदेव नारायण यादव (माननीय सांसद, लोकसभा), श्री देवेश चन्द्र ठाकुर (माननीय सदस्य, बिहार विधान परिषद्), श्री विजयचन्द्र झा (माननीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय मिथिला संघ)

नयी दिल्लीमे आयोजित विश्व पुस्तक मेलाक मध्य तीरभुक्तिक आयोजन *भारतीय भाषामे शोध विषयक विमर्शमे* उपस्थित भारतीय जनसंचार संस्थानक महानिदेशक श्री के.जी. सुरेश, लोक संस्कृति विशेषज्ञ श्री राजीव रंजन प्रसाद, वरिष्ठ पत्रकार श्री सुदीप ठाकुर आ तीरभुक्ति परिवारक सदस्यगण

प्रकाशक आ मुद्रक विजयचंद्र झा द्वारा अखिल भारतीय मिथिला संघक दिशसँ मकान नंबर एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062 सँ प्रकाशित आ जे.के. ऑफसेट, बी-278, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्लीसँ मुद्रित।
संपादक : विनीत कुमार झा 'उत्पल'